अध्याय–1

# प्राथमिक पशु चिकित्सा

## प्राथमिक पशु चिकित्सा की परिभाषा

गॉव में पशु के बीमार होने पर, बीमारी को अधिक बढ़ने से रोकने के लिए, उपलब्ध संसाधनों द्वारा, पशु के लक्षणों के अनुसार, डाक्टर के आने तक, जो उपाय व चिकित्सा की जाती है, वह प्राथमिक पशु चिकित्सा कहलाती है।

## प्राथमिक पशु चिकित्सा का महत्व

पशुओं के बीमार होने पर पशु चिकित्सा के अभाव में पशुओं की बीमारी की अवस्था बिगड़ती है जिससे पशुओं की मृत्यु होने से काफी धन की हानि होती है अथवा दुग्ध उत्पादन में काफी कमी हो जाती है। यदि पशु का समय से प्राथमिक चिकित्सा मिल जाय तो इस हानि से बचा जा सकता है। पशु चिकित्सक गॉव से बहुत दूर शहरों में रहते हैं। यदि पशु की बीमारी रात के समय में बढ़ जाती है तो ग्राम स्तर पर चिकित्सा उपलब्ध न होने के कारण पशु की मृत्यु भी हो सकती है। इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक पशु चिकित्सा का ज्ञान होना अनिवार्य हो जाता हे। यदि किसी गॉव में प्राथमिक पशु चिकित्साकर्ता प्रशिक्षित हो, तो पशु चिकित्सक के आने तक गम्भीर रूप से बीमार पशु की प्राथमिक चिकित्सा भी सम्भव हो सकती है तथा पशु को मरने से बचाया जा सकता है या बीमारी को और अधिक बढ़ने से रोका जा सकता है तथा घातक बीमारियों के टीके पूर्व में ही लगवाये जा सकते हैं। ग्राम–वासियों को समय–समय पर टीके लगवाने हेतु प्रेरित किया जा सकता है अर्थात समस्त बीमारियों की रोकथाम प्राथमिक पशु चिकित्साकर्ता द्वारा गॉव स्तर पर ही की जा सकती है क्योंकि रोकथाम उपचार से बढ़कर होती है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

# अध्याय–2

## स्वस्थ पशु के लक्षण

कुछ अनुभव के बाद, स्वस्थ पशु की पहचान करना आसान है। स्वस्थ पशु को खड़े होने तथा चलने–फिरने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। उसका सर सीधा रहना चाहिए, एक तरफ लुढ़का हुआ नहीं। उसका थूथन ठण्डा और नम तथा तथा मुँह का अन्दरूनी हिस्सा गुलाबी होना चाहिए। समय–समय पर डकार लेना पशु के अच्छे स्वास्थ्य का प्रतीक है। पशु को आहार लेना चाहिए तथा आराम करते समय जुगाली करनी चाहिए। जब पशु बैठते हैं, तब वे सबसे पहले घुटने मोड़ते हैं, जबकि खड़े होते समय वे अपनी पीछे की टॉग उठाते हैं। उठने के बाद, स्वस्थ पशु अपने शरीर को खींचता तथा झुकाता है। पशु अपने तथा दूसरे जानवरों के शरीर को बार–बार चाटते हैं। गाय के दूध देने में एकरूपता रहनी चाहिए।

## सॉस क्रिया

सॉस क्रिया में पशु ताजा हवा अन्दर करता है और कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसें बाहर करता है। बाहर निकली हुई हवा शरीर के लिए हानिकारक होती है। सॉस क्रिया की गति गिनने के लिए जानवर के नाक के सामने हाथ रखना चाहिए अथवा पेट का फैलना और सिकुड़ना देखना चाहिए।

पशु की सॉसों को गिनने का एक सरल उपाय है– उसके नथुनों के पास हथेली रखकर उसकी सॉसों को गिनना। एक मिनट में वह कितनी बार सॉस लेता है, इसे सरलतापूर्वक इस उपाय से जाना जा सकता है।

## नाड़ी क्रिया

नाड़ी क्रिया की गति हृदय की कार्यक्षमता की द्योतक है। गाय–भैंस में नाड़ी क्रिया की गति पूँछ की जड़ के नीचे के मध्य भाग पर अंगुली रखने से जानी जा सकती है।

नीचे के जबड़े के मध्य तृतीय भाग पर भी अंगुली रखने से भी नाड़ी क्रिया की गति मालूम की जा सकती है। भेड़, बकरी, कुत्ता और बिल्ली में नीचे का जबड़ा या पिछले पैर के अन्दर के भाग पर अंगुली रखकर नाड़ी की गति मालूम की जा सकती है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

## शरीर का तापमान

प्रत्येक जानवर के शरीर का तापमान सामान्य अवस्था में करीब–करीब एक जैसा होता है। बीमारी की अवस्था में सामान्य तापमान ज्यादा या कम हो जाता है। तापमान मापक के पारे का स्तर मापक को झटका देकर नीचे कर दिया जाता है। तापमान मापक की घुंडी के ऊपर वैसलीन या साबुन लगाकर जानवर की गुदा में डाला जाता है। तापमान मापक की घुंडी गुदा की दीवार से 1–2 मिनट के लिए सटाकर रखनी चाहिए। तापमान मापक को पढ़ने से पहले रूई से साफ कर लेना चाहिए।

तापमान, नाड़ी क्रिया और सॉस क्रिया की गति निम्नलिखित क्रम से लेना चाहिए–

1. सॉस क्रिया
2. नाड़ी क्रिया
3. तापमान

## विभिन्न जातियों का श्वसन, नाड़ी गति एवं तापमान

| क्रम सं0 | पशु | श्वसन प्रति मिनट | नाड़ी प्रति मिनट | तापमान डिग्री फॉरेनहाइट |
|---|---|---|---|---|
| 1. | गाय | 12–20 | 50–70 | 101–101.5 |
| 2. | भैंस | 16–20 | 40–50 | 102–102.5 |
| 3. | बकरी | 12–22 | 70–80 | 103.0 |
| 4. | भेड़ | 14–22 | 7080 | 103.0 |
| 5. | सूकर | 8–18 | 60–80 | 102.5 |
| 6. | घोड़ा | 8–16 | 30–60 | 100.0 |
| 7. | ऊँट | 8–12 | 32–50 | 99.5 |
| 8. | मुर्गी | 13–38 | 120–160 | 106–107 |
| 9. | मनुष्य | 15–25 | 70–72 | 98.4 |
| 10. | कुत्ता | 20–25 | 90–130 | 101.5 |

NOT FOR COMMERCIAL USE

## पशु की प्राथमिक जाँच

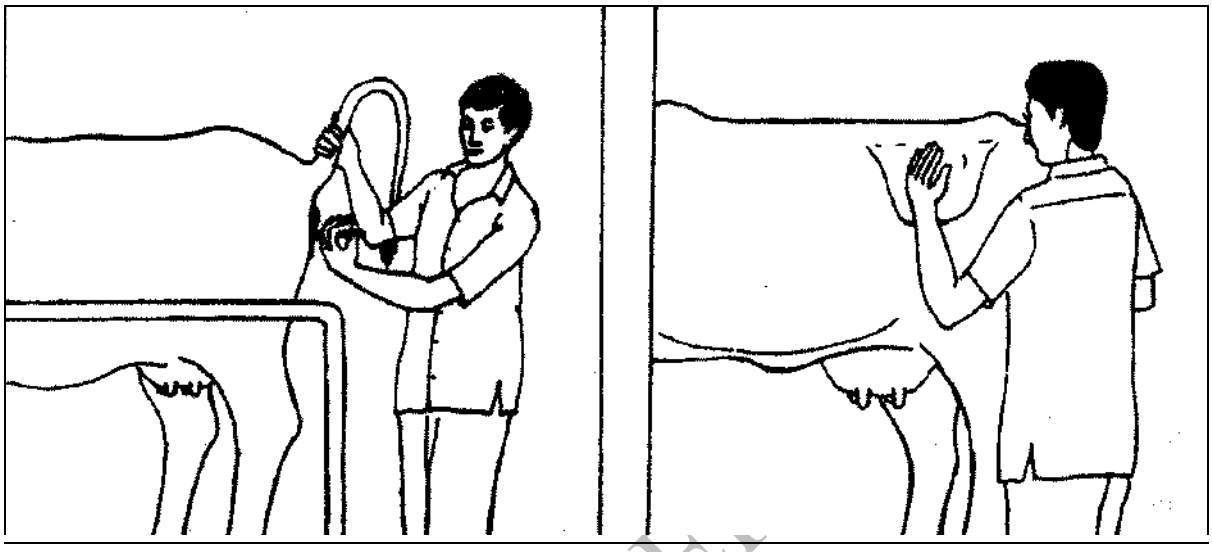

1. तापक्रम की जाँच

2. पेट की जाँच

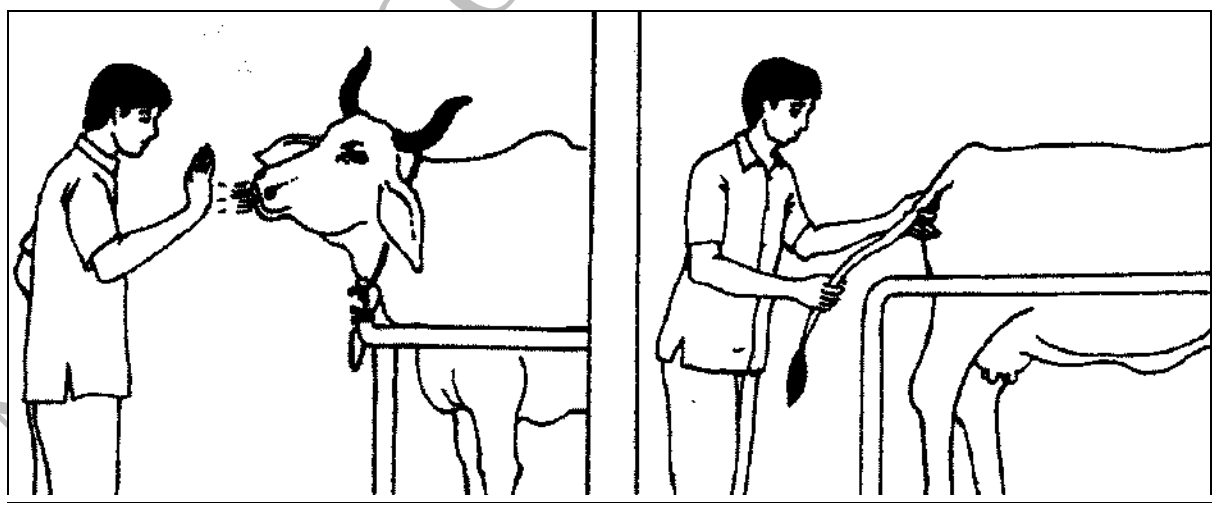

3. श्वासोच्छवास गिनना

4. नाड़ी द्वारा जाँच

## बीमार पशु के लक्षण

बीमार पशु के निम्नलिखित लक्षण होते हैं–

1. बीमार पशु चारा–पानी अनियमित रूप से खाते–पीते हैं या खाना–पीना छोड़ देते हैं या कम कर देते हैं।
2. बीमार पशु सुस्त एवं उदास दिखाई देते हैं।
3. बीमार पशु के कान लटक जाते हैं।
4. नाक का ऊपरी भाग खुश्क हो जाता है।
5. पशु इधर–उधर हिलना–डुलना बन्द कर देते हैं।
6. उनकी पलक आधी खुली रहती है तथा उनसे पानी बहता रहता है।
7. खाल कड़ी हो जाती है तथा बाल खुश्क और खड़े होते हैं।
8. गेबर कभी सख्त और कभी पतला आता है।
9. शरीर का तापमान, नाड़ी और सॉस क्रिया सामान्य से बढ़ या घट जाती है।
10. मुँह और नाक से लार टपकती है।
11. सॉस से बदबू आती है।
12. सॉस लेने में कठिनाई होती है।
13. बीमार पशु अपने बच्चे या मालिक की तरफ से ध्यान हटा लेते हैं।
14. दूध देने वाले पशु दूध समय पर नहीं देते और दूध की मात्रा भी कम हो जाती है।
15. वे दूध भी ठीक तरह से दुहने नहीं देते, लात मारते हैं या उछल जाते हैं।
16. चलते समय ऐसे पशु दूसरे पशुओं से पीछे रहते हैं।
17. पेशाब अधिक और बदरंग हो जाता है।

स्वस्थ पशु में बीमार होने के कई कारण हो सकते हैं। कभी–कभी बीमार पशु द्वारा स्वस्थ पशु को भी बीमारी लग जाती है, ऐसी बीमारी छूत की बीमारी कही जाती है। कई बार पशु को बीमारी लगने के बावजूद, पशु की रोग–प्रतिकार शक्ति के कारण रोग के लक्षण दिखाई देते नहीं है या तो थोड़ी सी बीमारी के बाद वे ठीक हो जाते हैं। गोबर, पेशाब, लार या उच्छ्वास द्वारा बीमारी फैलती है। ऐसे पशु जो कि स्वस्थ नजर आते हैं, परन्तु अन्दर से रोगग्रस्त होते हैं, बीमारी के वाहक होते हैं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय–3

# मेटीरिया मेडिका एण्ड टोक्सिकोलॉज़ी

# (MATERIA MEDICA AND TOXICOLOGY)

पशु चिकित्सा भैषजिकी में प्रयोग होने वाले कुछ शब्द तथा उनका विवरण निम्नवत् है–

1. पीड़ाहारी **(Analgesics or Anodynes)**

ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से स्नायु की उद्दीप्तता (Irritability) कम या समाप्त हो जाती है। जैसे– अमोनिया, कपूर, बेलाडोना, एकोनाइट आदि के लिनीमेंट, एस्पिरीन, एनालजीन, न्यूरोवियन, पैरासीटामोल, डिक्लोफेन, मैलोक्सीकैम, कीटोप्रोफेन, आइबूप्रोफेन, निमोस्लाइड आदि।

2. पोषण सुधारक **(Alteratives)**

ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से तन्तुओं में ऐसे परिवर्तन होते हैं, जिनसे शरीर के अंगों के पोषण में सुधार होता है। इनका प्रयोग रूग्णावस्था या अधिक दुर्बलता की स्थिति में किया जाता है। जैसे– आयोडीन, आर्सेनिक, सल्फर, फास्फोरस, कार्ड या शार्क लीवर ऑयल, वेलामाइल, लिवोजन, एन–लिव (इंजेक्शन), एसीटालार्सन, कैटासोल, कोबाफौस, टोनोफास्फेन आदि।

3. निश्चेतक या संवेदनाहारी (**Anaesthetics**)

ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से पशु अचेतन अवस्था में आ जाता है। जैसे– क्लोरोफॉर्म, ईथर, नाइट्रस ऑक्साइड, नोवोकेन, सिक्विल,ज़ाइलोकेन, थायोपैन्टोन सोडियम, ज़ाइलेज़िन, कैटामिन आदि।

4. प्रति जैविकी (**Antibiotics**)

इनकी उत्पत्ति जीवाणु अथवा फफूंद (Mould) से होती है तथा यह जीवाणु नाशक अथवा जीवाणु रोधी होते हैं। इन्हें फोड़ा, जख्म, दस्त, सर्दी, खॉसी, न्यूमोनिया, ज्वर, मेस्टाइटिस, टोंसिलाइटिस, गलाघोंटू , ब्लैक क्वाटर, एन्थ्रैक्स, एफ एम डी, रिन्डरपेस्ट आदि रोगों के लिए पशुओं को दिया जाता है। ये निम्न प्रकार की होती हैं–

NOT FOR COMMERCIAL USE

अ– कम दायरे वाली (**Narrow Spectrum**)

1. पेनिसिलिन ग्रुप– (Against Gram Positive Bacteria) जैसे– प्रोनापेंन, ओम्नासिलिन, टेरामाइसिन, सेक्लोपेन आदि।
2. अधिक समय तक अर्थात् 3–4 दिनों तक प्रभावशाली पेनिसिलिन जैसे– प्रोकेन पेनिसिलिन–जी–ऑयली (पाम), पेनिडियोर, लोंगासिन आदि।
3. स्ट्रेप्टो पेनिसिलिन ग्रुप– (Streptopenecillin) Against Gram Positive and Gram Negative Bacteria) जैसे– विस्ट्रीपेन, कम्बायोटिक, डाइक्रिस्टीसीन, आमनामाइसीन, बेटीपेन आदि।

ब– अधिक दायरे वाली (**Broad Spectrum**) **Against Gram Positive and Gram Negative Bacteria**)

1. एम्पीसिलीन, वासीपेन, कैम्पीसीलीन, स्काईसिलन–वेट, रोसीलीन आदि।
2. जेन्टामाइसिन(Gentamycin)– जेन्टावेट, जेन्टासीन, प्रीमीसीनवेट, जैन्टीम आदि।
3. ऑक्सीटेट्रासाइक्लीन(Oxytetracycline)–Terramycin,ऑक्सीस्टेक्लीन, टेलान–एल–ए, ऑक्सी वेट एल ए, औक्सवेट आदि।
4. टेट्रासाइक्लीन– एक्रेमाइसिन, स्टेक्लिन, स्टैकलीन वोलस, होस्टासाइक्लीन पाउडर आदि।
5. डौक्सीसाइक्लीन (Doxycycline)– बीडाक्स, लेन्टेक्लीन आदि।
6. इरीथ्रोमाइसीन (Erythromycin)– एथ्रोसीन, इ–माइसीन, एल्ट्रोसीन आदि।
7. एमोक्सीलीन (Amoxycillin)– सिनामौक्स, डेलामान आदि।
8. एनरोफ्लोक्सिन–एनरोसिन।
9. केनेमाइसिन–केन्सिन।
10. क्लोरोम फेनीकॉल (Chloramphenicol)– क्लोरोमाइसीन, फेनावेट, रेनफेनीकाल, बेटनीकाल आदि।

NOT FOR COMMERCIAL USE

5 सल्फा ड्रग्स ( **Sulpha Drugs**) ( सल्फोनामाइड्स)– यह दवाएं जीवाणुरोधी हैं। इन्हें प्रयोगशाला में संश्लेषण द्वारा बनाया जाता है। यह पैरा ऐमीनोबेन्जेन–सल्फोनामाइड नामक तत्व से बनाये जाते हैं, जिसे अलग–अलग प्रकार से संश्लेषित कर विभिन्न औषधियॉ बनायी जाती हैं। जैसे– सल्मेट, वेक्ट्रीम, डायडीन, सल्फामेजाथीन, सल्फा बोलस, सेप्ट्रान, ट्रीनामाइड, आदि गोली।

6. ऐनालेप्टिक्स (**Analeptic**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से हृदय तथा फेंफड़ों को बल एवम् उत्तेजना प्राप्त होती है। जैसे– डिजिटेलिन, निकेथामाइड, लेप्टाजोल आदि।
7. कृमिहर (**Anthelmentic**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से अन्तः परजीवी या तो मर जाते हैं या जीवित अवस्था में ही शरीर से बाहर आ जाते हैं। जैसे– कॉपर सल्फेट, हैक्जाक्लोरोईथेन, कार्बन टेट्राक्लोराइड, पिपराजीन,मीबैन्डाजोल, एलबैन्डाजोल, रिफॉक्सीनाइड, फैनबैन्डाजोल, ऑक्सीक्लोजेनाइड, ऑल आउट बोलस आदि।
8. जीवाणुरोधी (**Antiseptic**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से जीवाणु की वृद्धि रूकती है तथा वातावरण, यन्त्र एवम् उपकरण शुद्ध किये जाते हैं। यह जीवाणुओं को नष्ट नहीं करती है। जैसे– एक्रीफ्लेविन, पोटेशियम पर मेग्नेट, मरक्यूरोकोम, सेवलॉन आदि।
9. सूजन या शोधहारी (**Anti-Inflammatory**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से सूजन या शोध कम हो जाता है जैसे– फिलाइन ब्यूटाज़ोन, प्रैडनिसालोन, डेक्सामिथाज़ोन, बेटामिथाज़ोन, एन्थीसान, फेनार्गन, वेटालॉग, डकाड्रान, फेनाविल, फुराडेक्स, कुराल, काडिस्टीन, ट्राइएमसीनोलॉन आदि।
10. ज्वरहारी (**Antipyetics**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से ज्वर कम या नष्ट हो जाता है। जैसे– क्वीनीन, सोड़ासैलीसिलास, एस्प्रीन, पैरासीटामोल, निमोस्लाइड आदि।
11. उद्दीपनहारी (**Antipuritics**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से उद्दीपन (Irritation) कम हो जाता है जैसे– गार्डीनल, कोकेन, कार्बोलिक एसिड, सिक्विल, मेक्सेरोना, एस्काजीन, लाजेक्टिल आदि।
12. विषध्न (**Anti-dotes**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से शरीर में उपस्थित या प्रविष्ट विषों को निष्क्रिय कर दिया जाता है जैसे– अम्ल विष को क्षारीय औषधियों तथा क्षार विष को अम्लीय औषधियों

NOT FOR COMMERCIAL USE

से निष्क्रिय किया जाता है। विस्तृत विवरण पुस्तक के अन्त में देखें।

13. कफरोधी (**Anti-expectorants**) – ऐसी औषधियॉ जो फुफ्फुस नाल तथा उपनालों से स्त्रावों को कम करके खॉसी से रक्षा करती हैं जैसे– बेलाडोना, अफीम आदि से बनी औषधियॉ, वेनाड्रिल, ग्लाइकोडीन, फेन्सीडिल, कैटकफ, कैफलॉन, कोरैक्स, कोफैक्स आदि।
14. एन्टीजाइमोटिक्स (**Anti-zymotics**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से उदर तथा अन्तड़ियों में अनावश्यक फरमेन्टेशन से गैस के बनने में अवरोध उत्पन्न होता है। इनका प्रयोग अफारा, उदरशूल आदि में किया जाता है जैसे– तारपीन के तेल, फार्मेलीन, एनोरेक्सान, नोवल्जीन इंजेक्शन, वेलामाइन इंजेक्शन, ब्लोटोसील, टिम्पेक्स, टिम्पोल चूर्ण, रूमेंटान गोली, पूर्ति बोलस आदि।
15. तिक्त पदार्थ (**Bitters**) – ऐसी औषधियॉ जो रासायनिक रचना में एक दूसरे से भिन्न होती हैं तथा कडुई होती हैं और उदर तथा ऑतों के सैक्रीसन( उदासर्जनों) में वृद्धि करती हैं जैसे– चिरायता, नक्सवोमिका आदि।
16. कषाय (**Astringents**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से म्यूकस मेम्ब्रेन, रक्त वाहनियॉ तथा ऊतकों में संकुचन पैदा होता है तथा सेक्रीशन बन्द हो जाते हैं। ऑतों में प्रयोग होने वाली औषधियों को इन्टेस्टाइनल एस्ट्रीनजेन्टस (Intestinal Astringents) कहते है। जैसे– कत्था, बेलाडोना, चौक बेलगिरि, क्लोरोडीन, नैबलॉन पाउडर, डायरॉक पाउडर आदि।
17. वायुहारी (**Carminatives**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से उदर तथा ऑतों की अनावश्यक वायु बाहर निकल जाती है जैसे– एल्कोहल, सौफ, हींग, काला नमक, जीरा, अदरक, मेथी, तारपीन का तेल आदि।
18. दाहक (**Caustics**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से ऊतक नष्ट हो जाते हैं जैसे– सिल्वर नाइट्रेट, कॉपर सल्फेट, मरक्यूरिक क्लोराइड आदि।
19. जीवाणुनाशी या रोगाणुनाशी (**Disinfectants**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से जीवाणु तथा विषाणु नष्ट हो जाते हैं। जैसे– फिनोल, क्लोरीन लाइजोल आदि।
20. शोष (**Desicants**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से घाव तथा छाजन शीघ्रता से नष्ट हो जाते हैं। जैसे– बोरिक एसिड, जिंक् ऑक्साइड आदि।

NOT FOR COMMERCIAL USE

21. अपमार्जक (**Detergent**) – ऐसी औषधियॉ या पदार्थ जिनके प्रयोग से यन्त्र एवम् उपकरण साफ हो जाते हैं तथा उनकी चिकनाहट समाप्त हो जाती है। जैसे– साबुन का पानी, सोडियम तथा पोटेशियम हाइड्राक्साइड तथा कार्बोनेट्स आदि।
22. गन्धहारक (**Deodorants**) – ऐसे पदार्थ जो अरूचिकर गन्ध को ढ़क देते हैं जैसे– चारकोल, ब्लीचिंग पाउडर, सरसों का तेल, पोटेशियम परमेग्नेट आदि।
23. मूत्रल (**Diuretics**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से मूत्र का बनना तथा निकलना बढ़ जाता है। जैसे– कैलोमल, पोटेशियम नाइट्रेट, मेगसल्फ, स्टेनिल पाउडर, एल्कासोल द्रव, जाइलोरिक टेबलेट, साइट्रोलिक्विड (द्रव), सिस्टोन पाउडर या गोली, लैसिक्स, रैडिमा आदि।
24. बमनकारी (**Emetics**) – ऐसी औषधियॉ जिनके सेवन से बमन हो जाता है। जैसे– सरसों, कॉपर –सल्फेट, ज़िंक सल्फेट तथा नमक आदि।
25. दुग्ध प्रस्रावी (**Galactogogues**) – ऐसी औषधियॉ या पदार्थ जिनके प्रयोग से दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है जैसे– थाइरोक्सीन, मिनरल पाउडर, फर्टीमिक्स पाउडर, एनमिन फोर्ट पाउडर, लेप्टाडेन गोली, लेक्टोन चूर्ण, दुग्ध दान गोली आदि।
26. रक्तरोधक (**Haemostatic**) – ऐसी औषधियॉ या पदार्थ जिनके प्रयोग से रक्त का बहना रूक जाता है जैसे– फिटकरी, टिंचर बेंजोइन, टिंचर फेरीपरक्लोर, बर्फ, कडिस्पार, इन्जे0 क्रोम, सिग्मा क्रोम, रेवीसी, स्टैप्टोक्रोम आदि।
27. निद्राकरी (**Hypnotics**) – ऐसी औषधियॉ जिनके खाने से निंद्रा आ जाती है जैसे– ब्रोमाइड्स, क्लोरलहाइड्रेट्स तथा सीक्वल आदि।
28. उत्तेजक (**Irritants**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से शरीर का भाग उद्दीप्त (Stimulates) तथा अभिज्वलित (Inflame) हो जाता है जैसे– कन्थराइडिन तथा रेड आयोडाइड ऑफ मरकरी मलहम आदि।
29. सम्वेदन मन्दक (**Narcotics**) – ऐसी औषधियॉ जिनके खिलाने से गहरी नींद आ जाती है तथा रक्त संवहन एवम् श्वॉस क्रिया मन्द हो जाती है। जैसे– क्लोरोफॉर्म, ईथर, भंग तथा क्लोरलहाइड्रेटस, मेन्डेक्स, एलप्रैक्स आदि।

NOT FOR COMMERCIAL USE

30. परजीवीनाशक (**Paraciticides**) – ऐसी औषधियॉ जिनके प्रयोग से शरीर के वाह्य भागों में परजीवी नष्ट हो जाते हैं जैसे– गेमेक्सीन, डी0डी0टी0, बेंजाइल बेंजोएट, पेस्टोबेन द्रव, टेटमासोल साबुन, व्यूटाक्स लोशन, मेडिकर घोल, टिककिल, मेलाथियान स्प्रे, साइपर मैथ्रीन, डेल्टा मैथ्रीन, मोनोसल्फीराम, आइवरमैक्टिन आदि।
31. रेचक (**Purgative**) – ऐसी औषधियॉ जिन्हें खिलाने से दस्त आने लगते हैं जैसे– लिक्युड पैराफीन, शीरा, अलसी का तेल, मेग्नीशियम सल्फेट, सोड़ियम क्लोराइड, कैस्टर ऑयल आदि।
32. पोषक (**Nutrients**) – ऐसी औषधियॉ तथा पदार्थ जिनके प्रयोग से ऊतकों तथा अंगों को पोषण प्राप्त होता है जैसे– मिनरल पाउडर, बिटामिन बी–कॉम्पलैक्स, शार्क लीवर ऑयल, एनमिन फोर्ट चूर्ण, फर्टीमिक्स चूर्ण, गैलाग चूर्ण, आदि।
33. परिरक्षक (**Preservatives**) – ऐसी औषधियॉ जिनको मिला देने से दूसरी औषधियॉ, घोल तथा पदार्थ पर्याप्त समय तक संरक्षित रखे जा सकते है। जैसे– कार्बोलिक एसिड, एल्कोहल, फॉर्मलीन, सोडियम बैन्जोएट आदि।
34. प्रशीतक (**Refrigerant**) – जिनके प्रयोग से शरीर के भाग को ठंडक अथवा आराम का अनुभव होता है जैसे– पिपरमिंट, व्हाइट लोशन, बर्फ आदि।
35. वल्स (**Tonics**) – ऐसी औषधियॉ जिनसे शरीर को धीरे–धीरे शक्ति प्राप्त होती है तथा दुर्बलता मिटा देती है जैसे– टोनोफॉस्फेन, कोबाफॉस, यूरिमिन, एसिटालॉर्सन, कैटासॉल, विटामिन्स (विशेषकर विटामिन बी काम्पलैक्स) मिनरल्स आदि।
36. उद्दीपक (**Stimulants**) – ऐसी औषधियॉ जो शरीर के अंगों को शीघ्रता से शक्ति प्रदान करते हैं तथा इनका प्रभाव भी शीघ्रता से समाप्त हो जाता है। जैसे– कोरामीन, डिजिटेलीन, एमफेटामाइन एवं कार्टीजोन्स (डेक्सोना, वेटलॉग), ऐड्रेनलीन आदि।
37. जीवाणुरोधी मलहम (**Antiseptic Ointments**) – ऐसी औषधियॉ जो फोड़ा फुंसी, घाव, जख्म आदि त्वचा रोगों में गुणकारी है जैसे– टैरामाइसीन, सोफ्रामाइसीन, फुरासीन, हिमेक्स, लौरेक्सान, बेटाडीन, 5% नियोस्प्रीन आदि।

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय– 4

# रोगों का वर्गीकरण

# (**Classification of Diseases**)

चिकित्सा हेतु पशुओं के रोगों को साधारणतः छः भागों में बॉटा जा सकता है–

1. बाहरी आघात और लधु शल्य चिकित्सा वाले रोग (External Injuries and Minor Surgical Diseases)
2. असंक्रामक या सामान्य रोग (Non Infectious Diseases)
3. संक्रामक या छूतवाले (संसर्गी) रोग (Infectious or Contagious Diseases)
4. परजीवी रोग (Parasitic Diseases)
5. त्वचा रोग (Skin Diseases)
6. विष वाले रोग (Poisioning Diseases)

1– बाहरी आघात और लघु शल्य चिकित्सा वाले रोग

(**Diseases of external Injuries and Minor Surgery**)

पशुओं को साधारणतः बाहरी आघात वाले रोग हुआ करते हैं जिनमें लघु शल्य चिकित्सा की सहायता लेनी पड़ सकती है जैसे–

(क) त्वचा आघात रोग (**Diseases of Skin Injuries**)

(i) कट–फट जाना और घाव या जख्म (Cuts, Abrasions and Wonds)

(ii) फोड़ा–फुन्सी (Absceses or Boils)

(iii) खून बहना (Bleeding or Haemorrhage)

(iv) जलना (Burns)

(v) गर्दन या कन्धे का घाव (Yoke Gall)

(vi) थन का घाव (Wounds of Mammary Glands)

NOT FOR COMMERCIAL USE

(ख) पैर अंगों पर आघात ( **Injuries on Limbs**)

(i) पॉव का घाव ( Wonds of Hoofs)

(ii) चोट–मोच (Bruies or Sprains)

(iii) जोड़ों का खिसकना (Dislocation of Joints)

(iv) अगले पैर से लंगडाना या पक्षाघात (Lameness and Paralysis of Fore limbs)

(v) हड्डी का टूटना (Fracture)

(vi) सींग का आघात (Injuries on Horns), सींग टूटना (Broken Horn)

(ग) ऑखों के रोग ( **Diseases of Eyes**)

(i) ऑखों का घाव ( Wounds of Eyes)

(ii) ऑखों से पानी आना ( Wounds of Epiphoria)

(iii) ऑखों की लाली (Conjenctivitis)

(iv) ऑखों की सफेदी या ऑखों का माडा (Opacity of Eyes)

(घ) कान के रोग ( **Diseases of Ears**)

(i) कान का शोध ( Otitis)

(ii) कान का बहना ( Otorrhoea)

(छ) नाक की चोट ( **Injuries on Nose**)

नाक से खून बहना (Bleeding from Nose or Epistaxis)

2– असंक्रमक रोग (**Non-Infectious Diseases**)

ऐसे रोग जो छूत या संसर्ग से न फैले और संक्रमक न हों। इन्हैं सामान्य रोग भी कहते हैं। जैसे–

(क) पाचनतन्त्र के रोग (**Diseases of Digestive System**) इनमें होने वाले मुख्य रोग निम्न हैं–

(i) मुख के रोग ( Diseases of Mouth) जैसे मुख प्रदाह (Stomatitis)

(ii) कंठ या ग्रसनी के रोग ( Diseases of Pharynx) जैसे– ग्रसनी शोध (Pharyngitis)

(iii) ग्रास नली या भोजन नली के रोग ( Diseases of Oesophagus) जैसे– भोजन नली शोध (Oesophagitis)

NOT FOR COMMERCIAL USE

(iv) उदर या आमाशय रोग ( Diseases of Stomach) जैसे भूख की कमी ( Anorexia) अधिक खाना ( Over Eating), अफारा ( Tympanitis) तथा आमाशय प्रदाह (Gastritis)

(v) आन्त्र के रोग (Diseases of Intestines) जैसे– आन्त्र शोध (Enteritis) अतिसार या दस्त (Diarrhoea) पेचिस (Dysentery) उदरशूल (पेट दर्द) या कौलिक (Colic) आदि।

(vi) यकृत के रोग (Diseases of Liver) जैसे– शीतल यकृत (Congestion of Liver), ठोस यकृत (Cirrhosis of liver), फटा यकृत (Rupture of Liver), पाण्डु रोग या कामला रोग (Jaundice).

(vii) प्लीहा और अग्न्याशय के रोग (Diseases of Spleen and Pancreas)–पशुओं के इन अंगों में बहुत कम रोग होते हैं इनका पता लगाना कठिन होता है तथा उपचार भी सम्भव नहीं होता है।

(ख) श्वसन तन्त्र के रोग (**Diseases of Respiratory System**) इस तन्त्र में नाक (Nose), कण्ठ (Pharynx), स्वर–तन्त्र (Larynx), टेटुआ (Trachea), श्वसनी (Bronchi), फेफड़ा (Lungs) और श्लेष्मिका झिल्ली (Plural Membrane) के रोग होते हैं।

जैसे–नाक से खून बहना (Nasal Bleeding or Epistaxis), सर्दी, खॉसी या कफ, जुकाम (Cold-Cough), लेरेन्जाइटिस, ट्रेकाईटिस, न्यूमोनिया (Pneumonia), प्लूरीसी (Pleurisy) हॉफना (Panting) आदि।

(ग) रक्त संचालन या रक्त परिवहन तन्त्र के रोग (**Diseases of Circulatory System**) पशुओं के शरीर में रक्त वाहिनी के रूप में इनकी नलियों का जाल सारे शरीर में फैला हुआ है, इनमें लगने वाले रोग हृदय, धमनियॉ, शिराएँ और कोशिकाओं को प्रभावित करते हैं तथा यह विभिन्न प्रकार के जटिल रोग होते हैं। जैसे– एनीमिया, ल्यूकोरिया तथा हृदय सम्बन्धी रोग आदि।

(घ) लसीका तन्त्र के रोग (**Diseases of Lymphatic System**) शरीर के ऊतकों में रंगहीन द्रव होते हैं जिसे लसीका कहते हैं इसका परिवहन लसीका वाहिनी (Lymphatic Vessels) के द्वारा होता है। इसे लसीका प्रणाली (Lymphatic System) कहते हैं। लसीका वाहिनी में सूजन होने को लसीका शोध (Lymphangitis) कहते हैं।

(ड़) मूत्र तन्त्र के रोग ( **Diseases of Urinary System**) इस तन्त्र में गुर्दा, मूत्राशय और मूत्र मार्ग

NOT FOR COMMERCIAL USE

में होने वाले रोग आते हैं जैसे – गुर्दा प्रदाह (Nephritis), मूत्राशय प्रदाह (Cystitis), पथरी (Calculi), खूनी पेशाब (Haematuria) आदि।

(च) तन्त्रिका तन्त्र के रोग ( **Diseases of Nervous Systems**) इस तन्त्र में मस्तिष्क और उसकी झिल्ली, रीड़ नाड़ी और उसकी झिल्ली और तन्त्रिकाओं के रोग आते हैं जैसे–

मस्तिष्क शोध या प्रदाह (Meningitis), रीढ़ नाड़ी शोध (Myetitis) तन्त्रिका शोध (Neuritis), मिर्गी रोग (Epilepsy), मूर्छा रोग (Eclampsia), तन्त्रिका दर्द (Neuralgia) लू लगना (Sun Stroke) आदि।

(छ) प्रचलन तन्त्र या अस्थि पेशियों के रोग ( **Diseases of Locomotor System or Musculo -Skeletal System**) इस तन्त्र में अस्थि (Bones) संन्धि या जोड़ (Joints) और पेशियॉ (Muscles) के रोग आते हैं जैसे– सुखण्डी (Rickets), अस्थि शोध (Osteitis), सन्धि शोध (Arthritis), पेशीय शोध (Myoritis), गठिया या बात (Rheumatism or Screws) पिछले अंग का लकवा (Paraplegia), झनका या टनका (Stringhalt) आदि।

(ज) उपापचय या मेटाबोलिज्म के रोग (**Diseases of Metabolism**) सभी जीवों के शरीर में हमेशा भौतिक और रासायनिक परिवर्तन होते हैं। ये दो प्रकार की क्रियाओं से मिलकर पूर्ण होती हैं–

अ. उपचय (**Anabolism**) – इसके अन्तर्गत निर्माणकारी (Constructive) क्रियायें होती हैं।

ब. अपचय (**Catabolism**) – इसके अन्तर्गत विखन्डनकारी (Destrictive) क्रियायें होती हैं।

पशुओं के शरीर के इस, प्रमुख आचरण (Character) उपापचय में निम्न रोग मुख्य हैं–

(i) दुग्ध ज्वर (Milk Fever)

(ii) शर्करा की कमी या एसिटोनेमिया (Acetonaemia) या केटोसिस (Ketosis) या हाइपोग्लाइसीमिया (Hypoglyacemia)

(iii) ग्रास स्टेगर्स (Grass Staggers) या ग्रास टेटनी या लेक्टेशन टेटनी।

(iv) एजोचूरिया (Azoturia) या मण्डे मोर्निंग सिकनेस आदि।

(झ) गर्भावस्था के रोग (**Diseases of Pregnancy**)

प्रसव के पहले के रोग (**Pre-parturition Diseases**) – जैसे –

(i) गर्भपात (Abortion)

NOT FOR COMMERCIAL USE

(ii) प्रसवारोध (Dystokia)

(iii) योनि का बाहर निकलना (Prolapse of Vagina)

प्रसव के बाद के रोग (**Diseases of Post Parturition**) – जैसे –

(i) ज़ेर का रूकना या अन्दर रह जाना (Retention of Placenta)

(ii) गर्भाशय सूजन (Metritis)

(iii) योनि या गर्भाशय का बाहर निकलना ( Prolapse of Vagina and Uterus)

(iv) स्तन कोप (थनैला) (Mastitis)

(v) दूध की कमी (Agalactia)

(vi) नाभि हार्निया (Umbilical Hernia)

(vii) प्रसव मूर्छा (Parturient Eclampsia)

(viii) दुग्ध ज्वर (Milk Fever)

(ड़) प्रजनन तन्त्र के रोग ( **Diseases of Reproductive System**)

इस तन्त्र के रोगों का वर्णन नर तथा मादा के प्रजननीय अंगों के अनुसार किया जाता है जैसे–

1. नर और मादा में कभी–कभी जन्म के असामान्यता (Congenital Abnormalities) होती हैं जैसे– जनन अंगों का अविकसित होना। बॉझपन का होना, नर तथा मादा किन्हीं जनन अंगों का न होना आदि।
2. हारमोन्स की कमी से पशु में स्त्रीमद या गर्मी का न होना, नर पशु में शुक्रणुओं का न बनना, कामवासना का अव्यवस्थित होना आदि।
3. रजस्खलन या वीर्य निर्माण में रूकावट का होना।
4. हारमोन्स की अधिकता से बिना स्त्रीमद (गर्मी) के रजस्खलन होना।
5. पोषक तत्वों या पौष्टिक आहार की कमी से रज अथवा शुक्र के निर्माण में बाधा आना।
6. क्षीण निषेचन (Impaired Fertility), बार–बार गर्मी में आना (Repeated Breeding) और गर्भ का न रूकना (Non Conception) आदि।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(ट) पोषक तत्वों के अभाव वाले रोग (**Nutrients Defficiency Diseases**) पशु जो खाना खाते हैं उनका शरीर में आत्मीकरण होने के बाद कुछ ऐसे तरल पदार्थों की सृष्टि होती है जिनसे शरीर को काम करने की शक्ति मिलती है, टूटी–फूटी कोशिकाओं की मरम्मत होती है, शरीर गर्म रहता है तथा शरीर की समस्त क्रियाओं का नियन्त्रण और नियमन होता है जिससे शरीर की वृद्धि और विकास होता है । ऐसे तरल पदार्थों को पोषक तत्व (Nutrients) कहते हैं। इनकी कमी से शरीर अस्वस्थ हो जाता है तथा विकृत हो जाता है। इन पोषक तत्वों को प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, वसा, जल, विटामिन, खनिज लवण तथा फोक (Roughage) कहते हैं।

1. प्रोटीन (**Proteins**) यह कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन तथा नाइट्रोजन तत्वों से बनी होती है। इसमें गन्धक और फास्फोरस भी पाये जाते हैं। इनमें नाइट्रोजन एक मुख्य संघटक होता है जिससे एमीनो अम्ल बनता है। शरीर द्वारा बहुत से एमीनो अम्ल स्वयं तैयार किए जाते हैं तथा कुछ एमीनो अम्लों का निर्माण शरीर में नहीं हो पाता जिन्हें बाहर से भोजन के माध्यम से लेना पड़ता है। इन्हें अनिवार्य अमीनो अम्ल समझा जाता है जिनकी उपस्थिति के बिना शरीर में कई दोष हो जाते हैं। जैसे– दुधारू पशु का दूध कम हो जाता है, शरीर की रचना तथा वृद्धि रूक जाती है।

   कार्य– (i) प्रोटीन से शरीर के तन्तुओं की वृद्धि होती है।

   (ii) नयी कोशिकाओं का निर्माण होता है।

   (iii) टूटी–फूटी कोशिकाओं की मरम्मत या पुर्नजनन होता है।

   (iv) शरीर में पाचक रस, हार्मोन्स तथा एन्जाइम का निर्माण करते हैं।

   (v) ऑक्सीजन का अवशोषण होता है।

   (vi) मानसिक शक्ति बढ़ाता है।

   (vii) आवश्यकतानुसार शरीर में गर्मी बढ़ाता है।

   (viii) शरीर की रचना एवं वृद्धि के लिए आवश्यक है।

   प्राप्ति के स्रोत– वानस्पतिक प्रोटीन (**Plant Protein**) जैसे– चना, अरहर, मसूर, मूँग, सोयाबीन, मूँगफली, बादाम, अखरोट, गेंहूँ और मक्का आदि।

   प्राणी प्रोटीन (**Animal Protein**) जैसे– दूध, अण्डा, मॉस, मछली आदि।

NOT FOR COMMERCIAL USE

2. कार्बोहाइड्रेट (**Carbohydrates**) यह कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन के संयोग से बनते है।

कार्य– (i) इनसे शरीर में काम करने की शक्ति या ऊर्जा मिलती है।

(ii) शरीर को गर्म रखते है।

(iii) ऑतो के कार्यों को बढ़ाते है।(Promotes the functioning of Intestines)

(iv) प्रोटीन के अपचय (Destruction) को घटाते हैं।

(v) अधिक मात्रा में होने पर ग्लाईकोजेन (Glycogen) के रूप में मांस पेशियों में जमा हो जाते हैं। जरूरत पड़ने पर फिर रक्त में मिल जाते है।

इनके कई यौगिक हैं जैसे माड़ी, शर्करा तथा सैल्यूलोज आदि।

प्राप्ति के स्रोत– जैसे– गेंहूँ, जौ, मक्का, ज्वार, बाजरा, आलू, गन्ना, शहद, अंगूर, खजूर तथा मीदे फल दूध, हरी घास, आदि।

3. फैट (**Fat**) यह कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के संयोग से बनती है।

कार्य– (i) यह शक्ति का अनिवार्य स्रोत है।

(ii) यह अंगों की वृद्धि, विकास एवं स्वस्थ त्वचा, संरचना के लिए आवश्यक है।

(iii) यह प्रजनन पद्धति के लिए अनिवार्य है।

(iv) भोजन को स्वादिष्ट बनाती है।

(v) शरीर में उपस्थित विटामिन, ए0, ई0 ,डी0 और के0 को घोलती है।

प्राप्ति के स्रोत–

वानस्पतिक वसा जैसे– सोयाबीन, सरसों, राई, मूँगफली, अलसी, तिल, नारियल आदि।

जन्तु या प्राणिज वसा जैसे– दूध, मछली, मांस, घी, मक्खन, चर्वी, मछली तेल आदि।

4. जल (**Water**) यह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का यौगिक है। जल ही जीवन है क्योंकि इसी से मुख्य शारीरिक क्रियाएं सम्पन्न होती है। इसके अभाव या अनुपस्थिति में जीवन सम्भव नहीं है। जल से भोजन पचता है। शरीर के विकार जल में घुलकर शरीर से मूत्र तथा पसीने द्वारा बाहर निकल जाते है। जल शरीर की गर्मी को सदैव सामान्य बनाये रखता है तथा रक्त को तरल बनाये रखता है जिससे वह सहजता से शरीर में प्रवाहित होता रहता है। शरीर के प्रत्येक तन्तु को मुलायम और

NOT FOR COMMERCIAL USE

लचीला बनाता है बिना जल के पदार्थ शरीर में घुलते नहीं हैं। इसकी कमी से पाचन क्रिया ठीक से नहीं होती है, कब्ज हो जाती है, शरीर सुस्त व उदास हो जाता है तथा मूर्छा आ जाती है। अतः पशुओं को शुद्ध व ताजा जल पर्याप्त मात्रा में दिया जाना चाहिए। शरीर की जलाभाव की स्थिति में डेक्ट्रोज लवण या ग्लूकोज लवण का घोल सुई द्वारा शरीर में चढ़ाया जाता है।

5. विटामिन्स (**Vitamins**) यह कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन तथा नाइट्रोजन आदि मूल तत्वों के जटिल यौगिक हैं। ये प्राकृतिक रूप में कई पदार्थों में मिलते हैं। इन्हैं प्रयोगशाला में कृत्रिम रूप से भी तैयार किया जाता है। इनके बिना शरीर निरोग तथा स्वस्थ नहीं रह सकता है। इन्हें जीवन तत्व कहते हैं। सभी शारीरिक जीवन क्रियाओं को चलाने के लिए भोजन में इनका रहना आवश्यक है। रासायनिक क्रियाओं में विटामिन एक उत्प्रेरक (Catalyst) के रूप में कार्य करते है। इनकी उपस्थिति से शारीरिक प्रक्रिया सन्तुलित एवं तीव्र गति से होती है लेकिन इनमें कोई रासायनिक परिवर्तन नहीं होता है ये ज्यों के त्यों बने रहते हैं। इन्हें बनावट तथा कार्य के आधार पर दो वर्गों में बॉटा गया है–

1. वसा या चर्बी (**Fat Soluble**), में घुलने वाले– इनमें विटामिन ए, डी, ई, और के हैं।
2. जल में घुलने वाले ( **Water Soluble**) – इनमें विटामिन बी–कॉम्पलैक्स, सी और पी है।

1. विटामिन ए (**Vitamin A**) – यह शारीरिक वृद्धि विकास में सहयोग करता है। शरीर निरोग रहता है, पाचन शक्ति को ठीक करता है। इसकी कमी से शारीरिक विकास रूक जाता है तथा ऑख, नाक, कान तथा त्वचा के रोग हो जाते हैं। ऑख लाल रहती है तथा पानी बहता है। ऑख से धुधंला दिखाई देता है या रतौंधी (**Night Blindness**) हो जाती है। पाचन शक्ति नष्ट हो जाती है। इसकी कमी से बॉझपन हो जाता है। यह आम, गाजर, पपीता, हरी सब्जियॉ, दूध, अन्डे में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।
2. विटामिन बी–कॉम्पलैक्स (**Vitamin B-Complex**) –यह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह विटामिनों का एक समूह है जिसे बी $_1$, बी $_2$, बी $_6$, बी $_{12}$ आदि नामों से जाना जाता है। इस वर्ग के सभी विटामिन पानी में घुलनशील हैं। यह पाचन क्रिया में सहायक होते हैं। पेशियों को मजबूत बनाते हैं। भूख बढ़ाते हैं, रक्त वृद्धि करते हैं, स्नाविक दुर्बलता ठीक करते हैं, बेरी–बेरी ( **Beri-Beri**) रोग से बचाते हैं। इनकी कमी से चर्म रोग हो जाता है बाल गिरने लगते हैं, ऑखें सूज जाती हैं, रक्त वाहिनियॉ मोटी हो जाती हैं, शरीर का वजन घट जाता है, आमाशय एवं

NOT FOR COMMERCIAL USE

आन्त्र प्रदाह हो जाता है तथा शरीर में ऐंठन हाती है। यह विटामिन मांस, मछली, अन्डे की जर्दी, दूध, अंकुरित अनाज, टमाटर, हरी सब्जियॉ, गेंहूँ तथा पनीर में पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

3. विटामिन सी (**Vitamin C**) या एस्कार्बिक एसिड (**Ascorbic Acid**) – इसकी कमी से दांत या हड्डियों के रोग हो जाते हैं, जोड़ों में दर्द भरी सूजन तथा कैल्शियम की कमी हो जाती है तथा शरीर की प्रतिरोधक क्षमता घट जाती है। इसकी कमी से स्कर्वी (**Scervy**) रोग हो जाता है। यह अधिकतर खट्टे फलों, नीबूं, ऑवला, टमाटर, अनानास, आम, पपीता, गोभी की पत्तियों तथा हरी साग सब्जियों में पाया जाता है।
4. विटामिन डी (**Vitamin D**) या केल्सीफेरॉल (**Calciferol**) – इसकी कमी से दांत कमजोर हो जाते हैं, हड्डियां टेडी और मुलायम हो जाती हैं, सूखा रोग (**Rickets**) हो जाता है। चर्म तथा ऑखों के रोग हो जाते हैं। कैल्शियम तथा फास्फोरस का उपापचय तथा अवशोषण नहीं हो पाता है, जिससे हड्डियों का निर्माण नहीं हो पाता है। यह खासकर वसा और तेल वाले पदार्थों में पाये जाते हैं। जैसे– मक्खन, घी, अन्डे की जर्दी, मछली आदि। इसे सूर्य के प्रकाश से भी प्राप्त किया जाता है।
5. विटामिन ई (**Vitamin E or Anti Sterlity Vitamin**) टोकोफेरोल (**Tocopherol**) – यह वसा की दुर्गन्ध को रोकता है तथा विटामिन ए को स्थायी बनाता है यह बादाम, मक्खन, दूध, पनीर, अन्डा, अंकुरित गेंहूँ तथा सब्जियों में पाया जाता है। इसके अभाव में प्रजनन असफल हो जाता है, गर्भ नहीं ठहरता है पेशियां कमजोर पड़ जाती है। नपुंसकता या बांझपन आ जाता है।
6. विटामिन के (**Vitamin K**) – यह रक्त जमाव के लिए आवश्यक है इसके अभाव में रक्त बहाव चोट तथा कटे अंगों से जारी रहता है जिससे रक्त की शरीर से काफी क्षति हो जाती है। दस्त तथा पेचिस आदि के रोग हो जाते हैं। यह विटामिन कार्ड लिवर ऑयल, सोयाबीन, हड्डी चूर्ण, यीस्ट, पालक, टमाटर, बथुआ, अन्डा तथा पनीर आदि में मिलता है।
7. विटामिन पी–पी (**Vitamin P-P**) – इसकी कमी से त्वचा सूजकर कड़ी हो जाती है तथा कभी–कभी अतिसार भी हो जाता है। यह सेम, मटर, मक्का आदि में पाया जाता है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

6. खनिज लवण (**Mineral Salt**) – यह शरीर को स्वस्थ, निरोग, कार्य कुशल, अंगों की वृद्धि एवं प्रजनन कार्यों को सन्तुलित रखने में आवश्यक होते हैं। जैसे– कैल्शियम, फॉस्फोरस, लौह, आयोडीन, कॉपर, कोबाल्ट, सोडियम पोटेशियम, मैग्नीशियम और ज़िंक मुख्य होते हैं।

1. कैल्शियम (**Calcium**) – इसके द्वारा शरीर में निम्नलिखित कार्य होते हैं–

1. कैल्शियम के कारण रक्त जमता है।
2. हड्डियों, दॉतों के निर्माण वृद्धि और विकास होता है।
3. मांस पेशियां, ऑत तथा हृदय की सक्रियता, संकुचन तथा प्रसार के लिए आवश्यक है।
4. शरीर की रोग निरोधक शक्ति को बढ़ाता है।

2. फास्फोरस (**Phasphorus**) – इसके महत्वपूर्ण कार्य हैं–

1. प्रोटीन का निर्माण करता है।
2. रक्त मे अम्ल तथा क्षार की मात्रा को सन्तुलित बनाये रखता है।
3. इसके तथा कैल्शियम के सहयोग से हड्डियों तथा दिमाग का निर्माण होता है।
4. रक्त के लाल कणों के निर्माण में सहायक होता है।

3. सोडियम (**Sodium**) – इसका महत्व शरीर में निम्नवत् होता हैं–

1. यह रक्तचाप की व्यवस्था और उसके सामान्य प्रवाह के लिए अनिवार्य है।
2. यह कोशिकाओं के अन्तःद्रव्य का मुख्य भाग होता है।
3. भोजन को रूचिकर बनाता है।
4. इसकी अधिकता से नमक विष नामक पदार्थ के कारण पशु की मृत्यु भी हो सकती है।
5. यह शारीरिक भार का सन्तुलन बनाये रखता है।

4. लौह (**Iron**) – इसके पशु शरीर में निम्नलिखित प्रमुख कार्य हैं–

1. यह लाल रक्त कणिकाओं के हीमोग्लोबिन की रचना के लिए अति अनिवार्य खनिज है।
2. इससे लाल रक्त कणों का निर्माण होता है।
3. इसके अभाव से शरीर मे रक्तहीनता हो जाती है।
4. यह गाभिन पशुओं के लिए अति आवश्यक है।

4. आयोडीन (**Iodine**) – इसका महत्व शरीर में निम्नवत् होता हैं–

1. यह शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए आवश्यक है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

2. यह थाइराइड ग्रन्थि को नियन्त्रण में रखता है। इसके अभाव में ग्रन्थि बढ़ जाती है जिससे घेघा रोग हो जाता है।
3. शरीर के बाल इसके अभाव में झड़ने लगते हैं।

5. कोबाल्ट (**Cobalt**) –

1. यह विटामिन $B_{12}$ के निर्माण में अनिवार्य होता है।
2. भूख बढ़ाता है।
3. इसके अभाव में रक्त की कमी हो जाती है।
4. त्वचा के रूखेपन को बचाता है।
5. इसके अभाव में स्नायुविक प्रदाह या दुर्बलता आ जाती है।

6. कॉपर या तॉबा (**Copper**) –

1. यह रक्त के हीमोग्लाकबिन (Haemoglobin) के निर्माण में काम आता है।
2. यह ऊतकों में उपापचय क्रिया सम्पन्न कराता है।
3. यह अस्थि निर्माण में भी सहयोग करता है।
4. यह एन्जाइमों का अनिवार्य अंग है।
5. इसके अभाव में रक्त अल्पता, हड्डियों में सूजन हो जाती है।

7. मैगनीशियम (**Magnesium**) – यह मैगनीशियम सल्फेट या कार्बोनेट के रूप में मिलते हैं तथा–

1. इसके अभाव में कार्पल (Carpal) और टार्सल (Tarsal) हड्डियों का विस्तार हो जाता है।
2. इसके अभाव में ग्रास टेटनी ( **Grass Tetany**) रोग हो जाता है। इसे लैक्टेशन टेटनी भी कहते हैं जिससे पशु उत्तेजित रहता है, शरीर ऐंठता है तथा मांस पेशियॉ कॉपती हैं।

8. पोटेशियम (**Potassium**) –

1. इसके अभाव से पेशियों में दुर्बलता और ऐंठन होती है।
2. इसके अभाव से निचले अंगों में पक्षाघात हो जाता है।

9. ज़िंक (**Zink**) –

यह सामान्य वृद्धि और ऊतकों की मरम्मत के लिए उत्तरदायी है, इसके अभाव में जख्म नहीं भर पाता है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

10. सेलीनियम (**Selenium**) –

यह पशुओं में बॉझपन को रोकने के लिए सबसे महत्वपूर्ण खनिज है, जिसकी कमी से पशु गर्मी पर नहीं आता, गर्भ नहीं ठहरता, बॉझपन तथा नपुंसकता आ जाती है। भोजन से इसके अवशोषण के लिए आहार में इसके साथ–साथ विटामिन ई का होना अत्यन्त आवश्यक है।

3– संक्रामक या संसर्गी (छूत वाले) रोग **(Infectious or Contagious Diseases)**

संक्रामक रोग **(Infectious Diseases)**

ऐसे रोग जो सूक्ष्म कीटाणुओं के कारण होते हैं तथा इनका फैलाव संक्रमण से होता है जैसे पशुओं के साथ–साथ रहने, साथ–साथ चारा खाने से, सॉस द्वारा अथवा सम्भोग द्वारा। ये रोग एक पशु से दूसरे पशु को लग जाते हैं।

संसर्गी या छूत वाले रोग **(Contagious Diseases)**

ये रोग भी सूक्ष्म कीटाणुओं (Micro Organisms) के कारण होते हैं। ये कीटाणु पशुओं या मनुष्य में शरीर के प्राकृतिक छिद्रों द्वारा पानी, हवा या भोजन के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में शरीर के अन्दर पहुँच कर रोग पैदा करते हैं। सभी छूत की बीमारियॉ संक्रामक होती है परन्तु सभी संक्रामक बीमारियॉ छूत वाली नहीं होती हैं।

जब संक्रामक या संसर्गी रोग कई पशुओं को एक साथ होता है और कई पशु साथ–साथ मरने लगते हैं तब उसे महामारी (**Epidemic**) कहते हैं।

रोग का फैलाव (**Mode of Dissemination**)

1. बीमारी वाले पशु का सम्पर्क बिना बीमारी वाले पशु के साथ होने पर इस प्रकार का रोग फैलता है जैसे रिंग वॉर्म, बैंग (Bang's) तथा Venerial या STD आदि।
2. संक्रमणीय पदार्थ के सम्पर्क में आने से जैसे– संक्रामक गर्भपात आदि।
3. रोगग्रस्त पशु के सम्पर्क में आयी वस्तु द्वारा।
4. मिट्टी द्वारा।
5. भोजन व जल द्वारा।
6. हवा द्वारा (Air Born Infection)
7. रक्त चूसने वाले कीटों द्वारा।

NOT FOR COMMERCIAL USE

रोग के कारण–

पशुओं में अधिकतर संक्रामक रोग निम्न प्रकार के कीटाणुओं (Pathogenic Micro Organisms) के कारण फैलते हैं।

1. सूक्ष्म जीवाणु (Bacteria) 2. वायरस (Virus) या विषाणु

जीवाणु (**Bacteria**)

जीवाणु एक कोशिकीय रचना होती हैं जिसका शारीरिक बनावट के अनुसार विभाजन नहीं किया जा सकता। इन्हैं केवल सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से देखा जा सकता है। यह जीवित शरीर के अन्दर तथा बाहर के वातावरण में विभाजन कर अपनी संख्या में वृद्धि करते हैं। जीवाणु कई एक आकार प्रकार के होते हैं। जैसे आकार में गोल, लम्बा, टेड़ा–मेड़ा आदि और प्रकार में स्ट्रेप्टोकोकस, स्टेफिलोकोकस, पासचुरेला, हेमोफिलस, वैसिलस, क्लास्ट्रीडियम, एक्टीनो वैसीलस, कोराइन बैक्टीरियम, लप्टोस्पाइरा आदि।

इन जीवाणुओं को चिकित्सा विज्ञान में मुख्यरूप से दो भागों में बॉटा गया है।

1. ग्राम पोजिटिव जीवाणु ( Gram Positive Bacteria)
2. ग्राम नेगेटिव जीवाणु ( Gram Negative Bacteria)

ग्राम पोजिटिव जीवाणु– ऐसे जीवाणु जो ग्राम स्टेन से रंगे जा सकते हैं, इन्हें ग्राम पोजिटिव जीवाणु कहते हैं जैसे– लंगडा बुखार के जीवाणु।

ग्राम नेगेटिव जीवाणु– ऐसे जीवाणु जो ग्राम स्टेन से नहीं रंगे जा सकते हैं, इन्हें ग्राम नेगेटिव जीवाणु कहते हैं जैसे– गला घोंटू रोग के जीवाणु।

जीवाणुओं द्वारा पशुओं में होने वाले निम्नलिखित मुख्य रोग है–

1. गला घोंटू या एच0 एस0 (Haemorrhagic Septicaemia)
2. लंगडा या सूजा या जहरवाद या ब्लैक क्वार्टर (Black Quarter)
3. गिल्टी या बिलहरी या प्लीहा बढ़वा या एन्थ्रेक्स (Anthrax)
4. संक्रमक गर्भपात या कन्टेजियस एबोर्शन (Contagious Abortion) ब्रुसेलोसिस (Brucellosis)
5. क्षय रोग या तपैदिक या टी0बी0 (Tuberculosis)
6. जोन्स रोग (John's diseases JD)

NOT FOR COMMERCIAL USE

7. संसर्गी बोवाइन प्लूरो न्यूमोनिया (Contagious Bovine Pleuro Pneumonia)
8. फुट रौट (Foot Rot)
9. धनुषटंकार या टिटनेस (Tetanus)
10. जहरीला घाव या एक्टीनोमाइकोसिस (Actinomycosis)
11. बछड़ों का उजला पीला दस्त (White Scour in Calves)
12. श्वांसारोधक (Strangles)
13. लेप्टोस्पाइरोसिस (Leptospirosis)
14. थनैला (Mastitis)

विषाणु (**Virus**)–

विषाणु अत्यन्त सूक्ष्म कीटाणू होता है जो सामान्य सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से भी नहीं देखा जा सकता है। ये R.N.A. तथा D.N.A. से बनी सूक्ष्म संरचना होती है। यह केवल जीवित कोशिका के अन्दर अपना विभाजन व वृद्धि करते हैं। बाहर आने पर जैसे से तैसे बने रहते है। इन्हैं इलैक्ट्रोनिक सूक्ष्मदर्शी से देखा जा सकता है। इनसे फैलने वाले मुख्य रोग निम्न हैं–

1. अढ़ैया या इफीमेरल फीवर (Ephemeral Fever)
2. खुरहा या खुरपका मुँहपका (F.M.D.)
3. पेंकनी या रिन्डरपेस्ट (Rinderpest)
4. चेचक या माता या शीतला (Pox)
5. पागल कुत्ते का काटना या रेबीज (Rabies)
6. डिस्टेम्पर (Distemper)
7. पारवो वाइरस इन्फैक्शन (Parvo Virus Infection)
8. संक्रामक श्वान हेपटाइटीस (Infectins Canine Hepatitis)
9. पशुओं का मैथुन रोग (Coital Exanthema of Cattle)
10. संक्रामक एकथिमा (Cantagious Ecthyma)
11. नीली जीभ (Blue Tongue)
12. अश्व मस्तिष्क प्रदाह (Equine Encephalomyelitis)

NOT FOR COMMERCIAL USE

13. शूकर ज्वर (Swine Fever)

14. अश्व इन्फ्लुएन्जा (Equine Influenza)

4– परजीवी एवं फॅफूदी रोग (**Parasitic and Fungal Diseases**)

परजीवी (**Parasites**) – परजीवी एक कोशिकीय या बहुकोशिकीय जीव हैं जिन्हें हम क्रमशः प्रजीवा तथा कृमि कहते हैं। परजीवी किसी जीव के शरीर के बाहर या भीतर निवास कर अपना भोजन संरक्षण करते हैं तथा आश्रय पाते हैं। जिसमें यह निवास करते हैं उसे परपोषी (पोषक) (Host) कहते है।

जब किसी भी रूप में दो जीव एक साथ रहते हैं तब उसे सहजीविता (Symbiasis) कहा जाता है। इस प्रकार के सहवास (Co-Habitation) से जब एक दूसरे को लाभ होता है तो उसे सहोपकारिता (Mututation) कहा जाता है। जब सिर्फ एक पक्ष को लाभ होता है और दूसरे पक्ष को हानि नहीं होती है तो उसे सहभोजिता (Commesatism) कहा जाता है। जब कोई जीव अपने जीवन की भिन्न–भिन्न अवधि दो या अधिक आतिथेय पर बिताता है तब एक मध्यावर्ती अवधि वाले मध्यस्थ पोषक (Intermediate Host) तथा दूसरे अन्तिम वाले को अन्तिम पोषक (Find Host) कहा जाता है। मध्यावर्ती अवस्था में लार्वा (Larva) और अन्तिम अवस्था में वयस्क कृमि होते हैं।

इन परजीवियों का फैलाव और इनका जीवन चक्र जलवायु (तापमान और आद्रता) पोषक तत्वों, जीव जन्तुओं की प्रचुरता तथा स्थानीय पशुपालन के तौर–तरीके पर निर्भर करता है।

परजीवियों को मुख्यतः दो भागों में बॉटा जाता है–

1. बाह्य परजीवी (Ectoparasites) जैसे– किलनी , जूँ आदि।

2. अन्तः परजीवी (Endoparasites) जैसे– प्रजीवा (Protozoa) कृमि (Helminthes) आदि।

**(**अ) परजीवियों द्वारा रोग **(Diseases of Parasites**)

1. एक कोशिकीय परजीवी रोग– (प्रजीवा) **Protozoal Diseases**

(i) थिलेरिएसिस (Theileriasis)

(ii) ऐनाप्लाज्मोसिस (Anaplasmosis)

(iii) सर्रा या ट्रीपेनोसोमिएसिस (Trypanosomiasis)

(iv) लाल पेशाब या बवेसिएसिस (Babesiasis)

NOT FOR COMMERCIAL USE

(v) खूनी दस्त या पेचिश या काकसीडियोसिस (Coccidiosis)

(vi) अमेबिएसिस (Amoebiasis)

(vii) ट्राइकोमोनिएसिस (Trichomoniasis)

2. बहु कोशिकीय परजीवी एवं फॅफूदी रोग (**Multicellular Parasistes**)

या

मेटाजोअल रोग (**Metazoal Disease**)

(i) प्लेटीहेल्मन्थीज–चपटे कीड़े (Flat Worms), पत्ती कृमि (Flukes) जैसे– लीवर फ्लूक्स, गिल्लर एण्ड पिट्टु फीताकृमि (Tape Worms) जैसे– टेनिएसिस, गिड या चक्कर आदि।

(ii) एस्कहेल्मन्थीज– सूत्रकृमि (Nematoda), गोल कृमि या मल–सर्प (Round Worms) जैसे– एस्केरिएसिस, कृमियुक्त श्वसनी प्रदाह, हुक वर्म्स, कटिपक्षाघात या कुमरी आदि।

(ब) बाह्य परजीवी रोग (**Ectoparasitic Diseases**)

(i) कुटकी चमोकन या माइट्स से –खाज या खौड़ा या मेन्ज।

(ii) किलनी या चीचड़ी या टिक्स से – टिक फीवर आदि।

(iii) टेवनेस, स्टोमैक्सी, सी0सी0 मक्खी से – सर्रा आदि।

(iv) हाइपोड्र्गा या बार्बुल फ्लाई से –कष्ट, अशान्ति एवं त्वचा हानि।

(v) जूं से – पेडीकूलोसिस।

(vi) जोंक से – रक्त स्राव।

परजीवी रोगों की रोकथाम के सामान्य उपाय –

1. पशुओं के ठहरने का स्थान साफ सुथरा होना चाहिए।
2. पशुओं को बॉधने का स्थान बड़ा होना चाहिए। कई पशु पास–पास नहीं बॉधे जाने चाहिए तथा छोटे बछड़ों–बछियों को अलग बॉधना चाहिए।
3. पशुओं के रहने के स्थानों को अदल–बदलते रहना चाहिए जिससे कीड़े के अन्डे नष्ट होते रहें।
4. पशुओं के खाने का बर्तन या नाँद जमीन के स्तर से ऊपर एवं साफ–सुथरा रहना चाहिए।
5. पीने का पानी स्वच्छ एवं ताजा होना चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

6. पशुओं को तालाबों के आस–पास नीची एवं दलदली भूमि में नहीं चराना चाहिए, क्योंकि ऐसी जगहों में कीड़ों के अन्डे, बच्चे पाये जाते हैं जिससे रोग लग जाने का भय रहता है।
7. पशुओं का आहार पौष्टिक एवं सन्तुलित होना चाहिए इससे पशुओं में रोगों को रोकने की शक्ति मिलती है।
8. पशुओं को समय–समय पर कृमिनाशक दवा पिलाते रहना चाहिए। कृमि रोग की कोई भी दवा 3–4 सप्ताह से पहले दुबारा नहीं पिलानी चाहिए।
9. रोगी पशुओं के रहने के स्थानों में कृमि नाशक दवाओं का प्रयोग करना चाहिए, जिससे कीड़ों के अन्डे तथा बच्चे नष्ट हो जायं।
10. रोगी पशुओं को स्वस्थ पशु से अलग रखना चाहिए।

फफूँदी रोग **(Fungal Diseases**)

कवक या फफूँदी, वनस्पति जगत के थैलोफाइटा संघ के कई वर्गों के सदस्य हैं। यह पौधों से भिन्न होते हैं। इसमें क्लोरोफिल नहीं होता है। यह परजीवी (Parasites) या सेप्रोफाइट्स (Sprophytes) हैं, जो सड़े गले तथा कार्बनिक पदार्थों पर उगते हैं। ये पालतू पशुओं में संक्रमण विषाक्तताएं उत्पन्न करते हैं, जैसे– यीस्ट तथा कवक, PNn फफूँदी (ढ़ीले धागे की तरह कालोनी की तरह उगती है। ये बहुकोशिकीय रोगाणु हैं जबकि यीस्ट एक कोशीय संरचना के जीवाणु हैं।

इनसे निम्नलिखित रोग होते हैं–

1. घोड़ों में – इपीजुटिक लिम्फन्जाइटिस (Epizootic Lymphangities)
2. सभी पशुओं में– दाद–दिनाय (Ring Worms)
3. पत्तियों में –फेवस (Favus) एसपरजीलोसिस (Aspergilosis)

5– त्वचा रोग (**Skin Diseases**)

त्वचा पर होने वाले मुख्य रोग निम्नलिखित हैं–

1. खुजली या खारिज (Pruritis or Itching)
2. अकौता या एक्ज़िमा (Eczema or Herpes)
3. दाद–दिनाय (Ring Worm or Trichophytosis)
4. जल पित्ती या आर्टिकेरिया (Urticaria)
5. गंजापन या बाल का उड़ना या एलोपेशिया (Alopecia)

NOT FOR COMMERCIAL USE

6. त्वचा का सड़ाव (Gangrene of Skin)
7. सूजन और शोध (Swelling and Oedema)
8. रसौलियां (Tumours or Neoplasms)
9. मस्से या गुठलियॉ या पैपिलोमा (Papilloma)
10. कैंसर (Cancer)
11. सींग कैंसर (Horn Cancer)
12. खाज – खौड़ा (Mange or Scabies)
13. फोड़ा – फुन्सी (Absces and Boils) आदि।

7. विष रोग **(Diseases of Poisons**)

विष या जहर एक ऐसी चीज है जिसके खाने, पीने और लगाने से पशु की मृत्यु हो जाती है या तो यह आकस्मिक (Accidental) होता है या द्वेष (Malice) से खिलाया, पिलाया या लगाया जाता है। बहुत से पौधे, फल, अनाज, खनिज, दवाइयॉ आदि हैं जो विष होती हैं या उनमें विष रहता है जैसे–

पौधों में – ज्वार, अलसी, खेसारी आदि।

फलों में– धतूरा, कुलचा, अण्डी, जैतून का तेल (Acorn) आदि।

अनाजों में – खेसारी, सोयाबीन, खली, अलसी की खली, कपास बीज खली, शराब वाले अनाज (जौ) आदि।

खनिजों में – आर्सेनिक, जस्ता, कॉपर, सीसा (Zinc Phosphide), एण्टीमनी, आयोडीन आदि।

दवाईयों में – चूहामार (Favus), कीड़ा मकोड़ा मार (Insecticide or Pesticide) अम्ल, क्षार (Alkali) आदि।

अन्य – कारखानों का दूषित जल, रंग (Paints) सॉप काटना, विद्युत आधात (Electric Shock) आदि।

NOT FOR COMMERCIAL USE

कुछ मुख्य प्रचलित विषों के नाम इस प्रकार हैं।

1. हाइड्रोसायनिक एसिड विष **(Hydrocynic Acid Poisoning)**

यह एक शक्तिशाली जहर है जो कई प्रकार के पौधों में पाया जाता है जैसे ज्वार (Sorghum) के पौधों की निश्चित अवस्था में, कागजी बादाम, अलसी आदि।

लक्षण –

(i) इस विष के पौधों को पशु के खाने के 10–15 मिनट के अन्दर लक्षण दिखाई पड़ते हैं और पशु 1–2 घन्टे में मर जाता है।

(ii) कष्ट से साथ मुँह खोलकर सांस लेना तथा मुँह पर फेन होना।

(iii) बेचैनी और अफारा होना।

(iv) पशु का गिर जाना और उठने में अयोग्य होना।

(v) सिर को बगल में घुमाकर रखना तथा ऑख बन्द करना जैसे दुग्ध ज्वर में होता है।

(vi) मुँह से कडुवे बादाम की सी गन्ध आना।

(vii) ऑख की पुतलियॉ फैली हुई तथा श्लष्मिक झिल्ली चमकीली एवं लाल होना।

(viii) दम घुटने की सी पीड़ा तथा सदैव मुँह खोलना और बन्द करना, दॉत किटकिटाना और ऑख मे चक्र के समान गति होना।

चिकित्सा **(Treatment)**

1. सिर पर ढंडा पानी रखें तथा एमाइल नाइट्रेट या अमोनिया सुंघाएं।
2. श्वांस क्रिया करें।
3. हो सके तो शीघ्र (कै) करायें।
4. शीघ्र डाक्टर की सलाह लें।

2. संखिया विष **(Arsenic Poisoning)** – यह विष दूषित जल पीनत्र संखिया युक्त औषधि का छिड़काव किए गये पौधों या घास खाने, औषधि के रूप मे इसकी अधिक मात्रा खाने या सुई लगाने, या इसके घोल में पशु को नहलाने या चाटने से पशु को विष लग जाता है।विष की अधिकता से पशु की मृत्यु 3–4 घन्टे में हो जाती है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

लक्षण–

(i) यह रोग तीव्रता से होता है।

(ii) तीव्र उदर शूल तथा अधिक प्यास।

(iii) तेज दुर्गन्ध भरा खूनी दस्त।

(iv) शुरू मे रक्तचाप मे गिरावट, शारीरिक तापमान सामान्य से नीचे।

(v) पेशाव में रक्त तथा अलवुमीन का होना।

(vi) पिछले अंगों का पक्षाघात।

(vii) थन, योनिओष्ठ, अन्डकोष थैली, ऑखों के चारों ओर की त्वचा का चिपड़ी सा उखड़ना तथा त्वचा का झुलसने का सा रूप होना।

चिकित्सा **(Treatment)**

1. उल्टी या कै कराएं।
2. आमाशय आन्त्र–शोध में टैनिक एसिड या अन्डे का उजला भाग खिलाएं।
3. टानिक तथा मूत्रवर्धक दवा दें (पशु चिकित्सक की सलाह से)।

3. सीसा विष **(Lead Poisoning)** – यह विष जुगाली करने वाले पशुओं में प्रभावकारी होता है, यह विष सीसा युक्त रंग चाटने, सीसा युक्त पाइप का पानी पीने, सीसे की गोली खाने से पशुओं के शरीर में फैलता है।

लक्षण– इस विष के लक्षण पाचनतन्त्र तथा तन्त्रिका तन्त्र पर मिलते हैं–

(i) आन्त्र शोध, आमाशय शोध, तेज उदरशूल, पेशियों में ऐंठन, दॉत किटकिटाना ।

(ii) दुर्गन्ध भरा पानी के समान पतले दस्त, भूख न लगना, कभी–कभी कब्ज और दस्त।

(iii) लड़खड़ाना, डगमगाना, अन्धापन, दीवाल मे माथा अड़ाकर खड़ा होना।

(v) आवाज मे बदलाव, गरजना, डकारना तथा चिल्लाना।

चिकित्सा **(Treatment)**

1. स्टोमक ट्यूब द्वारा कै वाली दवा दें।
2. दस्तावर जैसे मैगसल्फ या सोड़ी सल्फ पिलावैं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

3. अन्डे का उजला भाग दे सकते है।
4. लम्बे समय **(Chronic Poisoning)** मैं पौटेशियम आयोडाइड 2 से 16 ग्राम गुड़ में दें।

4. कीड़े मकोड़े मार विष **(Insecticide or Pesticide Poisoning)** – यह विष कीड़े– मकोड़े मार दवाओं के पौधों पर छिडकने के उपरान्त पशुओं को चारा, घास एवं पौधों को खिलाने या सीधे सम्पर्क जैसे गेमेक्सीन, डी0 डी0 टी0, एलड्रीन आदि से होता है ।

लक्षण–

कॅपकपी, थरथराहट, लड़खड़ाहट, दॉत किटकिटाना या पीसना, उत्तेजना, ज्वर , श्वांस लेने में कष्ट, चलने फिरने मे अयोग्यता आदि लक्षण मिलते हैं।

चिकित्सा **(Treatment)**

1. यदि पशुओं के बाहरी शरीर पर प्रभाव पड़ा हो तो साबुन, पानी से तुरन्त धोलें।
2. तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

5. सर्प दंश विष **(Snake bite Poisoning)** –

लक्षण–

सर्प पशुओं को प्रायः पैर या मुॅह पर काट सकते हैं। अतः इन जगहों पर सर्प के दॉत के निशान देखना चाहिए। सर्प के काटने के स्थान पर दर्द एवं सूजन हो सकती है। मुॅह से लार, फेन चलने लगता है। ऊॅघना, शून्यता, अकड़पन, लेटना एवं पक्षाघात के लक्षण दिखाई पड़ते हैं। पशु की मृत्यु श्वांस रूकने से होती है।

चिकित्सा **(Treatment)**

1. सॉप के काटे हुए स्थान के ऊपर हृदय की ओर कपड़े या रस्सी से बॉध देना चाहिए।
2. काटे हुए स्थान को चाकू या ब्लेड़ से छोटा चीरा लगाकर पोटेशियम परमेगनेट भर देना चाहिए।
3. तुरन्त डॉक्टर की सलाह लें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय 5

# पशुओं के बाहरी आघात वाले रोग

# (Diseases of External Injuries)

1. घाव **(Cuts or Wound)** – पशुओं में कभी कॉटेदार तारों, तेज औजारों या रगड़ लगने, टक्कर खाने से त्वचा या मांस फट जाता है या घाव हो जाता है, उस से खून बहने लगता है दर्द होता है।

   प्राथमिक पशु चिकित्सा –

   (i) घाव के आस–पास के बालों को काट देना चाहिए।

   (ii) यदि घाव में काई वस्तु फॅसी है तो उसे निकाल देना चाहिए।

   (iii) घाव को जीवाणु रोधक दवाओं जैसे – पोटेशियम परमेगनेट आदि के घोल से धोना चाहिए।

   (iv) यदि घाव से खून नहीं बह रहा है तो घाव पर टिंचर आयोडीन की पट्टी बॉधनी चाहिए तथा जीवाणु नाशक मलहम का प्रयोग करना चाहिए।

   (v) यदि घाव मे कीड़े पड़ गये हों तो तारपीन का तेल य फिनाइल डालने से कीड़े मर जाते हैं। घाव से कीड़े निकालकर लारेक्सेन एन्टीसेप्टिक क्रीम लगायें अथवा लोरेक्सेन स्प्रे करें।

2. फोड़ा – फुन्सी **(Absceses or Boils)** – शरीर के किसी भाग में मवाद (पीव) इकट्ठा हो जाय तो उस भाग में सूजन, दर्द, गर्मी और लाली आ जाती है। यह फोड़ा–फुन्सी का रूप धारण कर लेती है। इसके फटने पर पीव निकलता है तथा दबाने पर काफी दर्द करता है, यदि फोड़ा गहरा होता है तो जानवर को बुखार भी हो सकता है, चलने फिरने में कठिनाई हो सकती है। यदि फोड़ा–फुन्सी पुरानी हो जाती है तो कड़ी और ठण्डी हो जाती है। दर्द भी कम होता है किन्तु मवाद से पूरा भरा रहता है। ऐसी हालत में फोड़ा–फुन्सी का उपचार जल्दी करना चाहिए।

   प्राथमिक पशु चिकित्सा –

   (i) यदि फोड़ा हाल ही का हो, पीव न भरा हो तो उसे सेककर (गर्म पानी में नमक डालकर) अथवा रेड मरकरी मलहम या वेलाडोना की पट्टी लगा देना चाहिए जिससे फोड़ा शीघ्र पक जाय।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(ii) पके हुए फोड़े में छोटा चीरा लगाकर पूरा मवाद बाहर निकाल देना चाहिए तथा उसमें टिंचर आयोडीन की पट्टी भिगोकर भर देना चाहिए तथा उसकी रोज सफाई करनी चाहिए।

(iii) फोड़े के घाव पर कीटाणु नाशक मलहम (टेरामाइसिन, सोफ्रामाइसिन क्रीम, हीमेक्स या नियोस्प्रीन ) लगाना चाहिए।

(iv) यदि फोड़ा पका हो या उसे पक जाने पर किसी कीटाणु रहित चाकू या ब्लैड से चीर कर अन्दर का पीव निकाल देना चाहिए और पोटेशियम परमेगनेट या फिनाइल या सेवलॉन से साफ कर रूई से अच्छी तरह पौंछ देना चाहिए तथा कीटाणु नाशक मलहम रूई में लगाकर घाव में भरने के उपरान्त पट्टी बॉध देना चाहिए।

(v) घाव पर कीटाणु नाशक दवा प्रतिदिन लगाना चाहिए इसके लिए ड्रेसिंग आयल (तारपीन का तेल 3 मि0ली0, कार्बोलिक एसिड 4 मि0लि0, यूकेलिप्टस तेल 15 मि0ली0 और अलसी का तेल 500 ग्राम सबको मिलाकर बनाया जाता है) सबसे उत्तम दवा है।

3. खून बहना **(Bleeding or Haemorrhage)** – शरीर का कोई भाग कट–फट जाता है अथवा उस पर जीवाणुओं या परजीवियों का आक्रमण होता है तो शिरा और धमनी के ऊपर इसका असर होता है और बाहर अथवा भीतर से खून बहने लगता है। खून अधिक निकलने पर शरीर में इसकी कमी हो जाती है तथा पशु कमजोर हो जाता है। अधिक रक्त निकलने पर पशु मर भी सकता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) यदि रक्त का बहना थोड़ी जगह के कटने या फटने से हो तो ऐसी हालत में उस पर ठंडा पानी या बर्फ रखना चाहिए। यदि खून अधिक बह रहा है तो रक्त बहने के स्थान के ऊपर यदि बॉधने की जगह हो तो रस्सी से बॉध देना चाहिए या लोहा गर्म कर उसे दाग देना चाहिए। इससे खून बहना बन्द हो जाएगा।

(ii) घाव पर टिंचर बेन्जोइन या फिटकरी का 5% घोल लगाना चाहिए।

(iii) प्रचुर मात्रा में रक्त निकलने पर नमक 25–30 ग्राम पीने के पानी मे दिया जा सकता है।

(iv) एन्टीबायोटिक औषधियॉ भी दी जा सकती है। (डॉक्टर की सलाह पर)

(v) रक्त रोधक औषधियों का इन्जेक्शन भी खून रोकने को दे सकते हैं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

4. जलना **(Burns)** – जब किसी पशु के शरीर का भाग गरम पानी, गरम तेल, अम्ल गर्म धातु अथवा आग से जल जाता है तथा फफोले पड़ जाते हैं अथवा जला हुआ भाग काला पड़ जाता है, इस प्रकार जलने के स्थान पर विष एकत्रित हो जाता है जो बाद में पूरे शरीर मे फैल जाता है।

   प्राथमिक पशु चिकित्सा –

   (i) यदि पशु का अंग तुरन्त जला है तो जलने के स्थान पर शीघ्र ठंडा जल या बर्फ लगानी चाहिए।

   (ii) चूने का पानी या अलसी का तेल बराबर मात्रा में मिलाकर लगाना चाहिए।

   (iii) दूध का छोआ, गर्म सिरका, स्याही, लिक्विड पैराफीन या वैसलीन आदि लगाना चाहिए।

   (iv) बरनोल, टेरामाइसिन मलहम, सोफ्रामाइसिन मलहम, हिमैक्स चर्मिल आदि लगायी जा सकती है

   (v) सोडियम बाई कार्बोनेट या मैग्नीसियम बाई कार्बोनेट का 10% धोल लगाना चाहिए।

5. कन्धा आना **(Yoke Gall)** – यह रोग खासकर काम करने वाले पशुओं के गर्दन या कन्धे पर होता है। इसे गर्दन या कन्धे का घाव कहा जाता है। इस रोग का कारण जुए द्वारा गर्दन पर दबाव से सूजन आना होता है। गर्दन मोड़ने व झुकाने पर दर्द होता है। यदि इसका उपचार न किया गया तो बाद मे काफी कड़ी हो जाती है तथा सूजन व घाव का रूप ले लेती है।

   प्राथमिक पशु चिकित्सा –

   (i) प्रभावित भाग की सिकाई करनी चाहिए तथा पशु से काम लेना तुरन्त बन्द कर देना चाहिए।

   (ii) यदि सूजन कड़ा हो गया है तो आयोडेक्स या आयोडीन मलहम लगाकर धीरे–धीरे देर तक मलना चाहिए। यदि इससे लाभ न हो तो घाव पर लाल मलहम (रैड मरकरी) लगाइये इससे घाव मे पीव बन जाती है जिसे चीर फाड़कर एवं साफ कर घाव का उपचार करना चाहिए। उक्त हेतु कन्धे के निचले हिस्से पर जहॉ से कन्धा शरीर से जुड़ा है एक नए ब्लेड से चीरा लगाने वाले स्थान को स्प्रिट से अच्छी तरह साफ करके लम्बवत् लगभग 1'' लम्बा चीरा लगाकर अन्दर भरे हुए मवाद को दबा–दबा कर बाहर निकाल देते हैं। इसके पश्चात् पट्टी का रोल लेकर उसे अच्छी तरह टिंचर आयोडीन अथवा बीटाडीन के घोल में भिगोकर चिमटी की मदद से चीरा लगाए स्थान से अन्दर भरते जाते हैं तथा अन्तिम सिरा लगभग 1 इन्च बाहर छोड़ देते हैं। इस पट्टी को घाव सूखने तक प्रत्येक 24 घन्टे पर बदलते रहना चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(iii) यदि पशु से काम लेने के एक–दो दिन पहले से या काम के शुरू के कुछ दिनों में गर्दन पर अमोनिया लिनीमेंनट (कपूर एक भाग और अलसी का तेल 4 भाग मिलाकर) लगाया जाय तो सूजन या घाव नहीं होने पाता है । पशु को इन्जेक्शन द्वारा एन्टीबायोटिक औषधियॉ तथा पीड़ाहारी औषधियॉ 5 दिनों दें।

6. चोट–मोच **(Bruises or Sprain**) – पशुओं के पैरों में बाहरी चोट लगने से, पैर फिसलने, गिर पड़ने आदि कारणों से पशुओं की टॉगों और पुट्ठों में सूजन और दर्द हो जाता है और पशु लंगड़ाने लगता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) रोगी पशु से काम लेना बन्द कर देना चाहिए।

(ii) सूजे हुए भाग पर आयोडीन मलहम या आयोडैक्स या अमोनिया लिनीमेंन्ट आदि से मालिश करनी चाहिए।

(iii) यदि रोग पुराना हो गया तो रेड मरकरी मलहम लगाना चाहिए। इसके लगाने से शुरू में रोग बढ़ता है तथा धीरे–धीरे अच्छा हो जाता है।

(iv) एन्टीबाइटिक दवाओं का प्रयोग करना चाहिए। (डॉक्टर की सलाह पर)।

7. हड्डी–टूटना **(Fracture**) – शरीर की किसी भी हड्डी के टूटने को फ्रैक्चर कहते हैं। फ्रैक्चर दो प्रकार का होता है–

(**i**) साधारण फ्रैक्चर (**Simple Fracture**) – यदि हड्डी टूटने के बाद त्वचा का कोई भाग कटा फटा न हो अथवा टूटी हुई हड्डी का कोई भाग त्वचा के बाहर न निकले तो उसे साधारण फ्रैक्चर कहते हैं।

(**i**) असाधारण फ्रैक्चर (**Compound Fracture**) – जब टूटी हुई हड्डी त्वचा को फाड़ कर बाहर निकल आती है तब उसे असाधारण फ्रैक्चर कहते हैं।

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

(i) पशु को सामान्य स्थिति में लिटाकर टूटे हुए अंग (पैर) को सामान्य स्थिति में रखकर टूटे हुए स्थान का ज्ञान हाथ से कर लें। हड्डी को ठीक जगह पर बैठाने की कोशिश करें। हड्डी खट्ट की

NOT FOR COMMERCIAL USE

आवाज से अपनी जगह पर चली जाएगी। तब बास की पतली पट्टी में रूई लपेटकर टूटी जगह पर कस कर बांध देना चाहिए तथा पशु चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

8. सींग टूटना **(Broken Horn)** – पशुओं के आपस में लड़ने, धक्का लगने, गिरने से पशुओं के सींग टूट जाते हैं या उनके ऊपर का अस्थि भाग ( खोली) निकल जाती है। सींग टूट जाने पर काफी खून बहने लगता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) यदि सींग बिना टूटे हुए उसका ऊपरी भाग निकल जाय तो निकले हुए भाग को उसके स्थान पर बैठाकर पट्टी बांध देना चाहिए।

(ii) यदि सींग से खून बह रहा हो तो उसे साफ रूई से सफाई कर उस पर टिंचर बेंन्जोइन लगा देना चाहिए तथा साफ कपड़े या पट्टी को टिंचर बेन्जीन में भिगोकर घाव के ऊपर रखकर साफ कपड़े से पट्टी बॉध देना चाहिए, सींग पर पानी नहीं पड़ना चाहिए। यदि पट्टी कुछ दिनों में सूख जाती है तो उसे खोलें नहीं। एक डेढ़ माह बाद घाव स्वतः ठीक हो जाता है तथा पट्टी ढीली होकर आसानी से निकल आती है। यदि घाव पर पट्टी सूखती नहीं है तो उसे धीरे–धीरे तेल में भिगोते हुए खोलकर पुनः घाव साफ करें तथा घाव की दवा (ड्रेसिंग आयल) प्रतिदिन लगायें तथा पशुचिकित्सक की सलाह लें।

9. ऑख के रोग –

1. ऑख में चोट लगाना **(Wound of Eyes)**
2. ऑख से पानी आना **(Epiphora)**
3. ऑख की लाली **(Conjunctivitis)**
4. ऑख की सफेदी या माड़ा **(Opecity)**

उपरोक्त बीमारियों में रोग का उपचार इस प्रकार करें–

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) चोट लगने पर तथा पानी आने पर बोरिक एसिड एक भाग और विशुद्ध जल 100 भाग मिलाकर ऑख को धोए तथा ऑख पर मलहम लगायें।

(ii) ऑख की लाली में सिल्वर नाइट्रेट का 2 % घोल, 2 से 4 बूंद दिन में 3 बार डालें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(iii) ऑख की सफेदी में बोरिक एसिड और केलोमल बराबर लेकर चुटकी से 2–3 बार ऑख में डालें।

(iv) ऑख का मलहम जैसे सिप्रोफ्लोक्सासिन आयन्टमेंन्ट लगायें। ऑख की ड्राप्स सिप्रोफ्लोक्सासिन आई ड्राप्स ऑख में डालना चाहिए। एलर्जी रोगों में – बेटनीसोल आई ड्राप्स, डेकाड्रॉन आई ड्राप्स, डेक्साकेन आई ड्राप्स तथा डेक्सोना आई ड्राप्स में से कोई भी एक ड्राप का प्रयोग करना चाहिए।

10. कान का बहना (**Otorrhoea**) – पशुओं के कान के भीतर किसी पदार्थ के चले जाने या कान में चोट लगने से कान में घाव हो जाने से कान बहते हैं, जिसमें पीव निकलता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) कान की सफाई पौटेशियम परमेंगनेट (1 : 1000) सोल्यूशन से करना चाहिए।

(ii) हाइड्रोजन – पर – आक्साइड से साफ कर रूई से पोंछकर कान की कोई दवा चिकित्सक की सलाह पर डालना चाहिए।

(iii) कान की दवा – ओटीना ईयर ड्राप, सिप्रोफ्लोक्सासिन ईयर ड्राप कान में डालें।

(iv) एलर्जी में– वेटनेसोल ईयर ड्राप, सोफ्राकोर्ट ईयर ड्राप आदि में से किसी एक दवा का प्रयोग करें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय 6

# असंक्रमक रोग

# (Non-Infectious Diseases)

1. कलुषित भूख (**Pica**) – यह बीमारी पशुओं में साधारणतः होती है। इस बीमारी में पशु खाद्य पदार्थ के अलावा अन्य चीजों को खाना पसन्द करते हैं जैसे – मिट्टी, ईंट, मल–मूत्र, कागज़, कपड़े आदि। पशु दीवार तथा अपने तथा दूसरे पशु के मूत्र को चाटते हैं।

   कारण (**Etiology**) – इसका कारण पथ्य की गड़बड़ी, मिनरल्स की कमी तथा खाने में नमक की कमी के कारण होती है।

   प्राथमिक पशु चिकित्सा –

   (i) खाने में रोज पशुओं को 50–60 ग्राम नमक मिलाकर देना चाहिए।

   (ii) चिरैता चूर्ण 15 ग्राम, सौठ चूर्ण 8 ग्राम, कुटकी चूर्ण 15 ग्राम, कुचला चूर्ण 3 ग्राम, हीरा कसीस 3 ग्राम, सबको मिलाकर गुड़ के साथ एक खुराक बनाकर दिन में दो बार देना चाहिए।

   (iii) हिमालय बतीसा 25 ग्राम सुबह–शाम।

   (iv) पूर्ति, बोविरम या रयूमन बोलस 2–2 गोली सुबह–शाम खिलावें।

   (v) पशु को आहार के साथ खनिज लवण मिश्रण (Fertimix) 50 ग्राम प्रतिदिन देवें।

2. अफारा या पेट फूलना (**Tympanitis**) – जुगाली करने वाले पशु द्वारा बहुतायत में चारा (स्टार्ची हरा चारा जो ओस या वर्षा से भीगा हो) अथवा दूषित चारा–दाना खा लेने से रूमैन गैस से भरकर फूल जाता है।

   लक्षण –

   (i) इसमें जुगाली बन्द हो जाती है।

   (ii) पशु की बायीं कोख (Left Flank) अधिक गैस व चारे के कारण फूलकर ड्रम के आकार की हो जाती है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(iii) अत्यन्त बेचैनी तथा सॉस लेने में बहुत कष्ट होता है।

(iv) पेशाब तथा पाखाना जल्दी–जल्दी होता है।

(v) पशु बार–बार उठता बैठता है तथा पशु को बुखार भी हो जाता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) पशु को प्रारम्भिक अवस्था मे इधर–उधर टहलना चाहिए।

(ii) पशु की बांयी कोख से ट्रोकार–कैन्युला अथवा मोटी सुई सी मद्द से जितनी जल्दी हो सके गैस को बाहर निकालें।

(iii) तारपीन का तेल 50 मि0ली0 और अलसी का तेल 500 मि0ली0 मिलाकर पिलाना चाहिए।

(iv) 50 मि0ली0 तारपीन का तेल सीधे सुई द्वारा रयूमन में डाल दें।

(v) पूर्ति, रयूमन बोलस आदि की 2 गोली तथा H.B. स्ट्रांग 10 ग्राम या रूचामैक्स 10 ग्राम मिलाकर खिलाएं।

3. पेचिस या ऑव या शूल (**Dysentery**) –

लक्षण –

(i) दस्त पतला, खून तथा म्यूकस मिला हुआ लसीला होता है।

(ii) दस्त से दुर्गन्ध आती है।

(iii) पखाना करते समय दर्द और मरोड़ होती है।

(iv) बुखार आता है तथा पशु सुस्त पड़ जाता है।

(v) यदि स्थिति गम्भीर हुई तो जलाभाव और रक्त हीनता के कारण पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) यदि दस्त मामूली या भोजन की गड़बड़ी से हो तो अलसी का तेल बड़े पशुओं को आधा किलो, छोटे पशुओं को 50–100 ग्राम पिलाना चाहिए। उसके कुछ घन्टे के बाद खड़िया मिट्टी 25 ग्राम, केवलिन 25 ग्राम और सोंठ 10 ग्राम मिलाकर चावल के मांड के साथ पिलाना चाहिए।

(ii) अफीम 2 ग्राम और कत्था 10–30 ग्राम मिलाकर चावल के मांड के साथ पिलाना चाहिए। छोटे पशुओं को इसकी आधी मात्रा देनी चाहिए तथा पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

4. पाण्डु रोग ( कमाला) (**Jaundice**) या पीलिया –

लक्षण –

(i) म्यूकस मेम्ब्रेन तथा त्वचा पीली दिखाई देती है।

(ii) मूत्र का रंग पीला तथा मल का रंग पीला या स्लैटी रंग का हो जाता है।

(iii) पशु को प्यास अधिक लगती है, भूख नहीं लगती, अपच या अतिसार हो जाता है।

(iv) रोग की अति उग्र अवस्था के कारण मस्तिष्क दुर्बल हो जाता है, शरीर में रक्त की कमी हो जाती है तथा पशु मर जाता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) यह रोग विभिन्न कारणों से हो सकता है जैसे– परजीवी– लीवर फ्लूक्स आदि या पित्तनली के बहाव में अवरोध, पित्ताशय की पथरी, रक्त कोशिकाओं के नष्ट होने से आदि। अतः इसके लक्षण देखते ही चिकित्सक की सलाह लेनी यथोचित है क्योंकि रोग की उत्पत्ति से सम्भावित कारणों के अनुसार रोग की चिकित्सा की जाती है। पशुओं को तब तक पूर्ण आराम दें।

5. सर्दी–खॉसी या कफ–जुकाम (**Cold Cough**) – इस रोग में सम्पूर्ण सॉस नली ग्रसित होती है जिससे खॉसी हो जाती है और नाक से उजला–हरा पीला स्राव बहता है।

कारण– उत्तेजक पदार्थों, ठंड, सर्दी, हवा, धूल कण, धुऑ, गैस आदि बाह्य पदार्थो तथा जीवाणु, विषाणु, फफूँद तथा परजीवी इत्यादि के कारण यह रोग हो जाता है।

लक्षण –

(i) नाक से पानी चलना, बाद में गाढ़ा उजला हरा–पीला बहना।

(ii) ऑखों से पानी चलना, त्वचा तथा ऑख की झिल्ली लाल होना तथा खॉसी, कफ इत्यादि ।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) तारपीन का तेल या येकेलिप्टस तेल या टिंचर बेन्जीन, कोई एक 30 मि0ली0 को उबलते पानी की बाल्टी में डालकर पशु के मुँह के निकट रखते हैं ताकि गर्म पानी की भाप पशु के नाक मुँह में जाय।

(ii) विक्स बेपोरब या रूवेक्स नाक में लगाया जा सकता है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(iii) बड़े पशुओं को निम्न दवा बनाकर दें–

अमोनियम कार्बोनेट 10 ग्राम

पोटेशियम क्लोरेट 10 ग्राम

सोंफ चूर्ण 30 ग्राम

गुड़ का छोआ जरूरत भर, की चटनी बनाकर सुबह–शाम चटायें।

(iv) पशु को सुई द्वारा एन्टीबायोटिक औषधि, ज्वर हारी औषधि तथा एन्टी एलर्जी औषधियॉ 3 से 5 दिवस तक दें।

(v) मनुष्यों की खॉसी की कोई एक दवा का प्रयोग किया जा सकता है जैसे– बेनाड्रील, ग्लाइकोडीन, कोरेक्स, फेन्सडिल आदि 1–2 चाय चम्मच दिन में 2–3 बार पिलाएं।

6. दुग्ध ज्वर (**Milk Fever**) – यह रोग अधिक दूध देने वाले पशुओं में होता है, इस रोग से प्रसव के तुरन्त बाद पशु मूर्छित भी हो जाता है, पिछले अंगों को लकवा भी मार सकता है।

कारण– यह रोग प्रायः रक्त में कैल्शियम की कमी, थकान अथवा उत्तेजना से होता है।

लक्षण –

(i) रोग का आरम्भ प्रभाव प्रसव के 12 से 72 घन्टे के अन्दर दिखाई देता हैं।

(ii) पशु का उत्तेजित होना, पूँछ ऐंठना, कॉपना, लड़खड़ाना, बेहोश होना तथा चारा–दाना छोड़ना।

(iii) सिर को मोड़कर छाती पर रखना या आगे की ओर खींच कर भूमि पर रख देना।

(iv) तापमान सामान्य से कम होना, कान झुक जाना तथा पेशाब बन्द होना।

(v) यदि उपचार न किया गया तो रोग के कारण चार–पॉच दिनों में पशु की मृत्यु हो जाती है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

(i) पशु को जुगलर शिरा द्वारा कैल्शियम बोरो ग्लूकोनेट की बोतल जैसे– माइफेन्स, कैलबोरोल आदि में 2 मि0ली0 डैक्सामियाजोन का इन्जेक्शन मिलाकर धीरे–धीरे चढ़ावें।

(ii) पशु को विटामिन बी काम्पलैक्स का टीका देवें।

(iii) यदि पशु को गर्भावस्था में मुँह द्वारा कैल्शियम सप्लैशन तथा खनिज लवण पाउडर देते रहें तो इस रोग से बचाया जा सकता है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

7. जेर का रूकना (**Retention of Placenta**) –

कारण– साधारणतः गाय–भैंस में प्रसव के बाद 6–8 घन्टे के अन्दर जेर को बाहर निकल आना चाहिए। यदि इतने समय तक जेर न निकले तो इसका शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

लक्षण –

(i) गर्भाशय से दुर्गन्ध भरा स्राव आने लगता है।

(ii) ज्वर हो जाता है तथा दूध कम हो जाता है।

(iii) पशु चारा दाना, खाना कम कर देता है तथा बेचैन रहता है।

(iv) किन्हीं विशेष हालत में जेर का भाग योनि से बाहर लटकता दिखाई पड़ता है किन्तु कुछ अवस्था में यह बाहर लटकता नहीं दिखाई देता है।

चिकित्सा–

(1) 500 एम0एल0 यू–केयर में 250 एम0एल0 देशी शराब मिला कर पशु को पिला दें तथा बाहर निकलती हुई जेर में कोई हल्की वज़नदार वस्तु बाँधकर लटका दें। 95% पशुओं की जेर बाहर आ जाती है तथा हाथ डालने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

(2) यदि जेर किसी कारण से न निकल पाए तो अपने हाथ पर प्लास्टिक का दस्ताना पहनकर कोई चिकना पदार्थ अथवा साबुन लगाकर धीरे से पशु की योनि में डालें तथा जेर के काटिलीडन (गांठें) को धीरे–धीरे गर्भाशय के काटिलीडन से अलग करते जाएं तथा जेर को बाहर निकाल लें।

(3) गर्भाशय में कोई एन्टीबायोटिक औषधि जैसे क्यूरिया बोलस, लिक्सन– IU या यूरोब्लेक्स बोलस– 3 से 5 दिन तक डालें।

(4) पशु को सुई द्वारा एन्टीबायोटिक औषधि तथा पीड़ाहारी औषधियॉ 3–5 दिन तक दें।

(5) पशु को मुख से यू–केयर 125 एम0एल0 सुबह व शाम गुनगुने पानी में मिलाकर पिलावें।

8. योनि और गर्भाशय का बाहर निकलना (**Prolapse of Vagina and Uterus**) –

कारण– पशुओं में कभी–कभी योनि या कभी योनि तथा गर्भाशय दोनों से ही प्रसव के बाद या पहले कैल्शियम की कमी अथवा कमजोर पशु में, अथवा भ्रूण या जेर को गलत तरीके से बाहर निकालने के कारण यह बीमारी होती है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

लक्षण –

(i) योनि बाहर की ओर निकल आती है तथा लाल दिखाई देती है।

(ii) यदि गर्भाशय भी बाहर निकला है जो निकला हुआ भाग अधिक होता है तथा गोल–गोल कई गॉठें दिखाई पड़ती हैं।

(iii) हवा लगने के बाद बाहर निकला गर्भाशय सूजकर कठोर हो जाता है अतः ऐसी स्थिति में उसके फटने का डर रहता है अतः तुरन्त गर्भाशय को अन्दर चढ़ाने का उपाय करना चाहिए।

चिकित्सा –

(1) सर्वप्रथम बाहर निकले गर्भाशय मे हाथ की मद्द से मूत्राशय का रास्ता खोल दें जिससे सम्पूर्ण मूत्र बाहर निकल जाएं।

(2) एक साफ लम्बा कपड़ा बाहर निकले गर्भाशय के नीचे बिछा दें।

(3) एक बाल्टी में बर्फ का ठंडा पानी लेकर उसमें लाल दवा (पोटेशियम परमैगनेट) अथवा फिटकरी का 1 : 100 का घोल बनाकर उससे अच्छी तरह गर्भाशय को धो दें।

(4) पारथीनियम घास (कांग्रेस घास) की लगभग 1 ½ किलो ग्राम पत्तियां (साथ में फूल न हों) धोकर पीस लें तथा पिसी पत्तियों को बारीक साफ कपड़े में बॉधकर एक बर्तन में निचोड़ लें। निचोड़े हुए पानी की गाद जब बर्तन की तली में बैठ जाए तो ऊपर का पानी निथार लें तथा इस पानी को बाहर निकले गर्भाशय पर छिड़कना शुरू कर दें। धीरे–धीरे गर्भाशय सिकुड़ने लगेगा। एक नई डिस्पोजेबल सिरिंज मे 5 एम0एल0 जाइलोकेन का इन्जेक्शन ले लें। पशु की पूँछ को पकड़कर ऊपर नीचे हिलाएं तथा पूँछ के जोड़ पर मेरूदण्ड से जुड़े स्थान पर एक गड्ढा महसूस होगा। उस स्थान को अच्छी तरह स्प्रिट से साफ कर लें तथा सिरिंज पर लगी सुई को लम्बवत उस गड्ढे में लगभग ½ सेंटीमीटर सीधा घुसा कर पूरी 5 एम0एल0 जाइलोकेन छोड़ दें। इसके पश्चात् साफ हाथों से बन्द पंजे की मद्द से धीरे–धीरे पूरा गर्भाशय को अन्दर ढ़केल दें जब पूरा गर्भाशय अन्दर चला जाए तो पशु को छींका लगा दें । जिसे लगभग एक सप्ताह तक लगा रहने दें।

(5) पशु को प्रत्येक दिन 24 घन्टे मे एक बार ए0 आई0 शीथ के द्वारा एन्टीबायोटिक औषधि गर्भाशय में डालें तथा सुई द्वारा भी 3–5 दिन तक एन्टीबायोटिक तथा सूजनहारी औषधि दें।

(6) 3 एम0एल0 हाइड्रोक्सीप्रोजेस्ट्रान (750 मिली ग्राम) का एक टीका पशुओं को लगा दें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(7) पशु को भरपेट चारा लगभग एक सप्ताह तक न दें। बरसीम व रिजिका खिलाना बन्द कर दें।

(8) पशु को ढ़ालदार प्लेटफॉर्म बनाकर अगला हिस्सा नीचे तथा पिछला हिस्सा ऊपर रखें।

9. हाइपोफोस्फटीमिया **(Hypo Phosphatemia)** –

यह रोग सामान्यतः संकर नस्ल की गायों में होता है। इस रोग का मुख्य कारण पशुओं में फास्फोरस नामक खनिज की कमी होना होता है।

लक्षण –

तापमान सामान्य, चारा कम खाना, दूध घट जाना, पेशाब का रंग हल्का भूरा अथवा कॉफी के रंग का होना।

चिकित्सा –

(1) पशु को 10 एम0एल0 टोनोफास्फेन का टीका 3–5 दिन तक दें।

(2) 20–30 माचिस की तीली लेकर उनका मसाला छूटा कर मसाले को आटे या गुड़ में मिलाकर पशु को 3–5 दिन तक दें।

(3) कोई अच्छा खनिज लवण मिश्रण जैसे फर्टीमिक्स, एनमिन फोर्ट, एग्रीमिन फोर्ट आदि पशु को 50 ग्राम प्रतिदिन दें।

10. कब्ज या बन्द लगना (**Constipation**) – प्रायः पशु द्वारा अधिक सूखा चारा खाने से तथा कम पानी पीने से कब्ज हो जाता है जोकि कुछ समय बाद गम्भीर प्रकृति का होकर बन्द में परिवर्तित हो जाता है।

लक्षण–

शुरू–शुरू में पशु सूखा, गॉठदार कम गोबर करता है जिसमें कभी–कभी ऑव भी आती है। इसके पश्चात् गोबर बिल्कुल बन्द हो जाता है, जिसके कारण पशु खाना पीना बन्द कर देता है और व्याकुल रहता है।

चिकित्सा –

(1) अन्डी का तेल ½ – 1 ली0, सौंफ पिसी 25–50 ग्राम मिलाकर नाल से पशु को धीरे–धीरे पिला दें तथा लगभग आधा धन्टा बाद पशु को शिरा द्वारा कैल्शियम की बोतल चढ़ा दें कुछ ही घन्टों में पशु को खुलकर दस्त आ जायेंगें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(2) कब्ज होने की दशा में यदि पशु बकरी की तरह लेंडी जैसा गोबर करता है तो होम्योपैथी की दवा नक्सवोमिका 200 एक–एक एम0एल0 दिन में तीन बार पशु की जुबान पर डालें।

(3) पशु को प्रतिदिन दो बार 100–200 ग्राम मैगसल्फ, 10–15 ग्राम रूचामैक्स या एच0वी0 स्ट्रॉग पाउडर तथा दो बोलस पूर्ति या वोवीरम या रूमन तीन से पॉच दिन तक दें।

11. ब्याने अथवा बच्चा गिराने के बाद दूध न देना – कभी–कभी पशु ठीक प्रकार से ब्याने के बाद भी दूध नहीं देते तथा कभी–कभी सातवें, आठवें या नौवे माह में बच्चा गिरा देने के बाद बिल्कुल दूध नहीं देते हैं।

चिकित्सा –

(1) 1 एम0एल0 ऑक्सीटासिन तथा 1 एम0एल0 डाइएथाइल स्टिल वेस्ट्राल मिलाकर पशु की त्वचा के नीचे साफ सुई से सुबह व शाम पॉच दिन तक लगायें।

(2) 250 ग्राम जीरा तथा 250 ग्राम सतावर मिलाकर कूट लें तथा इसमें से 50 ग्राम प्रति दिन पशु को खिलाएं।

(3) कैल्शियम का टीका (कैल्विट–12) 20–30 एम0एल0 प्रतिदिन सुई द्वारा मॉस में लगायें।

(4) 100 ग्राम गुड़ + 100ग्राम सरसों का तेल + 50 ग्राम पिसी सौंफ एक लीटर गुनगुने दूध में मिलाकर पशु को लगभग दस दिन तक पिलायें।

(5) पशु को कोई अच्छा खनिज लवण मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें।

12. दूध चढ़ा लेना (ना पँवासना) – कभी–कभी बहुत से पशु लम्बे समय तक थनों को सहलाने के बावजूद दूध नहीं उतारते अथवा थोड़ा सा दूध देने के बाद बाकी दूध चढ़ा लेते है जिसके कारण पशु पालक को ऑक्सीटोसिन का टीका लगाकर दूध निकालना पड़ता है जिसका कुप्रभाव पशु तथा मनुष्य दोनों के स्वभाव पर पड़ता है।

चिकित्सा –

(1) पशु को ब्याने के बाद दूध–पँवास नामक औषधि की 40 गोली का एक पूरा कोर्स खिलावें।

(2) पशु को खनिज लवण मिश्रण 50 ग्राम/ प्रतिदिन खिलावें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय 7

# संक्रमक रोग या संसर्गी रोग

# (Infectious or Contagious Diseases)

## जीवाणु रोग **(Bacterial Diseases)** –

1. गलाघोंटू (एच0एस0) (**Haemorrhagic Septicaemia**) – यह गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरी आदि पशुओं में बरसात तथा बरसात के बाद वाले मौसम में होती है। इस रोग का जीवाणु ग्राम नेगेटिव जीवाणु पास्चुरैल्ला मल्टोसिडा है।

   लक्षण –

   1. पशु को तेज बुखार $105^0$F से $107^0$F तक आता है।
   2. ऑखें लाल हो जाती हैं तथा गले में सूजन आ जाती है।
   3. जीभ बाहर निकल जाती है तथा सांस लेने में कठिनाई होती है। गले से घरड़–घरड़ की आवाज आती है।
   4. ऑख से आंसू निकलते हैं।
   5. पशु के दम घुटने से पशु की 12–36 घन्टे में मृत्यु हो जाती है।

   प्राथमिक पशु चिकित्सा –

   (1) इस रोग की कोई प्राथमिक पशु चिकित्सा नहीं है। रोग होने पर पशु चिकित्सक को तुरन्त दिखाना चाहिएं

   (2) रोग होने से पूर्व इस रोग का टीका सभी पशुओं को लगा देना चाहिए। (बरसात शुरू होने से पहले) तथा संक्रमक रोगों के रोकथाम के सभी उपाय करने चाहिए।

   (3) सर्वप्रथम पशु को हवादार स्थान पर रखें ।

   (4) पशु को सल्फाडाइमेडिन 100–150 एम0एल0 शिरा में चढ़ायें अथवा कोई अच्छा एन्टीबायोटिक मॉस में लगाऐं।

   (5) सूजनहारी औषधि का टीका जैसे– वेटालॉग मांस में लगाऐं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(6) ज्वरहारी औषधि का टीका लगायें।

(7) 1 ली0 पानी लेकर खूब गर्म करके उसके अन्दर 15 मि0ली0 टिंचर बेंजोंइट अथवा तारपीन का तेल डालकर पशु को उसकी भाप सुघॉयें।

2. एन्थेक्स (**Anthrax**) – यह छूत वाली खून की बीमारी है। इसमें पशु अचानक बीमार पड़ता है। यह रोग किसी भी मौसम में गाय, बैल, भेड़, बकरी, कुत्ता, बिल्ली एवं मनुष्य में हो सकता है। इस रोग का कारण ग्राम पोजिटिव जीवाणु बेसिलस एन्थ्रेसिस है। इस रोग में पशु की प्लीहा बढ़ जाती है अतः इसे प्लीहा रोग भी कहते हैं।

लक्षण –

इस रोग के लक्षण तीन रूपों में पाये जाते हैं–

1. अति तीव्र रूप (Per acute)
2. तीव्र रूप (Acute)
3. मन्द रूप (Sub acute)

अति तीव्र रूप– यह रोग बहुत जल्दी होता है तथा पशु तुरन्त मर जाता है। मुॅह, नाक तथा मलद्वार से खून निकलता है अन्य लक्षण दिखाई देने का मौका नहीं मिलता है।

तीव्र रूप – पशु को तेज बुखार 106–107 $^0$F तक आता है। नाड़ी तेज चलती है, ऑखें उभरी लाल, पेशाब बन्द हो जाता है। पशु के प्राकृतिक छिद्रों मुॅह, गुदा, योनि से रक्त स्राव होता है तथा रक्त का रंग काला होता है। पशु का दम घुटता एवं पेट दर्द होने के लक्षण दिखाई देते हैं।

मन्द रूप – इस रूप में तीव्र रूप के सभी लक्षण दिखाई पड़ते हैं। गर्दन, छाती, पेट ओर कोख की जगहों में सूजन हो जाती है यदि रोग भयंकर न हुआ तो पशु 2–4 दिनों तक जीवित रहता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

(1) इस रोग की कोई प्राथमिक पशु चिकित्सा नहीं है। केवल इसके बचाव के लिए रोग होने से पहले टीके लगाने चाहिए तथा संक्रमक रोगों की रोकथाम के सभी उपाय करने चाहिए।

(2) एथ्रेक्स रोग से मरे हुए पशु को या तो जला दें अथवा जमीन में गहरा गड्ढा खोदकर पशु की त्वचा पर चीरे लगाकर नमक के साथ दफना दें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

3. लगड़ा बुखार या जहरबाद (**Black Quarter-B.Q.**) – यह पशुओं की छूत की बीमारी है। इस रोग का कारण ग्राम पोजिटिव जीवाणु क्लोस्ट्रिडियम श्योवियाइ है। इसमें पशु को ज्वर होता है तथा पिछले अंग में सूजन हो जाती है, जिससे पशु लंगडाने लगता है। यह अधिकतर जवान व तन्दरूस्त पशुओं को बरसात के दिनों में होता है। यह रोग गाय, भैंस, भेड़ और बकरियों को होता है। यह रोग सूक्ष्म जीवाणुओं द्वारा होता है जो चारा–दाने या त्वचा मे ंखरोच के साथ शरीर में प्रवेश करते हैं। इसका उदभवन काल 1–5 दिन होता है।

लक्षण –

1. पशु जुगाली बन्द कर देता है, तेज ज्वर आता है।
2. पिछले पैरों या जॉघों मे दर्द भरी सूजन हो जाती है जिससे पशु लंगड़ाने लगता है।
4. प्रारम्भिक अवस्था में सूजन गर्म, दबाने पर गड्ढ़ा होना अतिशीघ्र बढ़ना तथा उसमें गैस का भर जाना।
5. सूजन को हाथ से दबाने पर इसमें कड–कड या चर–चर की आवाज होती है और बालू जैसा अनुभव होता है।
6. इसके बाद सूजन ठंडा, चेतनहीन तथा सूख जाता है। पशु 2–3 दिनों में मर जाता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

प्राथमिक पशु चिकित्सा सम्भव नहीं है। रोग के लक्षण देखते ही चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए। रोग होने से पूर्व ही वर्षा ऋतु के आने से पहले 6 माह से 2 वर्ष की आयु के पशुओं को पालीवेलेन्ट वैक्सीन का टीका सभी पशुओं को लगाना चाहिए।

चिकित्सा–

(1) पशु को अच्छे एन्टीबायोटिक का टीका लगायें।

(2) पशु को सूजनहारी व ज्वरहारी औषधियों का टीका लगायें।

(3) सूजन वाले भाग पर नये साफ ब्लेड से चीरा लगाकर उसमें नीम का तेल भर दें।

(4) अलसी का तेल 250 एम0एल0, पीसा हुआ गन्धक 125 ग्राम, पीसी सौंठ 20 ग्राम इन सब को आधा ली0 गर्म पानी मे मिलाकर पशु को पिला दें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

(5) रोग की शुरू की स्थिति में होम्योपैथिक औषधि हिपर सल्फ 1एम0 पोटेन्सी में 1–1 एम0एल0 दिन में दो बार पशु को दें। सूजन ठंडी हो जाने पर रसटाक्स 1 एम0 पोटेन्सी में 1–1 एम0एल0 पशु को पिलाएं।

4. बछड़ों के सफेद दस्त (**White Scour in Calves**) – यह गाय–भैंस के बछड़ों का रोग है तथा ग्राम नेगेटिव जीवाणु द्वारा होता है। यह स्पर्श करने से फैलने वाली बीमारी है। इस रोग के कीटाणु ऑतों में पाये जाते हैं। अनुकूल परिस्थितियॉ होने पर उग्र रूप धारण कर बछड़ों में बीमारी पैदा करते हैं। बछड़ों को खीस (कीला) न पिलाना इस बीमारी का मुख्य कारण है तथा मॉ के शरीर में विटामिन ए की कमी तथा बछड़ों को अधिक चिकनाई वाला दूध पिलाना भी इस रोग का कारण होता है।

लक्षण –

1. बछड़ा सुस्त हो जाता है तथा दूध पीना बन्द कर देता है
2. पतले बदबूदार दस्त हो जाते हैं, रंग उजला पीला होता है।
3. बछड़े का पिछला भाग पूँछ सहित गन्दा रहता है।
4. अत्यन्त कमजोरी के कारण बछड़े चलने–फिरने में असमर्थ हो जाते हैं तथा धीरे–धीरे मर जाते हैं।

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

1. बछड़े को दस्त रोधी दवाएं जैसे– कैटोरिया पाउडर नेवलोन पाउडर 10 ग्राम चावल के मांड के साथ सुबह शाम दें।
2. सल्फा गुवाडीन या टिनिडाजोल की एक बड़ी टिकिया दिने में तीन बार दी जा सकती है।
3. रोग की दशा ठीक न होने पर तुरन्त चिकित्सक से सलाह लेना चाहिए।

5. संक्रमक गर्भपात या ब्रुसेलोसिस या बैंग्स रोग (**Contagious Abortion or Brucellosis or Bangs Diseases**) –

यह दुधारू पशुओं की गर्भाशय के सूजन की बीमारी है जिससे गर्भ गिर जाता है। रोग ग्रसित पशु का दूध पीने से यह रोग मनुष्यों में भी हो जाता है जिसे अंडूलेन्ट ज्वर, माल्टा ज्वर तथा वैंग्स ज्वर के नाम से जाना जाता है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

कारण – यह रोग ब्रूसेला प्रजाति के ग्राम नेगेटिव जीवाणू ब्रुसेल्ला एवार्टस द्वारा होता है। यह रोगी पशु के दाना–पानी या गर्भपात के स्राव या गर्भ के संसर्ग ( जैसे नर पशु द्वारा मादा को सम्भोग के समय) से फैलता है।

लक्षण –

1. गर्भपात प्रायः गर्भावस्था के पॉच से आठवें माह में होता है।
2. योनि से दुर्गन्ध भरा, रक्त भरा स्राव बहने लगता है।
3. बच्चा देने के अन्य लक्षण दिखाई पड़ते हैं पशु बेचैन हो जाता है।
4. गर्भपात के बाद जेर प्रायः अन्दर ही रह जाती है। जेर निकालने पर उसमें पीली धारियां पायी जाती हैं।
5. रोगी पशु एक, दो या तीन गर्भपात के बाद सामान्य रूप से बच्चा देने लगता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

1. इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है गर्भपात के बाद चिकित्सक की सलाह से एन्टीबायोटिक दवाओं की मांस में प्रतिदिन सुई लगायें। रोकथाम के लिए ब्रुसेला स्ट्रेन वैक्सीन 6 से 18 माह की बछियों को 5 एम0एल0 त्वचा मे सुई से दें।
2. गर्भपात होने के बाद यदि पशु की जेर निकालनी पड़े, तो हमेशा दस्ताना पहनकर ही जेर निकालें।
3. पशु के गर्भाशय में एन्टीबायोटिक औषधि 3–5 दिन तक डालें तथा टीका द्वारा भी दें।
4. पशु को अगली दो गर्मी मे आने पर ग्याभिन न करायें तथा गर्भाशय में दो दिन एन्टीबायोटिक डालकर छोड़ दें तथा तीसरी बार पशु के गर्मी पर आने पर उसे ग्याभिन करायें।

6. विब्रिओसिस (**Vibriosis**) –

यह रोग गाय भैंसों में पाया जाता है तथा सम्भोग से अथवा कृत्रिम वीर्यदान के समय दूषित उपकरणों से यह फैलता है। यह रोग ग्राम नेगेटिव जीवाणू विब्रियो फीटस द्वारा होता है।

लक्षण –

1. इस बीमारी में गर्भधारण के चार माह बाद गर्भपात होता है।
2. सामान्यतया गर्भपात के समय जेर बाहर आ जाती है।
3. यदि इलाज न किया गया तो मादा पशुओं में गर्भपात होता रहता है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

1. इस रोग की कोई प्राथमिक चिकित्सा नहीं है। मादा पशुओं को स्वच्छ कृत्रिम वीर्यदान कराना ही इसकी रोकथाम है।
2. चिकित्सक की निगरानी मे यदि गर्भाशय का मुॅह खुला हो जो एन्टीबायोटिक दवा गर्भाशय में छोड़नी चाहिए अथवा जब पशु गर्मी में आ जाए जो एन्टीबायोटिक दवाओं को गर्भाशय में छोड़ना चाहिए।

7. थनैला या स्तन शोध (**Mastitis**) –

मुख्य रूप से यह बीमारी गाय, भैंस एवं बकरी में होती है। अयन में दर्द भरी सूजन हो जाती है, यह रोग अधिक दूध देने वाले पशुओं में ज्यादा पाया जाता है। यह बीमारी विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं द्वारा फैलती है ये जीवाणु ग्राम पोजिटिव तथा ग्राम नेगेटिव दोनों प्रकार के होते हैं। ये जीवाणु थनों द्वारा पशुओं के अयन में प्रवेश करते हैं। अयन में घाव होने, गन्दे अयन, खराब तरीके से दुहना एवं नमी युक्त गीली जमीन पर पशु को बॉधने आदि इस के कारण हो सकते हैं।

लक्षण–

(1) अयन पर पीड़ा दायक सूजन होती है।

(2) अयन गरम या कड़ा हो जाता है।

(3) दूध पतला, छिछड़े दार, खूनी अथवा गाड़ा पीला होता है।

(4) पशु को ज्वर आ जाता है तथा खाना–पीना छोड़ देता है।

(5) धीरे–धीरे दूध सूख जाता ह, रोग अधिक होने पर पशु दूध देना बन्द कर देता है।

(6) रोग का बहुत दिनों तक इलाज न करने से फाईब्रोसिस हो जाती है जिसका कोई इलाज नहीं है।

चिकित्सा–

1. सर्वप्रथम पशु के अयन तथा थनों की बर्फ से सिकाई करें।
2. थन को अच्छी तरह साफ करके उसमे इन्ट्रामेमेरी ट्यूब जैसे– पेन्डिसट्रिन– एस0एच0, मेमल अथवा मेस्टिजेड सुबह–शाम चढ़ायें।
3. पशु को अच्छा एन्टीबायोटिक तथा सूजनहारी औषधियों का टीका 3–5 दिन तक लगाएं।
4. अयन में गॉठ (फाइब्रोसिस) पड़ जाने पर पशु को टीटासूल फाइब्रोकिट नामक औषधि लगभग एक माह तक दें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

8. फेफड़े का ज्वर/ निमोनिया (**Contegeous Bovine Pleuro Pneumonia**) –

यह रोग अत्यन्त भयंकर व जानलेवा होता है जोकि बोवीमाइसिज प्लूरो निमोनिया नामक जीवाणु से होता है । इस रोग का फैलाव अन्य पशुओं में सांस द्वारा अथवा नाक तथा मुँह से निकलने वाले स्राव के द्वारा होता है।

लक्षण –

1. नाक से पानी बहना
2. चारा न खाना
3. कब्ज हो जाना
4. खॉसने लगना
5. बुखार हो जाना
6. सांस लेने में परेशानी होना तथा एक से दो सप्ताह में पशु की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा –

1. सर्वप्रथम पशु को लीमासोल–75 का 10 एम0एल0 का एक टीका त्वचा के नीचे लगाएं।
2. पशु को अच्छा एन्टीबायोटिक तथा एन्टीएलर्जिक का टीका सुबह–शाम लगाएं।
3. पशु को टिंचर बेंन्जोइन अथवा तारपीन के तेल का वफारा सुघांए।
4. 100 एम0एल0 तिल का तेल + 10 एम0एल0 तारपीन का तेल + 5 ग्राम कपूर मिलाकर इस तेल की मालिश करें तथा 5–10 एम0एल0 प्रतिदिन पिलाएं।
5. 5 ग्राम कपूर + 10 ग्राम नौशादर + 20 ग्राम कलमीशोरा + 20 ग्राम मुलैठी तथा 50 ग्राम अलसी को पीसकर 250 ग्राम शीरे में मिलाकर चटनी बना लें तथा इस चटनी को 50 ग्राम सुबह 50 ग्राम शाम को पशु को चटायें।

9. टिटनेस या घनुष्टकार (**Tetnus**) –

यह पशुओं तथा मनुष्यों की बीमारी है जिसमें शरीर के एच्छिक मांस पेशियों में अकड़ तथा ऐंठन होती है। इस रोग के जीवाणु ग्राम नेगेटिव जीवाणु क्लासट्रीडियम टिटेनाई हैं। ये वायुमण्डल मे पाये जाते हैं तथा किसी घाव या खरोंच के द्वारा शरीर में प्रवेश करते हैं इसका विष स्नायु संस्थान पर प्रभाव डालता है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

लक्षण –

1. यह रोग सिर या पिछले अंगों की अकड़ और ऐंठन से शुरू होता है।
2. मुँह से लार टपकती है, कान कड़े व खड़े हो जाते हैं।
3. शरीर के सभी भागों मे ऐंठन व अकड़न हो जाती है।
4. जबड़े अकड़ जाते हैं तथा होंठ लटक जाते हैं, जिससे दांत दिखाई देने लगते हैं।
5. सारा शरीर लकड़ी या काठ सा मालूम पड़ता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

1. पशु को आराम दें तथा शान्त रखें।
2. तरल तथा आसानी से पचने वाला भोजन दिया जाए।
3. पीने को ठन्डा पानी काफी मात्रा में दें।
4. शरीर में घाव को अच्छी प्रकार से साफ करक कार्बोलिक घोल या टिंचर आयोडीन लगाएं।
5. किसी चोट में कट–फट जाने पर ए0टी0एस0 की सुई दें।

डॉक्टरी चिकित्सा –

1. अकड़न को दूर करने के लिए पेशिया शान्तिप्रद औषधि जैसे– क्लोरल हाइड्रेट 30 ग्राम अलसी का तेल आधा किलो में मिलाकर पिलायें।
2. लार्जोकिल 5 % का 10 मि0ली0 मांस में सुई दें।
3. ट्यूवरीन 10–15 मि0ग्राम शिरा में सुई देना चाहिए।
4. एन्टीबायोटिक दवाओं की 2–3 बार दिन में सुई देना चाहिए।
5. विटामिन बी–काम्पलेक्स 10 मि0ली0 मांस में सुई से देना चाहिए।

10. क्षय रोग या तपेदिक (**Tuberculosis / T.B.**) – यह मनुष्यों तथा पशुओं की पुरानी छूत की बीमारी है जिसमें गॉठों और ग्रन्थियों का विकास होता है, जो फोड़े का रूप बन जाता है। इसका कारण माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक ग्राम नेगेटिव जीवाणु है। यह रोग जीवाणुओं से दूषित भोजन और पानी या श्वॉस द्वारा या सीधे सम्पर्क से होता है।

लक्षण –

NOT FOR COMMERCIAL USE

पशुओं में इस रोग के लक्षण तीन प्रकारप के हो सकते हैं–

(1) फेफड़ों वाला (2) ऑतों वाला (3) स्तनीय रोग

1. फेफड़ों वाला रोग– इस स्थिति में फेफड़ा, फुफ्फुस और वक्ष की लसिका ग्रन्थि प्रभावित होती हैं। इस अवस्था के लक्षण रोग के पुराने होने पर दिखाई पड़ते हैं। पशु में खॉसी, जुकाम तथा सॉस लेने में आवाज होती है। शरीर का तापमान घटता–बढ़ता रहता है। शरीर की हड्डियां तथा पसलियॉ स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं। कभी–कभी नाक से खून भी निकलता है। बहुत दिनों के बाद पशु की मृत्यु हो जाती है।
2. ऑतों वाला रोग– इस रोग में ऑतें, यकृत, लिम्फ ग्रन्थियॉ, प्लीहा और अग्न्याशय प्रभावित होती हैं। पशु धीरे–धीरे दुर्बल होने लगता है, पाचन क्रिया बिगड़ जाती है पतले दस्त होने लगते हैं, पेट फूल जाता है।
3. स्तनीय रोग– इस अवस्था में बांया पिछला स्तन प्रभावित होता है इसमें गॉठेंदार एवं गोलाकार फैला हुआ सूजन होता है जो धीरे–धीरे बढ़ता है सूजन गर्म एवं दर्द युक्त नहीं होती है। खून के रंग में परिवर्तन आ जाता है। एक–आध हफ्ते के बाद दूध पतला पानी जैसा हो जाता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

इस रोग से ग्रसित पशु को पोषक तत्वों से युक्त भोजन देना चाहिए तथा रोग के लक्षण देखते ही चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

रोकथाम –

इसकी जॉच ट्यूबरक्युलीन टेस्ट द्वारा कर लेनी चाहिए। इस टेस्ट के लिए पशु की गर्दन के मध्य त्वचा के बाल काटकर स्प्रिट से साफ कर 0.1 मि0ली0 ट्यूबरक्यूलीन का टीका लगाया जाता है। यदि 24 घन्टे बाद लगाए गए स्थान पर सूजन आती है या बढ़ती है तो समझा जाता है कि पशु रोग ग्रस्त है। यदि सुई के स्थान पर कोई परिवर्तन नहीं होता तो पशु स्वस्थ माना जाता है। एक दिन के पश्चात् इन्जेक्शन दुबारा लगाकर निश्चित कर लिया जाता है। रोग ग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशु से अलग कर देना चाहिए तथा रोगी पशु के दूध का प्रयोग नहीं करना चाहिए तथा रोगी पशु के दूध का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पशुओं को स्वच्छ वातावरण में रखना चाहिए तथा सन्तुलित पशु आहार देना चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

## विषाणु रोग (**Viral Diseases**)

1. खुरपका – मुँहपका रोग (एफ0एम0डी0) (Foot and Mouth Disease) – यह विषाणुओं से फैलने वाला रोग है। इस रोग में पशुओं के मरने की संख्या बहुत कम रहती है परन्तु पशुओं में कार्य एवं दूध उत्पादन शक्ति कम हो जाती है। मुँह की झिल्ली में एवं खुरों के बीच में फफोले पड़ जाते हैं।

कारण– इस बीमारी का कारण विषाणु है जो आठ तरह का होता है, जब पशु एक विषाणु द्वारा उत्पन्न बीमारी से ठीक होता है तो दूसरे विषाणु से रोग ग्रस्त हो जाता है। इस प्रकार पशु लगभग 7–8 बार रोग ग्रस्त हो सकता है। यह रोग स्पर्श मात्र या वायु के सेवन से ही फैल जाता है। विषाणु पशु की लार, दूध, रक्त तथा फफोलों में पाये जाते हैं।

लक्षण –

1. विषाणु के पशु के शरीर में प्रविष्ट होने के 3–4 दिन बाद पशु को 104 $^0$F से 105 $^0$F तक तेज बुखार आता है।
2. भूख कम हो जाती है तथा दूध घट जाता है।
3. मुँह से धागे की तरह लार निकलती है।
4. मुँह की झिल्ली लाल और गर्म मालूम पड़ती है, दूसरे या तीसरे दिन मुँह के भीतरी भाग, तालू, जीभ एवं ओठ पर फफोले दिखाई पड़ते हैं, जो एक–दो दिन में फूट जाते हैं।
5. खुरों में यह रोग होने पर सूजन आ जाती है तथा दर्द होने लगता है, जिससे पशु लंगडाने लगता है। पशु खुर चाटने की कोशिश करता है। खुरों पर कभी–कभी घाव पड़ जाते हैं।
6. पशु दुर्बल हो जाता है। बछड़ों में ऑतों की सूजन के कारण मृत्यु हो जाती है। बड़े पशुओं में भूखा रहने से मृत्यु भी हो जाती है। गर्भित पशु इस बीमारी के कारण बच्चे गिरा देते हैं।

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

1. मुँह में छाले होने पर मुँह के छालों को पोटेशियम परमेंगनेट के घोल से (0.1%) धोना चाहिए तथा छालों पर बोरोग्लिसरीन लगाना चाहिए।
2. खुर से गन्दगी हटाकर तूतिया या फिनाइल के घोल में खुरों को धोना चाहिए तथा सफाई करने के बाद जिंक ऑक्साइड मलहम या लोरेक्सान क्रीम का प्रयोग करना चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

3. बुखाार उतारने के लिए मैग्नीशियम सल्फेट 60 ग्राम, कलमी शोरा 8 ग्राम पानी में मिलाकर दिन में दो बार पिलाना चाहिए।
4. पशु को मुलायम भोजन जैसे गेंहू का दलिया या नरम चारा खिलाना चाहिए।
5. नीम की पत्ती को गुनगुने पानी में ड़ालकर उसके रस से मुँह तथा खुर को धोने से लाभ होता है।
6. इस रोग का समय पर टीका लगाना चाहिए।

डॉक्टरी चिकित्सा –

इस रोग का कोई इलाज नहीं है परन्तु अन्य संक्रमण रोकने के लिए पशु को एन्टीबायोटिक औषधि तथा ज्वरहारी औषधि के टीके लगाएं।

रोकथाम –

संक्रमक रोगों के रोकथाम के सभी उपाय करने चाहिए तथा पशुओं को बीमारी के प्रकोप के समय घूमना–फिरना बन्द कर देना चाहिए। बछड़ों को इस बीमारी का पहला टीका एक माह से दो माह के बीच, दूसरा टीका बछड़े की चार माह की उम्र में, तीसरा टीका छः माह की अवधि में लगाना चाहिए।

घ्यान रहे एफ0एम0डी0 का टीका 2 सेण्टीग्रेड से 8 से सेन्टीग्रेड के तापमान पर ही रखना चाहिए। तापमान की बढोत्तरी होने पर यह टीका अपना असर नहीं कर सकेगा।

2. पोकनी या रिन्डर पेस्ट (**Rinder Pest**) – यह बीमारी बहुत खतरनाक है जो शीघ्र ही एक पशु से दूसरे पशु को लग जाती है यह गाय, भैंस आदि जुगाली करने वाले पशुओं में होती है।

इस रोग से पीड़ित ज्यादातर पशु मर जाते हैं। जो पशु बच जाते हैं उनकी कार्य एवं दुग्ध उत्पादन क्षमता बहुत कम हो जाती है। बाल रहित स्थानों और थन पर दाग पड़ जाते हैं।

कारण –

यह रोग एक प्रकार के विषाणु मोरबिली वाइरस से होता है और छूत वाली चीजों से दूसरे पशुओं को लग जाता है पशु में बीमारी का असर लगने के बाद तीन दिनों से लेकर सात दिनों में बीमारी के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

लक्षण –

1. पशुओं के $104\ ^0F$ से $107\ ^0F$ तक बुखार आता है।
2. शरीर सुस्त तथा बाल खड़े हो जाते हैं।
3. थर–थराहट के साथ ज्वर आता है।

NOT FOR COMMERCIAL USE

4. ऑखों की पुतलियॉ तथा नथुने फैल जाते हैं।
5. पशु को कब्ज हो जाती है, कमर झुक जाती है।
6. मुॅह के अन्दर झिल्ली तथा मसूड़ों पर छोटे–छोटे दाने निकल आते हैं, जो बड़े होकर छालों में बदल जाते हैं।
7. ऑतों के छाले गोबर के साथ छितड़े बनकर निकलते हैं। पशु के मुॅह से लार निकलती है।
8. बदबूदार दस्त होते हैं, खून आने लगता है।
9. इस प्रकार पशु की दो से छः दिनों के भीतर मृत्यु हो जाती है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

1. पशु को बुखार आने पर मैग्नीशियम सल्फेट 60 ग्राम, कलमी शोरा 8 ग्राम, पानी के साथ देना चाहिए।
2. पशु के कब्ज होने पर मैग्नीशियम सल्फेट 250 ग्राम, काला नमक 125 ग्राम, सोंठ 60 ग्राम आधा लीटर पानी में मिलाकर पिलाना चाहिए।
3. दस्त होने पर, दस्त रोधक औषधि – खड़िया 30 ग्राम, सोंठ 15 ग्राम, कत्था 15 ग्राम, केओलिन 15 ग्राम, चावल के माड़ के साथ पिलाना चाहिए।
4. नेवलॉन या कैटोरिया पाउडर पशु को 50 ग्राम, चावल के मांड़ के साथ पिलाना चाहिए।
5. लाल दवा के 0.1% घोल से छालों की धुलाई करनी चाहिए तथा मुॅह के छालों पर बोरो ग्लिसरीन लगाना चाहिए।

डॉक्टरी चिकित्सा –

इस रोग की कोई डॉक्टरी चिकित्सा नहीं है।

रोकथाम –

संक्रमक रोगों की रोकथाम के सभी उपाय करने चाहिए। निम्नलिखित में से कोई एक टीका लगाना चाहिए।

1. फ्रीज ड्राइड गोट टिस्यू आर0 पी0 वैक्सीन 2 एम0एल0 त्वचा के नीचे लगाएं – बचाव 14 वर्ष
2. टिश्यू कल्चर आर0 पी0 वैक्सीन मात्रा 1 एम0एल0 त्वचा के नीचे लगाएं – बचाव एक वर्ष।

NOT FOR COMMERCIAL USE

3. रेबीज़ पागल कुत्ते का काटना (**Rabies**) – यह एक खतरनाक बीमारी है जोकि कुत्ते, बिल्ली तथा मॉसाहारी पशुओं में रेब्डो वाइरस नामक विषाणु से होती है। अन्य पशुओं जैसे भैंस, गाय, बैल आदि को किसी रोगग्रस्त पागल पशु के काटने से हो जाती है।

कारण –

यह रोग पशुओं के लार में रहने वाले विषाणु द्वारा फैलता है। रोगी पशु द्वारा स्वस्थ पशु को काटने पर पशु की त्वचा, मॉस पेशियों एवं तंत्रिका में प्रवेश करते हैं। यह विषाणु अधिकांशतः मस्तिष्क एवं रीढ़ रज्जु में केन्द्रित होता है। दूसरे संक्रमक रोगों की तरह यह रोग नहीं फैलता है। रोग से पागल अथवा रोग ग्रस्त पशु के काटने के 14 से 90 दिन बाद इसके लक्षण दिखाई पड़ते हैं। मुँह या चेहरे पर काटने से यह अधिक खतरनाक होता है।

लक्षण–

गाय, भैंस तथा कुत्तों में इस रोग के लक्षण दो प्रकार के पाये जाते हैं–

(1) प्रचण्ड रूप (2) मौन रूप

1. प्रचण्ड रूप –

1. पशु का व्यवहार बदल जाता है तथा शीघ्र क्रोधित हो जाता है।
2. पशु पागल हो जाता है।
3. मुँह खुला रहता है तथा मुँह से रस्सी जैसे लार टपकती रहती है।
4. कब्ज हो जाती है तथा पेशाब गाढ़ी हो जाती है।
5. पशु चंचल, उत्तेजित, कर्कश आवाज एवं किसी को भी काटने की प्रबल इच्छा रखता है।
6. इधर–उधर भागता है तथा 2–4 दिनों में पशु की मृत्यु हो जाती है यदि पशु मरता नहीं है तो मौन रूप के लक्षण पैदा होते हैं।

2. मौन रूप –

1. पशु के चेहरे व गर्दन पर लकवा मार जाता है।
2. पशु के नीचे का ओंठ लटक जाता है।
3. पशु को काटने की शक्ति नहीं रहती है तथा काटने की इच्छा भी समाप्त हो जाती है।
4. धीरे–धीरे लकवा पूरे शरीर में फैल जाता है तथा पशु 3–6 दिनों में मर जाता है इस प्रकार किसी भी रूप में लक्षण दिखाई देने पर पशु 7 दिन के अन्दर मर जाते हैं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

1. यदि बीमारी से ग्रस्त पशु किसी स्वस्थ पशु का काट ले तो काटे हुए घाव को गर्म पानी से धोकर पोटेशियम परमैग्नेट के दाने घाव पर लगाने चाहिए।
2. चूने का 1% घोल विषाणु को मारने में सहायक होता है।
3. इसी प्रकार बोरिक एसिड 4 % घोल तथा कार्बोलिक एसिड भी विषाणुओं को मारता है।
4. काटने वाले पागल कुत्ते को 10 दिनों तक अलग रखकर उसकी जॉच करनी चाहिए कि कुत्ते को रैबीज़ की बीमारी जो नहीं है। काटे हुए पशु अथवा मनुष्यों को तुरन्त एन्टी रैबीज़ वैक्सीन का टीका 0,3,7,14,30,60 तथा 90वें दिन लगवाना चाहिए।
5. पागल पशु के द्वारा स्वस्थ पशु को काटे जाने के उपरान्त तुरन्त टीका लगाना चाहिए। टीके लक्षण प्रकट होने से पहले ही लगाये जाते हैं क्योंकि लक्षण प्रकट होने के बाद कोई भी इलाज सम्भव नहीं है।

4. चेचक या शीतला रोग (**Pox or Variola** ) –

   यह विषाणु जनित छूत की बीमारी है जो सभी पालतू पशुओं को होती है। इसमें पशुओं के बाल रहित भागों पर लाल रंग की फुन्सियां तथा काले –काले दाग पड़ जाते हैं।

   कारण–

   इस रोग का विषाणु और्थोपोक्स वाइरस है जो एक पशु से दूसरे पशु को छूत लगने से फैलता है। खासकर दूध दुहने वालों के हाथों से यह रोग फैलता है। यह मॉ के द्वारा पेट के बच्चे तक भी पहुॅच सकता है। यह बीमारी 3 से 7 दिन में प्रकट होती है।

   लक्षण–

1. पशु को हल्का बुखार आता है जिससे पशु सुस्त हो जाता है।
2. मादा पशु का अयन तथा नर पशु का अण्डकोष फूल जाता है।
3. बाल रहित स्थानों पर लाल रंग की फुन्सियां दिखाई पड़ती हैं, जिनमें पानी जैसा पदार्थ भरा रहता है जो बाद में फूटकर काले भूरे दाग सा दिखाई देता है।
4. कभी–कभी पशु को थनैला रोग हो जाता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

1. रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग कर देना चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

2. रोगी पशु को एक माह के अन्दर स्वतः ही छुटकारा मिल जाता है।
3. रोगग्रस्त भाग को लाल दवा घोल से धोकर कोई भी एन्टीसेप्टिक क्रीम जैसे– लॉरेक्सान, सोफ्रामाइसिन, सेवलान क्रीम, लगाएं।

डॉक्टरी चिकित्सा – डॉक्टरी चिकित्सा की आवश्यकता नहीं है।

1. रोगी पशु को दुहने से लिए अलग आदमी होना चाहिए।
2. दूध दुहने से पहले पोटाश के घोल से धोकर दूध दुहना चाहिए।
3. रोगी पशु का अन्त में दूध निकलना चाहिए।
4. पशुशाला एवं पशु की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय 8

# परजीवी से उत्पन्न रोग

# (Parasitic Diseases)

1. सर्रा या ट्रिपैनोसोमिएसिस (**Trypanosomiasis**) –

यह एक ज्वर की बीमारी है जिसमें तेज ज्वर रूक–रूक कर आता है। यह बीमारी बरसात के दिनों में होती है। यह सभी प्रकार के पशुओं में गाय, भैंस, भेंड़, बकरी, कुत्ता, घोड़ा, ऊँट एवं हाथी में होती है।

कारण– इस बीमारी का कारण रक्त प्रतीवा ट्रिपैनोसोमा इवैन्साइ, ट्रिपैनोसोमा बोविस आदि है जो रक्त चूसने वाली मक्खियों द्वारा एक जगह से दूसरी जगह पहॅचाया जाता है।

लक्षण– 1. पशु को $104\ ^0F$ से $107\ ^0F$ तक बुखार आता है।

2. पशु इधर–उधर घूमता है अंधा होकर दीवार से टकरा जाता है तथा गोल चक्कर काटता है।

3. पशु पेशाब थोड़ा–थोड़ा तथा बार–बार करता है।

4. कभी–कभी पशु बैठ जाने पर उठ नहीं पाता तथा बैठे–बैठे ही चारा खाता है तथा जुगाली करता है पर ठीक से नहीं।

5. गर्दन फैलाकर थुथना जमीन पर रख देता है।

6. मुॅह से लार बहती है।

7. बीमारी का उग्र रूप होने पर पशु की 24 घण्टे से लेकर 1 सप्ताह में मृत्यु हो जाती है।

8. दीर्घ कालिक अवस्था में पशु मूर्छित एवं अप्राकृतिक निद्रा में हो जाता है, उठ नहीं पाता है तथा काफी दुर्बल हो जाता है। एक दो हफ्ते में मृत्यु का शिकार बन जाता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

इस बीमारी की प्राथमिक चिकित्सा नहीं है तुरन्त चिकित्सक की मद्द लेनी चाहिए।

चिकित्सा– 1. पशु को बैरेनिल का टीका .8 से 1.6 ग्राम प्रति 100 किलो शारीरिक भार के अनुसार गहरे मॉस के अन्दर लगाएं।

2. ट्राइकुईन–एस 2.5 ग्राम का एक टीका त्वचा के नीचे लगाएं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

3. पशु को डेक्सट्रोज – 25% की बोतल शिरा द्वारा दें।

4. पशु को ज्वरहारी औषधि दें।

2. थेलोरिएसिस (**Thelleriasis**) –

यह पशुओं का गम्भीर रोग है। इसमें ऊपरी लसिका ग्रन्थियों की सूजन, क्षीणता और निर्बलता शीघ्रता से होती है यह रोग एक से तीन सप्ताह तक रह सकता है। यह रोग विदेशी पशुओं में ज्यादा होता है।

कारण– यह रोग थेलेरिया प्रजीवी जैसे थिलेरिया एन्युलारा, थिलेरिक बोविस के कारण होता है ये रक्त परजीवी है तथा लाल रक्त कणों में पाया जाता है तथा विभिन्न पशु इन्हें ढ़ोते रहते हैं।

लक्षण–

1. यह रोग अचानक उच्चताप के ज्वर के साथ होता है।
2. खूनी दस्त होते हैं।
3. दाड़ के नीचे लसिका ग्रन्थि में सूजन हो जाती है।
4. लाल रक्त कणिकायें घटने लगती हैं तथा रोगी पशु शीघ्र ही रक्ताल्पता /क्षीणता प्राप्त कर लेता है।
5. पेशाब लाल हो जाती है।
6. रोग से 60 से 100 % पशुओं की मृत्यु हो जाती है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा–

1. किलनी, जूँ आदि पर नियन्त्रण रखें।
2. रक्षा वैक–टी बैक्सीन का टीका पशु को लगाना चाहिए। इससे रोग नहीं होता है। आधा मि0ली0 दवा को ढ़ाई मि0ली0 घोलक में मिलाकर त्वचा में सुई दें। रोग मुक्ति एक वर्ष। इस टीके को तरल नाइट्रोजन में रखा जाता है।
3. रोगग्रस्त होने पर पशु को पौष्टिक आहार दें तथा पशु चिकित्सक से तुरन्त सलाह लें।
4. पशु को बैरेनिल का टीका .8 से 1.6 ग्राम प्रति 100 किलो शारीरिक भार के अनुसार गहरे मॉस के अन्दर लगाएं।
5. पशु को ज्वरहारी औषधियों का टीका लगायें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

3 लाल पेशाब या रेडवाटर (**Babesiosis**) –

यह पशुओं की पेशाब लाल होने की बीमारी है। छोटे पशुओं में यह रोग कम होता है। यह रोग गाय, भैंस बकरी, घोड़े तथा कुत्तों में होता है।

कारण– इस रोग के प्रजीवा बबेसिया प्रजाति के होते हैं जो मादा किलनी (टिक्स) ढ़ोया जाता है तथा पशुओं के रक्त को चूसते समय रक्त में मिला दिया जाता है। यह लाल रक्त कणों में रहता है यह परजीवी है।

लक्षण –

1. तेज बुखार $104\ ^0F$ से $107\ ^0F$ तक आता है।
2. सॉस तेज चलने लगते हैं।
3. पेशाब लाल रंग का हो जाता है, उसमें रक्त के कण होते हैं।
4. तिल्ली बढ़ जाती है, रक्तहीनता आ जाती है।
5. पशु शीघ्र कमजोर हो जाता है 4–5 दिनों में मर जाता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

1. अच्छी सेवा तथा स्वास्थ्यवर्धक भोजन आरोग्यता में मद्द करता है।
2. पशुओं के रहने के स्थान पर किलनी और जूँ आदि को नष्ट करने के लिए गैमैक्सीन, डी0डी0टी0 आदि का छिड़काव करें।
3. सोडियम क्लोराइड (खाने का नमक) 250–300 ग्राम पानी में मिलाकर पिलायें कुछ देर बाद आधी खुराक पुनः दें।
4. बेरिक एसिड 3 ग्राम तथा फिटकरी चूर्ण 3 ग्राम मिलाकर गुड़ के साथ दिन में दो बार खिलाना चाहिए इससे पेशाब साफ होगा।
5. पशु को बैरेनिल का टीका .8 से 1.6 ग्राम प्रति 100 किलो शारीरिक भार के अनुसार गहरे मॉस के अन्दर लगाएं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

4 खूनी पेचिस या काक्सीडियोसिस (**Coccidiosis**) –

यह पशुओं में खूनी आन्त्र शोध की बीमारी है इसमें मलाशय प्रभावित रहता है। इससे 4 माह से 2 वर्ष तक के पशु प्रभावित होते हैं। छोटे बछड़ों को भी हो सकता है।यह मुख्यतः भेड़, बकरी, कुत्ते या बिल्लियों में होता है।

कारण– इस रोग का कारण काक्सीडिया प्रजीवा का प्रजीवा है। यह चारा, दाना, पानी और चारागाह के द्वारा फैलता है।

लक्षण –

1. गाय, भैंस के बछड़ों को पतला खूनी दस्त होता है।
2. दुर्गन्ध भरा पानी, दर्द युक्त पेचिस और खून के थक्के निकलते हैं।
3. दुर्बलता, अधिक तापमान तथा स्वास्थ्य में गिरावट आती है।
4. इसकी अवधि 3–4 दिनों से लेकर 10–15 दिनों तक होती है। गम्भीर अवस्था में 4–5 दिन बाद पशु की मृत्यु हो जाती है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

1. खड़िया मिट्टी 15 ग्राम, कत्था 4 ग्राम और सोंठ 4 ग्राम मिलाकर चावल के मांड के साथ सुबह–शाम बछड़ों को दें।
2. चारा, दाना पानी को दूषित होने से बचाएं।
3. सल्फामीजाथीन या डायडीन या सल्फाडिमीडीन आदि किसी एक दवा की एक से 2 टिकिया बछड़ों को सुबह–शाम दें।
4. सल्कोप्राइम 1–2 गोली प्रतिदिन बछड़ों को दे सकते हैं।
5. रोग बढ़ने पर पशु चिकित्सक की सलाह लें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय 9

# त्वचा रोग

# (Skin Diseases)

1. खुजली या खारिश (**Pruritis or Itching**) –

यह त्वचा के खुजलाहट का रोग है, खुजली के कारण पशु अशान्त रहता है, पशु कहीं दिवाल या पेड़ आदि से शरीर को रगड़ता रहता है, खुजलाहट लगातार या कभी–कभी होती है।

कारण – यह रोग पेट की गड़बड़ी या परजीवी या एलर्जी के कारण होता है।

चिकित्सा –

1. बड़े पशुओं को मैगसल्फ 250 ग्राम या सोडा सल्फ या नमक 250 ग्राम आधा लीटर गुनगुने पानी में, पेट की गड़बड़ी में सुबह–शाम पिलावें, बाद में हरमिंसा या हिमालयन बत्तीसा 30 ग्राम सुबह–शाम दें।
2. खुजली वाले सीान पर लारेक्सान लोशन या क्रीम लगायें।
3. विना एलर्जी की खुजली में पशु को टेटमोसोल या सल्फर के साबुन से स्नान करायें।
4. एन्टी एलर्जिक दवा दें।
5. खुजली नाशक तेल बनाने के लिए 1 भाग गन्धक, 8 भाग तिल का तेल, 4 भाग नीम का तेल लें। गन्धक को बारीक पीसकर इन्हें आपस में मिला लें तथा ठीक से पका लें। ठन्डा हो जाने पर इसे खुजली वाले भाग पर दिन में दो बार रगड़–रगड़ कर लगाएं।
6. यदि पशु को भयंकर खुजली हो तथा त्वचा मधुमक्खी के छत्ते के समान दिखाई दे, खुजली से खून आ जाये, तो होम्योपैथी की औषधि – पैट्रोलियम 200 की एक–एक एम0एल0 की मात्रा पशु को सुबह – शाम पिलायें।
7. बरसात के मौसम में होने वाली खुजली, जिसमें खुजाने पर घाव पर पानी सा आए, चमड़ी – मोटी व कड़ी हो जाये, तो ऐसे पशु को रसटॉक्स 200 नामक औषधि 1–1 एम0एल0 सुबह–शाम पिलाएं।

2. फोड़ा–फुन्सी (**Abscesses or boils**) –

पशुओं के बाहरी आघात वाले रोग देखें (इसी पुस्तक में)

NOT FOR COMMERCIAL USE

3. दाद–दिनाय ( **Ring worm or Trichophytosis**) –

यह छूत वाला चर्म रोग है। इसमें रोंआ रहित त्वचा पर गोलाकार क्षेत्र (चकत्ता) होता है। दानेदार फफोले, छिलके या पपड़ी के साथ खुजलाहट होती है। यह सभी पशुओं में होता है। चकत्ते के बीच का भाग चिकना होता है।

कारण– यह फफूँद के कारण होता है। अधिकतर बरसात व सर्दी के दिनों में बछिया या बछड़ों को आमतौर पर होता है। यह एक पशु से दूसरे पशु को सीधे सम्पर्क से लगता है।

चिकित्सा–

दाद के आस–पास के बालों को काटकर हल्के साबुन और गर्म पानी से धोकर तथा अच्छी प्रकार रगड़कर पपड़ी हटा लेने के बाद सूखने देना चाहिए। इसके बाद नीचे लिखी किसी एक दवा को लगाया जा सकता है –

1. टिंचर आयोडीन
2. सैलिसिलिक एसिड एक भाग वैसलीन 16 भाग मलहम।
3. रैडमरकरी का मलहम 5 % या गन्धक का 10 % या वेनजोइक एसिड का मलहम 10 % ।
4. डर्मोक्वीनोल क्रीम, मल्टीफेन्जीन, एक्सोरा आयनमेंन्ट, टिनाडर्म सोल्यूशन आदि कोई एक दवा।
5. टर्परोल क्रीम लगा सकते हैं।

4. कुटकी या चमोकन से खाज खोड़ा या मेन्ज (**Mange**) –

यह छूत वाला चर्म रोग है, चमड़ा मोटा हो जाता है तथा उसमें काफी खुजली लगती है। सैप्टिक होने से फुन्सी फोड़े निकल आते हैं।

कारण – इसका कारण एक प्रकार का परजीवी है, यह त्वचा में 0.5 से 1 इंच गहराई तक घुस जाते हैं और वहीं अन्डे देते हैं।

लक्षण –

1. पशु की त्वचा आक्रमण की जगह मोटी होकर सिकुड़ जाती है।
2. चमड़े का चकत्ता लाल, कखड़ा, दरार सा फटा और पपड़ी से भर जाता है जिसमें खुजलाहट होती है।
3. कीटाणुओं के संसर्ग से दानेदार फुन्सियॉ निकल आती हैं जिसमें पीव सा पदार्थ भर जाता है तथा घाव बन आते हैं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

4. पशुओं की पूँछ की जड़ गर्दन, माथे तथा पीठ पर प्रायः होता है।

प्राथमिक पशु चिकित्सा –

1. 5 % गैमैक्सीन, नारियल के तेल में मिलाकर लगाया जा सकता है।
2. गन्धक का घोल सा मलहम लगायें।
3. मालाथियोन या सुमिथियोन 0.2 % पानी के घोल को लगायें।
4. एस्केवियोल लोशन 2–3 दिनों के अन्तराल पर लगायें।
5. गामास्कैब लोशन या हिमैक्स लोशन लगायें।
6. टेटमोसोल साबुन से पशुओं को स्नान करावैं।
7. विटामिन और मिनरल युक्त आहार खिलायें।
8. कीटाणुओं के आक्रमण में एन्टीबायोटिक दवाओं का प्रयोग चिकित्सक की सलाह पर करें।
9. एक्रीफ्लेविन 1 : 1000 का घोल लगायें।

2. किलनी या टिक्स (**Ticks**)

यह परजीवी पशुओं के शरीर के बाह्य अंगों की त्वचा में बालों की जड़ पर रहते हैं तथा रक्त चूसते रहते हैं। इनकी अधिकता से पशुओं को ज्वर भी हो जाता है तथा पशु कमजोर हो जाते है। ज्यादातर गन्दे, कुपथ्यवाले आलसी पशुओं को लग जाते है तथा इन पशुओं से स्वस्थ पशु में भी स्थानान्तरित हो जाते हैं।

डपचार –

1. पशुओं को कार्बोलिक एसिड या टेटमासोल साबुन से नहलाएं।
2. व्यूटाक्स 4 एम0 एल0 एक लीटर पानी में घोलकर नहलाएं।
3. कन्डे की राख, नीम की पत्ती की राख, गन्धक, चूना और तम्बाकू का चूर्ण मिलाकर शरीर पर किलनी वाले अंगों पर लगायें।
4. 5 % गैमैक्सीन, डी0डी0टी0 के घोल से पशुओं को नहलायें।
5. जुएं मारने के लिए हौम्योपैथी औषधि आरसेनिक 200 की एक–एक एम0 एल0 मात्रा पशु को सुबह–शाम तीन दिन तक दें। यदि इसमें भी जुएं न मरें तो स्टेफीसग्रिया 200 की 1–1 एम0एल0 मात्रा पशु को पिलायें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

6 रसौली एवं मस्से ( **Tumors and Warts** )

चिकित्सा –

1. तीन मात्रा पानी तथा एक भाग कच्चे पपीते से निकलने वाला दूध अथवा तने से निकलने वाला एक मिलाकर चौड़े मुँह वाली शीशी में भर लें इसमें भीगी हुई रूई रसौली पर बाँधने से लाभ मिलता है तथा मस्सों पर लगाने से वह भी नष्ट हो जाते हैं।
2. हाइडोजन पर आक्साइड की बूँद रूई द्वारा मस्से पर लगाने से मस्से सूख जाते हैं।
3. चूना तथा सज्जी बराबर मात्रा में कॉच के बर्तन में लेकर थोड़ी सी मात्रा में पानी मिला लें रूई का फोहा बनाकर मस्से के ऊपर दिन में दो –तीन बार लगायें, मस्सा स्वतः समाप्त हो जायेगा।

अन्जीर बेल –

अन्जीर बेल होने पर पशु को पोटेशियम आयोडाइड पाउडर 5 ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से 10–15 दिन तक लगातार दें।

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय 10

# टीकाकरण

# (Vaccination)

टीकाकरण **(Vaccination)**

किसी विशेष बीमारी से मुक्ति के लिए पशुओं के शरीर में प्रतिकायों, (Antibodies) को उस बीमारी के अक्रियाशील जीवित कीटाणुओं के प्रवेश कराने से पैदा करने की किया को टीकाकरण (Vaccination) कहा जाता है।

1. टीका /मसूरी लस **(Vaccine)**

इसके लिए बीमारी के कीटाणुओं को ऐसा कमजोर बना दिया जाता है कि वह अपनी प्रचण्डता खो बैठते हैं। इस प्रकार के कल्चर (उपज) को टीका **(Vaccine)** कहा जाता है।

जब टीका पशुओं के शरीर में प्रवेश कराया जाता है तो उसका हल्का आक्रमण पशु के शरीर पर होता है। रक्त द्वारा बहुसंख्यक एन्टीबोडीज इस प्रभाव को रोकने के लिए अथवा कीटाणुओं के विनाश के लिए पैदा की जाती है, जिससे पशु को रोगमुक्ति हेतु सक्रिय या चपल मुक्ति (Active Immunity) लगभग 15 दिन में प्राप्त हो जाती है। शरीर इस विशेष प्रकार की बीमारी के कीटाणुओं से बचाव हेतु रक्त में प्रचुर मात्रा में आवश्यक एन्टीबोडीज का भंडारण कर लेता है। जब कभी (विशेष समय सीमा के भीतर) बीमारी के जहरीले कीटाणु वातावरण के शरीर के अन्दर प्रवेश करते हैं तो उन्हें रक्त में उपस्थित प्रतिकायों द्वारा प्रवेश करते ही मार दिया जाता है। इस प्रकार पशु रोग मुक्त हो जाता है।

इसी तरह मृत जीवाणुओं को भी पशुओं के शरीर में डाला जाता है, जो शरीर के रक्त में प्रतिकायों को पैदा करने के लिए कोशिकाओं को उभारता है। इस प्रकार के कल्चर को बैक्ट्रिम (Bactrim) कहा जाता है।

**2-** प्रतिलिसी **(Hyper Immune Serum)** किसी पशु के शरीर में प्रतिकायों को उत्पन्न कर उसके रक्त से लसी को निकाल कर किसी दूसरे पशु के शरीर में डाला जाता है। इस प्रकार के उपज (Culture) को प्रतिलिसी **(Hyper Immune Serum)** कहते हैं।

NOT FOR COMMERCIAL USE

इस प्रकार दूसरे पशु के शरीर में प्रतिकायें मिला देने से बीमारी से उसका बचाव हो जाता है। इस प्रकार से रोग मुक्ति को निष्क्रीय मुक्ति (Passive Immunity) कहा जाता है। आजकल रोगमुक्ति के लिए प्रायः इसका उपयोग नहीं किया जाता है।

## मसूरी लस और प्रतिलसी में अन्तर

| मसूरी लस **(Vaccine)** | प्रतिलसी **(Hyper Immune Serum)** |
|---|---|
| 1. कीटाणुओं को कमजोर कर तैयार किया जाता हे जो पशुओं के शरीर में जाकर प्रतिकायों को पैदा करने के लिए कोशिकाओं को उत्तेजित करता है। | 1. यह निर्मित प्रतिकायें होती हैं जो पशुओं के शरीर में सीधे डाली जाती हैं। यह दूसरे पशुओं के रक्त से निकाली जाती हैं। |
| 2. इसे सक्रिय मुक्ति कहा जाता है। | 2. इसे निष्क्रीय मुक्ति कहा जाता है। |
| 3. यह केवल स्वस्थ पशुओं को दी जाती है जहॉ संक्रामक रोग का प्रकोप फैला न हो। | 3. स्वस्थ और रोगी, दोनों पशुओं को दिया जाता है ।इससे रोग अच्छा भी हो जाता है। |
| 4. इसको कम मात्रा में दिया जाता है। | 4. इसकी मात्रा अधिक दी जाती है। |

टीका लगाने का सही तरीका

टीका लगाने से पहले सिरिंज और सुई को गर्म पानी में साफ कर लेना चाहिए। दवा की जितनी मात्रा देनी हो सिरिंज में भर लेनी चाहिए, किन्तु भरे सिरिंज में हवा का बुलबुला नहीं रहना चाहिए। वैक्सीन और प्रतिलसी, दोनों ही त्वचा में दी जाती हैं। इसके लिए सबसे अच्छा स्थान गर्दन होती है। सुई देने के स्थान को स्प्रिट में भीगी रूई से साफ कर लेना चाहिए। दवा भरी सिरिंज को बायें हाथ में तथा सुई को दाहिने हाथ में लेकर गर्दन की त्वचा को बायें हाथ की चुटकी से पकड़ कर दाहिने हाथ से सुई की नोंक को जल्दी से घुसा दिया जाता है तथा सिरिंज लगाकर दवा ठेल दी जाती है। इसके बाद सिरिंज और सुई को शीघ्रता से खींच लिया जाता है। सुई लगाते समय पशु को सावधानीपूर्वक नियन्त्रण में रखना चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

टीकाकरण करते समय सावधानियॉ

1. संक्रमक रोग फैलाने पर टीकाकरण नहीं कराना चाहिए।
2. टीके पूर्णरूप से निर्धारित मात्रा में लगाने चाहिए।
3. टीका लगाते समय बोतल को हिला लेना चाहिए।
4. टीके को सदैव निर्धारित तापक्रम पर रखना चाहिए।
5. दो भिन्न बीमारियों हेतु टीके में 15 दिन का अन्तर रखना चाहिए।
6. सुई को प्रत्येक पशु में टीका लगाने से पहले स्प्रिट लैम्प की लौ में गर्म कर जीवाणु रहित कर लेना चाहिए।
7. बोतल को खोल कर एक बार में ही पूर्ण उपयोग में लाना चाहिए।

NOT FOR COMMERCIAL USE

पशुओं के विभिन्न संक्रमक रोगों के टीकों के नाम, मात्रा, लगाने की विधि तथा बचाव की अवधि

| क्रम सं0 | संक्रमक रोग का नाम | टीकों का नाम | मात्रा | लगाने की विधि | बचाव की अवधि | टीका लगाने का समय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | गलाघोंटू | 1.रक्षा H.S.वैक्सीन 2.बोबिलिस H.S. वैक्सीन | 2 ml | त्वचा के नीचे | एक वर्ष | मई, जून (मानसून से पूर्व) |
| 2 | लंगडा बुखार | 1.रक्षा B.Q. वैक्सीन | 2 ml | त्वचा के नीचे | एक वर्ष | मई, जून (मानसून से पूर्व) |
| 3 | रिन्डरपेस्ट | 1. फ्रीज ड्राईड गोट टिश्यू R.P.वैक्सीन | 2 ml | त्वचा के नीचे | एक वर्ष | मई, जून (मानसून से पूर्व) |
| 4 | थीलेरियेसिस | 1. रक्षा बैक–टी वैक्सीन | 0.5ml दवा + 2.5ml घोलक | त्वचा के नीचे | जीवनपर्यन्त | मई, जून (मानसून से पूर्व) |
| 5 | गलाघोंटू + लंगडा बुखार (संयुक्त) | 1. H.S & B.Q वैक्सीन 2. बोबिलिसिस H.S & B.Q वैक्सीन | 3ml 2ml | त्वचा के नीचे | एक वर्ष | मई, जून (मानसून से पूर्व) |
| 6 | खुरपका मुँहपका | 1.रक्षा FMD वैक्सीन 2.रक्षा ओबैक वैक्सीन 3. बोबिलिसिस क्लोवैक्स वैक्सीन | 3ml 2ml 2ml | त्वचा के नीचे | 6 माह एक वर्ष 6 माह | फरवरी–मार्च तथा सितम्बर–अक्टूबर |
| 7 | खुरपका मुँहपका एवं गलाघोंटू (संयुक्त) | 1. रक्षा बायोवैक | 3ml | त्वचा के नीचे | 6 माह | फरवरी–मार्च तथा सितम्बर–अक्टूबर |
| 8 | खुरपका मुँहपका, गलाघोंटू तथा लंगडा बुखार (संयुक्त) | 1. रक्षा ट्रायोबैक | 3ml | त्वचा के नीचे | एक वर्ष | मई, जून (मानसून से पूर्व) |

NOT FOR COMMERCIAL USE

कुत्तों में विभिन्न संक्रमक रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण सारणी

| क्रम सं0 | नाम रोग | टीके का नाम | प्रथम टीकाकरण उम्र | | | | पुनः टीकाकरण अवधि | खुराक व विधि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 6सप्ताह | 8/9सप्ताह | 10सप्ताह | 12सप्ताह | | |
| 1. | रैबीज | 1.मैगावैक–आर वैक्सीन 2.रक्षा रैब वैक्सीन 3.नोबिवैक रैबीज वैक्सीन 4.डिफेन्सर–1 वैक्सीन | – | ✓ | – | ✓ | वार्षिक | 1ml s/c or I/m |
| 2. | परवो वाइरस हिपैटाइटिस लैप्टोस्पाइरोसि कैनाइन-डिस्टैम्पर, पैराइन्फ्लूएंजा वाइरस (संयुक्त टीका) | 1.मैगावैक-6 वैक्सीन 2.नोबिवैक - DHPPI वैक्सीन 1.वैन–गार्ड वैक्सीन + लैप्टोफकरम–C वैक्सीन | ✓ | | ✓ | – | वार्षिक | 1ml s/c or I/m |
| 3. | कोरोना वाइरस | 1.मैगावैक–सीसी वैक्सीन 2.नोबिवैक–कोरोना वैक्सीन 3.फर्स्ट डोज cv वैक्सीन | – | ✓ | – | ✓ | वार्षिक | 1ml s/c or I/m |

NOT FOR COMMERCIAL USE

# अध्याय 11

# बाजार में उपलब्ध विभिन्न औषधियों के नाम, पैकिंग, खुराक व देने की विधि

## Injectable Antibiotics

| S.N A. | Name of Product Injectable Antibiotics | Ingradients | Packing | Dosage |
|---|---|---|---|---|
| 1. | Inj. MOXEL | Amoxycillin+Cloxicillin | 2.5g,3g,4g | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 2. | Inj. INTAMOX | Amoxycillin+Cloxicillin | 3g,4g. | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 3. | Inj. PANAMOX | Amoxycillin+Cloxicillin | 2gm,3gm | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 4. | Inj. TOMALOX | Amoxycillin+Cloxicillin | 4gm | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 5. | Inj. 3-OX | Amoxycillin+Cloxicillin | 3gm | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 6. | Inj.CLOMOX | Amoxycillin+Cloxicillin | 3gm | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 7. | Inj. CHEMCLOX | Amoxycillin+Cloxicillin | 2g,3g,4g | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 8. | **Inj.AMPI-D** | **Ampicillin+Dicloxicillin** | **3g** | **Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v** |
| 9. | **Inj.AMOX-D** | **Amoxycillin+Dicloxicilln** | **3gm** | **Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v** |
| 10. | **Inj.AMOX-S** | **Amoxycillin+Sulbactam** | **3gm** | **Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v** |
| 11. | Inj.AMOXIRUM-FORTE | Amoxycillin+ Sulbactam | 3g, 4.5gm | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 12. | Inj.SAFARI-SL | Amoxycillin+ Sulbactam | 3gm | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 13. | Inj.BINOCIN | Ampicillin+Cloxicillin | 2.5gm | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 14. | Inj.CLOXEM | Ampicillin+Cloxicillin | 2.5gm, 4gm | Small Animal 1-2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3-4gm I/m or I/v |
| 15. | Inj.DICRYSTICIN-S. | Streptopencillin | 2.5gm | Large animal 2.5gm I/m |
| 16. | Inj.BISTERPEN | Streptopencillin | 2.5gm | Large animal 2.5gm I/m |
| 17. | Inj. MACROGENTA | Gentamycin | 2.5g,3g,4g | Small Animal 1.2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3.4gm I/m or i/v |
| 18. | Inj. PROGENTA | Gentamycin | 30ml | Small Animal 1.2.5gm I/m or I/v<br>Large Animal 3.4gm I/m or i/v |
| 19. | Inj. FLOXIDIN | Enrofloxacin | 15ml,30ml | Large Animal 15ml I/ m |
| 20. | Inj. ENROCIN | Enrofloxacin | 15,30,100ml | Large Animal 15ml I/ m |
| 21. | Inj. BYROCIN | Enrofloxacin | 30ml | Large Animal 15ml I/ m |
| 22. | Inj.FLOBAC-SA | Enrofloxacin | 30ml | Large Animal 15ml I/ m |
| 23. | Inj. EBRODAC | Enrofloxacin | 100ml | Large Animal 15ml I/ m |
| 24. | Inj.CONFLOX | Enrofloxacin | 30ml | Large Animal 15ml I/ m |
| 25. | Inj.ARO | Enrofloxacin | 20ml,100ml | Large Animal 15ml I/ m |

NOT FOR COMMERCIAL USE

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 26. | Inj.ENROX | Enrofloxacin | 15ml,100ml | Large Animal 15ml I/ m |
| 27. | Inj.ENROCARE | Enrofloxacin | 20ml | Large Animal 15ml I/ m |
| 28. | Inj.INTAMYCIN-LA | Oxytetracyclin+longacting | 30ml,100ml | Large animal 30ml I/ m at the interval of 72 hrs. |
| 29. | Inj.OXYTETRACYCLIN-L.A | Oxytetracyclin+longacting | 30ml,100ml | Large animal 30ml I/ m at the interval of 72 hrs. |
| 30. | Inj. OXYCILLIN-L.A | Oxytetracyclin+longacting | 30ml,100ml | Large animal 30ml I/ m at the interval of 72 hrs. |
| 31. | Inj. C- FLOX | Ciprofloxin | 30ml | Large animal 30ml I/ m |
| 32. | Inj. CYRACIN | Ciprofloxin | 30ml | Large animal 30ml I/ m |
| 33. | Inj.O-LON-D.S | Ciprofloxin | 15ml | Large animal 15ml I/ m |
| 34. | Inj. INTACEF | Ceftriaxone | 250,500,1,2, 3,4gm | Small Animal 250mg-1gm I/m,I/v LargeAnimal 2-4gm I/m ,I/v |
| 35. | Inj.ZYDACEF | Ceftriaxone | 4gm | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-4gm I/m ,I/v |
| 36. | Inj.A-CEF | Ceftriaxone | 3mg | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-4gm I/m ,I/v |
| 37. | Inj. TINACEF | Ceftriaxone+Salbactum | 1,2gm | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2 gm I/m ,I/v |
| 38. | Inj.INTACEF-TOZO | Ceftriaxone+Tazobactam | 3gm | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-3gm I/m ,I/v |
| 39. | Inj.VETAZO | Ceftriaxone+Tazobactam | 2250mg | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-3gm I/m ,I/v |
| 40. | Inj.X-NEL | Ceftifur | 4gm | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-4gm I/m ,I/v |
| 41. | Inj.XCEFT | Ceftifur | 500mg,1,4g m | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-4gm I/m ,I/v |
| 42. | Inj.BOVICEF | Ceftifur | 2gm,4gm | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-4gm I/m ,I/v |
| 43. | Inj.CEPHATIN-F | Cefoperazone+Salbactam | 4.5gm | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-4.5gm I/m ,I/v |
| 44. | Inj.TAXSAM | Cefataxim | 2,4.5gm | Small Animal 250mg-1gm I/m ,I/v LargeAnimal 2-4.5gm I/m ,I/v |

**ANTIBIOTIC BOLUS**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 45. | Amoxirum Bolus | Amoxycillin+Cloxicillin | - | 2 Bolus – B.D. |
| 46. | Acromin Bolus | Amoxycillin+Cloxicillin | - | 2 Bolus – B.D. |
| 47. | Panamox Bolus | Amoxycillin+Cloxicillin | - | 2 Bolus – B.D. |
| 48. | Lox Forte Bolus | Amoxycillin+Cloxicillin | - | 2 Bolus – B.D. |
| 49. | E-Flox Bolus | Enrofloxacin | - | 2 Bolus – B.D. |
| 50. | C- Flox Bolus | Ciprofloxacin | - | 2 Bolus – B.D. |

**SULPHA DRUGS**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 51. | Inj. Biotrim | Sulphadiazine+Trimethoprim | 30ml | 15ml I/mor I/v |
| 52. | Inj. Sulprim | Sulphadiazine+Trimethoprim | 30ml | 15ml I/mor I/v |
| 53. | Marcoprim-Bolus | Sulphadiazine+Trimethoprim | 4 Bolus | 2-4 Bolus-B.D |
| 54. | Nuprin Bolus | Sulphadiazine+Trimethoprim | 4 Bolus | 2-4 Bolus-B.D |
| 55. | Inj. Sulphatrim | Sulphadiazine+Trimethoprim | 30ml | 15ml I/mor I/v |
| 56. | Inj. Sulphadimadine | Suphadimadine | 100ml | 100 ml I/mor I/v |
| 57. | Nuprim-D.S. Bolus | Suphadimadine+ Trimethoprim | 4 Bolus | 2-4 Bolus-B.D |
| 58. | Sulcoprim Bolus | Suphadimadine+ Trimethoprim | 4 Bolus | 2-4 Bolus-B.D |

NOT FOR COMMERCIAL USE

## INTRA/UTERINE BOLUS &SOLUTION

| | Name of Product | Dosage |
|---|---|---|
| 59. | Furea-U Bolus | 4 - 6 Bolus -Daily |
| 60. | Lixen – I.U.Bolus | 2 Bolus –Daily |
| 61. | Lixen – I.U.Powder | 4-gm - Daily |
| 62. | CFlox-TZ | 60ml – Daily |
| 63. | OLON-TZ | 60ml - Daily |
| 64. | Lenovo-I.U. | 60ml – Daily |
| 65. | Furex Bolus | 4 - 6 Bolus -Daily |
| 66. | Curicin- TZ | 60ml – Daily |
| 67. | Furea-U Bolus | 4 - 6 Bolus -Daily |

## ANALGESICS/ ANTIPYRETIC/ ANTI INFLAMMATORY

| S.NO. | Name of Product | Ingradients | Packing | Dosage |
|---|---|---|---|---|
| 68. | Inj. Melonex | Meloxicam | 15,30,100ml | 15ml-I/ m, I/v, s/c – B.D |
| 69. | Inj. Melonex-plus | Meloxicam+Paracetamol | 15,30,100ml | 15ml-I/ m. I/v, s/c – B.D |
| 70. | Inj. Ketonil | Ketoprophane | 15,100ml | 15ml-I/ m – B.D |
| 71. | Inj. Neoprophane | Ketoprophane | 15,100ml | 15ml-I/ m – B.D |
| 72. | Inj. Nimovet | Nimusilide | 15,100ml | 15ml-I/ m – B.D |
| 73. | Inj. Diclovet | Meloxicam | 30,100ml | 15ml-I/ m – B.D |
| 74. | Inj. AnKetop | Ketoprophane | 30, 90ml | 15ml-I/ m – B.D |
| 75. | Inj. Melox | Meloxicam | 15,30,100ml | 15ml-I/ m, I/v, s/c – B.D |
| 76. | Inj. Penadic | Piroxicam-Pitofenon | 30ml,99ml | 15-30ml. dailyI/ m– B.D |
| 77. | Inj.Butagesic-K | Ketoprophen | 30ml,100ml | 15ml-I/ m, I/v, s/c–B.D |
| 78. | Inj.Marcogesic | Mefenamic Acid+Pacetamol | 3ml,100ml | 15ml-I/ m, I/v, s/c–B.D |
| 79. | Inj.Doloban-vet | Mefenamic Acid+Pacetamol | 3ml,100ml | 15ml-I/ m, I/v, s/c–B.D |
| 80. | Inj.P.D.P | Pyroxicam+Paracetamol | 30ml | 15ml-I/ m, I/v, s/c–B.D |
| 81. | Inj. Prestivet | Pyroxicam+Paracetamol | 30ml | 15ml-I/ m, I/v, s/c–B.D |
| 82. | Inj.Loc | Pyroxicam+Paracetamol | 30ml | 15ml-I/ m, I/v, s/c–B.D |
| 83. | Inj.Pecorex | Phenylbutazone+Sod.salicilate | 30ml | 15ml-I/ m, I/v,s/c–B.D |
| 84. | Esgypyrin-N | Phenylbutazone+Sod.salicilate | 5ml | 10-15ml I/ m,I/v,s/c-B.D |
| 85. | LOC Bolus | Piroxicam+Paracetamol | 4'Bolus | 2 Bolus –B.D |
| 86. | P-KillerForte Bolus | Nimesulide+Paracetamol +Chlorzoxazone | 2'Bolus | 2 Bolus –B.D |
| 87. | Inj.Marcodex | Dexamethasone | 5ml | 5ml-I/ m, I/v-B.D |
| 88. | Inj. Dexona | Dexamethasone | 5ml | 5ml-I/ m, I/v,-B.D |
| 89. | Inj. Curadex | Dexamethasone | 10ml | 5ml-I/ m, I/v-B.D |
| 90. | Inj. Vet Cort | Dexamethasone | 5ml | 5ml-I/ m, I/v-B.D |
| 91. | Inj. Betavet | Betamethasone | 5ml | 5ml-I/ m, I/v-B.D |
| 92. | Inj. Beta-X | Betamethasone | 5,10ml | 5ml-I/ m, I/v-B.D |
| 93. | Inj. Prednisalon | Prednisalon | 10ml | 10ml-I/ m -B.D |
| 94. | Inj. Vetalog | Triamcinolane Acetonide | 5ml | 5ml-I/ m -B.D |

## ANTI-ALLERGIC

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 95. | Inj. Avil | Chlorpheniramine | 10, 30ml | 10-15ml I/ m, I/v-B.D |
| 96. | Inj. Histamin | Chlorpheniramine | 30ml | 10-15ml I/ m, I/v-B.D |

NOT FOR COMMERCIAL USE

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 97. | Inj. Cadistin | Chlorpheniramine | 30,100ml | 10-15ml I/ m, I/v-B.D |
| 98. | Inj. Zect | Chlorpheniramine | 10,30,100ml | 10-15ml I/ m, I/v-B.D |
| 99. | Inj. Panavil | Chlorpheniramine | 10, 99ml | 10-15ml I/ m, I/v-B.D |
| **ANTI-SPASMODICS** | | | | |
| 100. | Inj. Spasdic | Pitotenone Hydrochloride + Fenpivinium Bromide | 30ml | 20-30ml I/ m, I/v-B.D |
| 101. | Inj. Panadic | Pitotenone Hydrochloride + Fenpivinium Bromide | 30, 100ml | 20-30ml I/ m, I/v-B.D |
| 102. | Inj. Sangan | Pitotenone Hydrochloride + Fenpivinium Bromide | 30ml | 20-30ml I/ m, I/v-B.D |
| **GENERAL ANAESTHATICS** | | | | |
| 103. | Inj. Xylaxine | Xylazine | 1,10,30ml | As per literature |
| 104. | Inj. Xylocaid | Xylazine | 2,5ml | As per literature |
| **LOCAL ANAESTHATICS** | | | | |
| 105. | Inj. Novocaine | Lignocaine | 30ml | As per requirement |
| 106. | Inj. Xylocaine | Lignocaine | 30ml | As per requirement |
| **DIURETICS** | | | | |
| 107. | Inj. Redima | Frusamide+Amiloride | 10ml | 10ml-I/m,I/v |
| 108. | Inj. Remote-vet | Frusamide+Amiloride | 10ml | 10ml-I/m,I/v |
| 109. | Inj. Laxis | Frusamide+Amiloride | 2ml | 10ml-I/m,I/v |
| **HAEMOSTATICS** | | | | |
| 110. | Inj. Chrome | Monocemicarpazone | 10ml | 10ml I/ m |
| 111. | Inj. Celotex | Monocemicarpazone | 30ml | 10ml I/ m |
| 112. | Inj. Revici | Monocemicarpazone | 5ml | 10ml I/ m |
| 113. | Inj. Sigma Chrome | Monocemicarpazone | 5ml | 10ml I/ m |

**ANTI DIARRHOEAL BOLUS**

| S.No. | Name of Product | Packing | Dosage |
|---|---|---|---|
| 114. | Marcogyl Bolus | 4'Bolus | 2-4 Bolus- B.D |
| 115. | Nyugyl | 4'Bolus | 2-4 Bolus- B.D |
| 116. | Vet-Fur-TL Bolus | 4'Bolus | 2-4 Bolus- B.D |
| 117. | Mekodier Bolus | 4'Bolus | 2-4 Bolus- B.D |
| 118. | **AN-DOT** | **2'Bolus** | **1-2 Bolus- B.D** |
| 119. | N-TZ | 4'Bolus | 1-2 Bolus- B.D |

**HYPNOTICS**

| S.NO. | Name of Product | Ingradients | Packing | Dosage |
|---|---|---|---|---|
| 120. | Inj. Sequil | Triflupromazine | 5ml | 5ml-I/ m- B.D |

NOT FOR COMMERCIAL USE

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 121. | Inj. Antizone-AD | Triflupromazine | 3ml | 5ml-I/ m- B.D |

**ANTI PROTOZOANS**

| S.NO. | Name of Product | Packing | Dosage |
|---|---|---|---|
| 122. | Inj. Berenil | 5gm,22.5gm | .8 to 1.6gm/ 100 kg wt. I/m |
| 123. | Inj.Beneril-RTU | 30ml | 30ml I/m |
| 124. | Inj.Nilbery | 30ml | 30ml I/m |
| 125. | Inj.Target | 30ml | 30ml I/m |
| 126. | Inj.Dimaze | 30ml | 30ml I/m |
| 127. | Inj.Prozomine | 5,30gm | .8 to 1.6gm/100 kgB.wt I/m |
| 128. | Inj.Sural | 250mg | 250mg I/m |
| 129. | Inj.Triquin | 2.5gm | 2.5gm S/C |
| 130. | Inj.Triquin-S | 2gm | 2gm S/C |
| 131. | Inj.Cuinacept | 1.5gm | 1.5gm S/C |

**INTRA MAMMARY INFUSIONS**

| S.NO. | Name of Product | Dosage |
|---|---|---|
| 132. | Pendistrin-SH.Tube | One tube/effected Treat every 12 hrs. |
| 133. | Mastilep Tube | One tube/effected Treat every 12 hrs. |
| 134. | Mamal Tube | One tube/effected Treat every 12 hrs. |
| 135. | Mastijet Tube | One tube/effected Treat every 12 hrs. |

**PHOSPHORUS PREPARATIONS**

| S.NO. | Name of Product | Packing | Dosage |
|---|---|---|---|
| 136. | Inj.Tonophosphane | 5,10,30ml | Large animal 10ml I/m,I/v,Smallanimal 3-5ml I/m,I/v |
| 137. | Inj. Obaphos | 10,30ml | Large animal 10ml I/m,I/v,Smallanimal 3-5ml I/m,I/v |
| 138. | Inj.T-Phos | 10,30ml | Large animal 10ml I/m,I/v,Smallanimal 3-5ml I/m,I/v |
| 139. | Inj.Speedo | 30ml | Large animal 10ml I/m,I/v,Smallanimal 3-5ml I/m,I/v |
| 140. | Inj. Urimin | 30ml | Large animal 10ml I/m,I/v,Smallanimal 3-5ml I/m,I/v |
| 141. | Inj. Tonorecin | 5,10,30ml | Large animal 10ml I/m,I/v,Smallanimal 3-5ml I/m,I/v |

**VITAMIN A $D_3$ PREPARATIONS**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 142. | Inj. Vetade | 10ml | 5ml-I/m |
| 143. | Inj. Vitacept | 5,10ml | 5ml-I/m |
| 144. | Inj.VitaAconcentrate | 2ml | 10ml-I/m |
| 145. | Inj.Prepiline fort | 2ml | 10m1-I/m every week |
| 146. | Inj. ADEVet | 10ml | 10ml-I/m- Daily |

**HEAT INDUCING BOLUS**

| | | |
|---|---|---|
| 147. | Prazana Cap. | As per direction given on sachet |

NOT FOR COMMERCIAL USE

| | | | |
|---|---|---|---|
| 148. | Janave Cap. | | As per direction given on sachet |
| 149. | **FERTITONE BOLUS** | | **1 BOLUS DAILY FOR 20 DAYS** |
| 150. | HeatO-gen Cap | | As per direction given on sachet |
| **INJ. LIVER EXTRACT (TONICS)** | | | |
| 151. | Inj. AN-LIV | 30, 99 ml. | 10ml I/m-large animal,2-5ml I/m-small animal |
| 152. | Inj. Pepsid-C | 10,30ml | 5ml I/m-large animal,1-2ml I/m-small animal |
| 153. | Inj. Belamyl | 10,30,100ml | 10ml I/m-large animal,2-5ml I/m-small animal |
| 154. | Inj. Livomark | 10,30,100ml | 10ml I/m-large animal,2-5ml I/m-small animal |
| 155. | Inj.Panaliv | 30,100ml | 10ml I/m-large animal,2-5ml I/m-small animal |
| 156. | Inj.Bivinal-forte | 10,30,100ml | 10ml I/m-large animal,2-5ml I/m-small animal |
| 157. | Inj.Livron | 10,30,100ml | 10ml I/m-large animal,2-5ml I/m-small animal |
| 158. | Inj.Hepaplex | 30ml | 10ml I/m-large animal,2-5ml I/m-small animal |
| 159. | Inj.Hivit | 30,50ml | 10ml I/m-large animal,2-5ml I/m-small animal |
| **ORAL LIVER EXTRACT (TONICS SYRUP)** | | | |
| 160. | Liv-52 | 120ml | 10-20 ml orally BID Daily |
| 161. | Hepasafe | 100,500ml,5lt. | 10-20 ml orally BID Daily |
| 162. | Lifer | 500ml,1,5 lt | 50 ml BID Daily |
| 163. | Toxiliv. Liquid | 1lt, 5lt. | 50 ml BID Daily |
| 164. | An-liv Liquid | 500ml,1,5 lt | 20 ml BID Daily |
| 165. | Livoforol | 450ml,1,5 lt | 50 ml BID Daily |
| **VITAMIN $AD_3$ ( SYRUP)** | | | |
| 166. | Vimeral Syrup | 100,500ml | 5ml BID Daily |
| 167. | Conciton Syrup | 100,500,1000ml | 20ml BID Daily |
| 168. | Capsiton Syrup | 100,500,1000ml | 20ml BID Daily |
| 169. | Veteral | 30,60,100, 500ml | 20ml Daily |
| **I/VINJECTABLE CALCIUM PREPARATIONS** | | | |
| 170. | Inj. Mifex | 450ml | As Directed By Veterinarian |
| 171. | Inj.Calboral | 450ml | As Directed By Veterinarian |
| 172. | Inj. Miphocol | 450ml | As Directed By Veterinarian |
| 173. | Inj.Calcium-boro-glucots | 450ml | As Directed By Veterinarian |
| **I/M INJECTABLE CALCIUM PREPARATIONS** | | | |
| 174. | Inj.Tinacal | 30,100ml | 15-20 ml- I/m or as directed by Veterinerian |
| 175. | Inj.Cal.B.D | 30,100ml | 15-20 ml- I/m or as directed by Veterinerian |

NOT FOR COMMERCIAL USE

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 176. | Inj.Cobacol-D | 30ml | 15-20 ml- I/m or as directed by Veterinerian | |
| **CALCIUM BOLUS PREPARATIONS** | | | | |
| 177. | Calvit-forte Bolus | 4 Bolus Strip | 2Bolus BID Daily | |
| 178. | Shobhital Bolus Plus | 6 Bolus Strip | 2Bolus BID Daily | |
| 179. | Lactin Bolus | 4 Bolus Strip | 2Bolus BID Daily | |
| 180. | Ancal Bolus | 4 Bolus Strip | 2Bolus BID Daily | |
| **ORAL FEED SUPPLIMENTS PREPARATIONS** | | | | |
| 181. | Agrimin-forte | 1kg, 5kg | 50gm Daily | |
| 182. | Concimin Powder | 1kg | 50gm Daily | |
| 183. | Rammix-Total | 1kg | 50gm Daily | |
| 184. | **Anmin-forte** | 1kg | 50gm Daily | |
| 185. | **Fertimix** | 1kg | 50gm Daily | |
| 186. | Milk Min | 1kg | 50gm Daily | |
| 187. | Guala | 1kg | 50gm Daily | |
| 188. | Proffimin-fort | 1kg | 50gm Daily | |
| 189. | Growmin-SE | 1kg | 50gm Daily | |
| 190. | Lykamin | 1kg | 50gm Daily | |
| 191. | Doschmin | 1kg | 50gm Daily | |
| **ECTOPARACITICIDAL PREPRATIONS** | | | | |
| 192. | Butox | 15ml | As per Direction | |
| 193. | Ektomin | 15ml | As per Direction | |
| 194. | Bytical | 30ml | As per Direction | |
| 195. | Poron | 50ml | As per Direction | |
| 196. | Tik-Out | 15 | As per Direction | |
| 197. | Cupirose | 15 | As per Direction | |
| 198. | Tick-Kit | 15ml | As per Direction | |
| 199. | Indo-Card | 10 | As per Direction | |
| **INJECTABIE ECTOPARACITICIDAL PREPRATIONS** | | | | |
| 200. | Ivomac | Ivermectin | 1ml, 10ml | 1ml per 50kg body wt. S/C |
| 201. | Inj. Mectin | Ivermectin | 1,10,20ml | 1ml per 50kg body wt. S/C |
| 202. | Inj.Conmectin | Ivermectin | 1,10ml | 1ml per 50kg body wt. S/C |
| 203. | Inj. Hytech | Ivermectin | 10ml | 1ml per 50kg body wt. S/C |
| 204. | Inj. Neomac | Ivermectin | 1, 10ml | 1ml per 50kg body wt. S/C |
| 205. | Inj. Trumectin | Ivermectin | 1, 10ml | 1ml per 50kg body wt. S/C |

NOT FOR COMMERCIAL USE

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 206. | Inj. D-Worm Plus | Ivermectin | 1, 10ml | 1ml per 50kg body wt. S/C |
| **ORAL ANTHELMANTIC PREPRATIONS** | | | | |
| 207. | Albomar Liquid&Bolus | Albendazole | 30,60,90ml &1.5gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 208. | Suprazole Liquid&Bolus | Albendazole | 30ml &3gm. | As Directed by Vet. |
| 209. | Helmigard Liquid&Bolus | Albendazole | 30,60ml,1lt. 1.5&3gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 210. | Albidol Liquid&Bolus | Albendazole | 30ml,1lt.5lt. 1.5&3gm Bol. | As Directed by Vet. |
| 211. | Alzol Liquid&Bolus | Albendazole | 30,60,90ml 1.5,3gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 212. | Hook Bolus | Albendazole | 3gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 213. | Panacur Liquid&Bolus | Fenbendazole | 90ml,1.5, 3.0gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 214. | Panaworm-DS Bolus | Fenbendazole | 1.75gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 215. | Fenazol Bolus | Fenbendazole | 1.5gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 216. | **All-Out Bolus** | **Ayurvedic Bolus** | 4 Bolus | As Directed by Vet. |
| 217. | Zodex Bolus | Mebendazole | 1gm. Bolus | As Directed by Vet. |
| 218. | Mebendazole Powder | Mebendazole | 500mg. Bolus | As Directed by Vet. |
| 219. | Hitech Bolus | Ivermectin | 4 Bolus strip | As Directed by Vet. |
| 220. | Distodin Bolus | Oxyclozanide | 4 Bolus strip | As Directed by Vet. |
| 221. | Exifluck-DS Bolus | Oxyclozanide | 6 gm. Bolus | As Directed by Vet. |
| 222. | Elukarid-DS Bolus | Levamisole+ Oxyclozanide | 6 gm. Bolus | As Directed by Vet. |
| 223. | Faxnil Bolus | Levamisole+Oxyclozanide | 90ml,6gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 224. | Faxmin-DS Liquid&Bolus | Refoxanide | 200mg, 2gm Bolus | As Directed by Vet. |
| 225. | Rafoxin Bolus | Refoxanide+Livamisole | 100ml,1lt. | As Directed by Vet. |
| 226. | Rofomisole-fort Liquid | Praziquental+Pyrental Pamate +Febantel | 2'Tab.Strip | As Directed by Vet. |
| 227. | Rrazicon Bolus | Praziquental+Pyrental Pamate +Febantel | 2'Tab.Strip | As Directed by Vet. |
| **ANOREXIA PREPRATIONS IN BOLUS FORM** | | | | |
| 228. | Purti Bolus | 4 Bolus Strip | 2-4 Bolus Daily B.I.D. | |
| 229. | A-Fit Bolus | 4 Bolus Strip | 2-4 Bolus Daily B.I.D. | |
| 230. | Bovirum Bolus | 4 Bolus Strip | 2-4 Bolus Daily B.I.D. | |
| 231. | Factune Bolus | 4 Bolus Strip | 2-4 Bolus Daily B.I.D. | |
| 232. | Rumen-F.S Bolus | 4 Bolus Strip | 2-4 Bolus Daily B.I.D. | |
| 233. | Rumenton Bolus | 4 Bolus Strip | 2-4 Bolus Daily B.I.D. | |
| 234. | Floratone Bolus | 4 Bolus Strip | 2-4 Bolus Daily B.I.D. | |
| 235. | Provisacc Bolus | 2 Bolus Strip | 2-4 Bolus Daily B.I.D. | |

NOT FOR COMMERCIAL USE

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **STOMACHIC POWDER PREPRATIONS FOR ANOREXIA** | | | | |
| 236. | H.B Strong Powder | 10gm Pouch | 10gm Daily B.I.D. | |
| 237. | D.P.Strong Powder | 10gm Pouch | 10gm Daily B.I.D. | |
| 238. | Himalaya Batisa Powder | 100,200gm, 1kg | 50gm Daily B.I.D. | |
| 239. | Ruchamex Powder | 10 gm Pouch, 225 gm | 50gm Daily B.I.D. | |
| 240. | Digestovet | 100,200,500gm | 50gm Daily B.I.D. | |
| **EXPECTORANT PREPRATIONS FOR COUGH & COLD** | | | | |
| 241. | Cat Cough | 200gm | 50gm Daily B.I.D. | |
| 242. | Caflon Powder | 100,200gm,1Kg. | 50gm Daily B.I.D. | |
| 243. | Cofex Powder | 100,200gm,1Kg. | 50gm Daily B.I.D. | |
| 244. | Coughdon Powder | 150 gm,1Kg. | 50gm Daily B.I.D. | |
| **UTERINE TONICS** | | | | |
| 245. | Uteroton Liquid | 900 ml | 125 ml Daily B.I.D. | |
| 246. | Harmoton Liquid | 1Liter | 125 ml Daily B.I.D. | |
| 247. | U-Care Liquid | 1Liter | 125 ml Daily B.I.D. | |
| 248. | Hareera Liquid | 1Liter | 125 ml Daily B.I.D. | |
| **ANTIZYMOTICS ( ANTI-BLOAT)** | | | | |
| 249. | Timpol Powder | 100 gm | 60-100gm with warmWater as a drench | |
| 250. | Bloatospel Powder | 100 gm | 60-100gm with warmWater as a drench | |
| 251. | Impectof | 100 ml | 50-100 ml. warmWater as a drench | |
| 252. | Bloatosil | 100,400 ml | 50-100 ml. warmWater as a drench | |
| 253. | Tympex Liquid | 100 ml | 50-100 ml. warmWater as a drench | |
| 254. | Impacdon Pulv. | 200 gm,1kg. | 60-100gm with warmWater as a drench | |
| **INJECTABLE PROJESTRONE HARMONE PREPRATIONS** | | | | |
| **S.NO.** | **Name of Product** | **Ingredients** | **Packing** | **Dosage** |
| 255. | Inj.Duroprogess | Hydroxy Projestron | 2ml,3ml | 2-3ml I/m |
| 256. | Inj.Hyprogess | Hydroxy Projestron | 2ml,3ml | 2-3ml I/m |
| 257. | Inj. Pota-500 | Hydroxy Projestron | 2ml | 2-3ml I/m |

NOT FOR COMMERCIAL USE

अध्याय 11

# कुछ प्रमुख विषों की प्राथमिक चिकित्सा
# (First Aid of some important poisons)

| क्र0सं0 | विष का नाम | चिकित्सा |
|---|---|---|
| 1 | Acid –एसिड | Soda bi carb. (खाने का सोडा) चावल के साथ पानी या दूध में पिलायें। |
| 2 | Alkalies–अल्कालिज जैसे कास्टिक सोड़ा या पोटाश या अमोनिया | Diluted Acetic Acid,Vineger with Water, Linseed meel, Gruel, Milk etc. |
| 3 | Antimony– एन्टीमोनी (Tartar Emetic) | Oily Purgative, Tannic Acid, Morphine, Strong tea, Milk, Deniulcem |
| 4 | Arsenic-संखिया | Emetic, Sodium Thisosulphnic, Oily Purgative Deanilcents, Milk, White of Egg, Teanic Acid Caffeine, Strychenine, Pot lodide followed by Magasulph |
| 5 | Acron- एक्रॉन (जैतून फल) | Oily Purgative, Gruel tea, Oat meal |
| 6 | Alcohol- अल्कोहल | Tea, Coffee |
| 7 | Atropine- एट्रोपाइन या Belladonna–बेलाडोना | Emetic, Pilocarpine, Arceopine Strong caffeine, Morphine, Opium chlorohydoite |
| 8 | Carbolic Acid- कार्बोलिक एसिड | Emetic Mag.Sulph and Sodi-sulph, Milk, Raw Egg<br>त्वचा पर गिरने पर साबुन पानी से साफ करें। |
| 9 | Carbon tetra chloride कार्बन टेट्राक्लोराइड | Calcium gluconate, Calcium, Borogluconate cal lactate, Atropine, Normal saline I.V. |
| 10 | Caster Seed- अरण्डी बीज | Morphine, Milk, Gruel, Oatmeal |
| 11 | Chloral hydrate- क्लोरल हाइड्रेट | Strychnine, Caffeine, Strong coffee |
| 12 | Common Salt (Sodium chloride) या नमक | Emetics, Demulcentis-eg. Linseed meal, sufficient water, stimulant चावल या जौ या चोकर का माड़ (Gruel) paraffin |
| 13 | Copper- तॉबाा | Lactose, Glucose, Sulpher, Charcoal, White of Egg Milk, Barley Water, Gruel |
| 14 | Coton seed- कपास बीज या खली | Stop cake, feeding, laxative, tobacco, strychnine |
| 15 | Croton oil- जमालगोटा तेल | Strychnine, tobacco, chloral hydrate, Demulcents Gastric sedative, opium, Tannic acid |
| 16 | Dhatura - धतूरा | Tannic acid, Caffeine, chloral hydrate, Atropine |
| 17 | Ergot-एरगोट | Emetic, Purgative, Tannic Acid, Antylemirate Inhalation. |

NOT FOR COMMERCIAL USE

| | | |
|---|---|---|
| 18 | Hydrocyanic acid<br>हाइड्रोसाइनिक एसिड | Sodium nitrate 20%(I.V.), Sodium thiosulphate inhalation Atropine S/C, Ammonia inhalation, Artificial respiration, Repeat Injection every few minutes |
| 19 | Iodine- आयोडीन | Purgative, White of egg, Large quantity of starch Sodium nitrate 10%, sodium thiosulphate 10%, Amyl nitrate or Ammonia inhalation, Demulcent |
| 20 | Lathyrus-लाथिरस | एस्कार्बिक एसिड यानि विटामिन 'सी' Antidote का दाना खिलावें। |
| 21 | Lead- सीसा | Mag-Sulph, sodi sulph, milk, white of egg, Tannic acid, Morphine, chloralhydate, Atropine, In Chronic cases- Potassium lodide |
| 22 | Mercury-मरकरी | Large quantity of white egg and milk followed by emetic,sodium thiosulphate I/V, Tannic acid and pot. lodide in mag-sulph, sulpher |
| 23 | Morphia-मौर्फिया And Opium | Pot permagnate 1%followed by emetic |
| 24 | Nicotine, Tobacco – निकोटीन, टोबैको | Atropine, chloral hydrate, Morphine, tannic acid, sedative |
| 25 | Nuxvomica and Strychnine<br>नक्सवोमिका एवं स्ट्रीकनिन | Chloral hydrate, Apomorphine, chlordane, castor oil, morphine, tannic acid, strong tea |
| 26 | Oleander-ओलिएन्डर | mag-sulph, sodi-sulph, Atropine, chlordane, chloropharm. |
| 27 | Phosphorus-फास्फोरस | Sodi-bi-carb, Pot, Permanganate1% followed by emetic, copper sulphate, saline purgative No oily purgative. |
| 28 | Potassium Chlorate<br>पोटेशियम क्लोरेट | Pilocarpine, diuretics, oxygen inhalation |
| 29 | Santonin-सैन्टोनिन | Emetic, purgative, Chloral hydrate |
| 30 | Snake bite-सॉप दंश | Open wound autocue and cauterize- injection of strong solution of potassium permanganate s/c around swelling injection of 3.5%. Tincture iodine or chlorine water s/c and snake vitreous serum |
| 31 | Zinc chloride &Zinc Sulphate<br>जिंक क्लोराइड एवं सल्फेट | Emetic, white of egg, milk, tannic acid, sodium carbonate |
| 32 | Zinc phosphide<br>जिंक फॉस्फाइड | White of egg, tannic acid, potassium permanganate1:2000 solution, dextrose, rintose |
| 33 | D.D.T.-डी0डी0टी0 | Saline, purgative, Chloralhydrate, calcium borogluconate sedative, no oily purgative |
| 34 | Urea-यूरिया | Calcium borogluconate, calborol, mifex etc. Acetic acid 5% one-two litre as drench |
| 35 | Insecticides-कीट नाशक | Saline purgative, Calcium borogluconate, Atropine sulphate s/c coramine, for dogs to induce vomiting- apomorphine as s/c |

NOT FOR COMMERCIAL USE